FOREWORD

I am very glad to write this foreword to the "Bharatwarsh ka Bhugol" (Geography of India) at the request of the author, Mr. Ram Narain Misra. Even were Mr. Misra not well-known in the educational world, it would be clear that his book has been written by one who understands the needs of school students and can set forth the information he wants to convey in a manner at once attractive and thought-stimulating. Mr. Misra has travelled widely and extensively throughout India and the surrounding countries and hence the information he gives, has been collected first-hand and is not a conglomeration of matter picked out of existing text-books and gazetteers. Being a teacher of geography, he has been judicious in the selection of facts and has perceived and indicated their relative importance. No facts have been allowed to stand alone; the author is too much of an educationist to permit that, and their causes have been clearly and adequately treated.

The text has been supplemented by quite a large number of useful maps by the author, showing various climatic conditions, productions, density of population, etc. The pictures which adorn the book are new and many are from photographs taken by the author in the course of his travels. That he is a man of taste is evident from the view-points from which the photographs have been taken.

I cannot speak too highly of this book which should make [illegible] not only a favourite with students but

भारतवर्ष का भूगोल

(हाई स्कूल और प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिये)

लेखक

रामनारायण मिश्र, बी० ए०

भू-परिचय के रचयिता, "भूगोल"-सम्पादक

(प्रोफ़ेसर आव् ज्याग्राफ़ी, ईविंग क्रिश्चियन कालेज, प्रयाग)

प्रकाशक

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग

प्रथमावृत्ति

प्रकाशक

रामनारायण मिश्र बी० ए०

“भूगोल” कार्यालय

प्रयाग

मुद्रक

should also encourage them to take a lively interest in *the geography of their country* Nor is this book without interest for those whose school-days are over as it provides interesting and thoughtful study of the possibilities of development of the motherland I congratulate the author for bringing out such an excellent text-book of geography and hope that it will meet the appreciation of teachers and those interested in geography teaching

K. Kishor

Allahabad
June 30, 1931

प्रस्तावना

आज से प्राय: २० वर्ष पहले मैंने भारतवर्ष का एक अच्छा भूगोल अंग्रेज़ी में देखा। उसे देखते ही मेरे मन में यह विचार उठा कि हिन्दुस्तानी लोग अपने देश का भूगोल स्वयं क्यों नहीं लिखते हैं? आगे चलकर शायद इसी विचार ने मुझे प्रेरित किया।

मैं देश से परिचय प्राप्त करने के लिए भिन्न भिन्न भागों की यात्रा करने लगा। यात्रा से मुझे बड़ा लाभ हुआ। इसलिए कठिनाइयों से कुछ भी न डर कर मैंने धीरे धीरे सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका का पर्यटन कर डाला।

इस यात्रा के आरम्भ से लेकर अब तक भारतवर्ष के सम्बन्ध में मुझे जितने *ग्रंथ मिले मैंने उन्हें बड़े चाव से पढ़ा। प्रस्तुत पुस्तक इसी यात्रा और अध्ययन के आधार पर लिखी गई है।

१९२७ ई० में मैंने भू-परिचय में संसार के सब देशों का वर्णन किया। लेकिन भारतवर्ष को जानबूझ कर इसीलिए छोड़ दिया गया कि अपने देश का कुछ अधिक विस्तृत विवरण देना अत्यन्त आवश्यक है। समय समय पर इस पुस्तक के कुछ भाग "भूगोल" के अंकों में प्रकाशित किये गये। उन्हें लोगों ने पसन्द किया। इसलिए पुस्तक को छपाने का निश्चय किया गया। व्यापार-कुशल प्रकाशक लोग शायद नक्शों और

---

*कुछ पुस्तकों की सूची पुस्तक के अन्त में दी हुई है

चित्रों पर उचित खर्च करने को तयार नहीं अथवा पुस्तक का मूल्य अधिक रक्खें इसलिए पुस्तक को प्रकाशित करने के लिये "भूगोल"-कार्यालय को ही बाध्य होना पड़ा। आवश्यक नक्शों और चित्रों में किसी तरह की कमी नहीं की गई है। अनेक साधारण चित्रों और नक्शों के अतिरिक्त २ तिरंगे और ४ चित्रमय नक्शे दिये गये हैं। भारतवर्ष में छपी हुई यह पहली पुस्तक है जिस में चित्रमय नक्शों का प्रयोग हुआ है। पर सहृदय पाठक प्रथम प्रयास को उदार दृष्टि से ही देखें।

इस पुस्तक में प्रादेशिक विवरण के साथ साथ आर्थी भूगोल को सब कहीं प्रधानता दी गई है। प्रथम प्रकरण में भारतवर्ष की भू-रचना, जलवायु आदि का विवरण सामूहिक दृष्टि से किया गया है। दूसरे प्रकरण में प्रदेश के अनुसार राजनैतिक प्रान्तों का विवरण है। अपरिचित प्रान्तों का वर्णन कुछ अधिक विस्तार के साथ किया गया है। उनमें चित्र भी अधिक हैं। पर नक्शे सब कहीं दिये गये हैं। तीसरे प्रकरण में व्यापार सम्बन्धी बातें हैं। गत वर्ष से भारतवर्ष के व्यापार और राजनीति में भारी हलचल मची हुई है। सम्भवतः इस विवरण में मूल सिद्धान्तों के अचल होते हुए भी मोटी मोटी बातों में असत्यता प्रतीत होने का डर है। इसलिए पाठकगण व्यापार की दिशा और व्यापार सम्बन्धी अंकों को अधिक कड़ाई की दृष्टि से न देखें। राजनैतिक वायुमंडल में और भी अधिक परिवर्तन होने वाले हैं। इसीलिए भारतवर्ष की शासन प्रणाली को इस आवृत्ति में एक दम छोड़ दिया है। परिशिष्ट में उन उपयोगी तालिकाओं को दिया है जो भूगोल के विद्यार्थी को समय समय पर काम देंगी। उनकी सहायता से ग्राफ आदि क्रियात्मक पाठ हो सकेंगे। इस के अन्त में प्रश्न दिये हैं। जिन से पाठक अपने भौगोलिक ज्ञान की परीक्षा कर सकते हैं। पुस्तक बहुत जल्दी में छपी है। पूरा प्रयत्न करने पर भी शायद कहीं अशुद्धियाँ रह गई हों। यदि पाठक

गण इन अशुद्धियों अथवा अन्य सुधार सम्बन्धी सम्मतियों को लिख भेजें तो बड़ी कृपा होगी।

मैं उन सब मित्रों का बड़ा ही कृतज्ञ हूँ जिन की सम्मतियों या कृतियों से मुझे इस पुस्तक के प्रकाशित करने में सहायता मिली है। लॉ जर्नल प्रेस के मैनेजर साहब का भी मैं बड़ा ही उपकार मानता हूँ जिन्होंने एक मास से भी कम समय में पुस्तक को सुन्दर रूप में छाप कर तयार कर दिया है। अन्त में मैं इस पुस्तक के भूमिका-लेखक, भूगोल के धुरन्धर विद्वान् श्रीयुत कौशलकिशोर जी, बी० ए०, एफ०, आर० जी० एस० को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने संयुक्त प्रान्त में भूगोल विषय को रुचिकर बनाने और उन्नत करने में सर्व प्रथम पथ-प्रदर्शक का काम किया। पाठकों से एक बार फिर यही अनु-रोध है कि वे इस पुस्तक की त्रुटियों से मुझे अवश्य सूचित करें।

रामनारायण मिश्र
"भूगोल"-कार्यालय
प्रयाग

२ जुलाई, १९३१

विषय-सूची

तालिकायें १-६

भारतवर्ष

का

भूगोल

संसार के प्राकृतिक विभागों में भारतवर्ष का स्थान।

भारतवर्ष का भूगोल

पहला अध्याय

भारतवर्ष का विस्तार और स्थिति

जिस देश में हम रहते हैं, उसकी स्थिति भूमंडल में बड़े महत्त्व की है। इसी स्थिति के कारण संसार का सभ्य समाज भारतवर्ष से सदा से ही परिचित रहा है। प्राचीन काल में दूर दूर देशों के अनेक लोग भारतीय गुरुकुलों में विद्या ग्रहण करके अपने को धन्य मानते थे। बहुत सी जातियाँ घरेलू झगड़ों और बाहरी हमलों से बचने के लिए भारतीय सम्राटों को मित्र बनाती थीं। जीवन के आवश्यक पदार्थ इतनी अधिक मात्रा में यहाँ से दूसरे देशों में पहुँचते थे कि हमारा देश कर्म-भूमि कहलाने लगा। आगे भी संसार में स्थायी शान्ति और सच्ची उन्नति तभी होगी जब भारतवर्ष सबल, स्वावलम्बी और स्वाधीन होगा।

भारतवर्ष की स्थिति को ठीक ठीक समझने के लिए संसार का नक़्शा सामने रख लेना चाहिए। संसार का विशाल स्थलसमूह भूमध्यरेखा के उत्तर में ही है। हमारे देश का अत्यन्त दक्षिणी भाग (लंका का दक्षिणी तट) भूमध्यरेखा से केवल ५०० मील (उत्तर की ओर) दूर है। पर कर्करेखा भारतवर्ष को दो भागों में बाँटती है। सिन्ध का डेल्टा इस रेखा

के उत्तर में पास ही स्थित है। यह रेखा कच्छ, गुजरात, मालवा, मध्य-प्रान्त, छोटा नागपुर होती हुई गंगा के डेल्टा को कुछ दूर दक्षिण में छोड़ देती है। इसी कर्करेखा के दक्षिण में कुमारी अन्तरीप तक दक्खिन का पठार प्रायः समद्विबाहु त्रिभुज बनाता है। इस रेखा के उत्तर में एक दूसरे विषमबाहु त्रिभुज का ऊपरी सिरा पामीर के नीचे प्रायः ३७ अक्षांश पर काश्मीर का अत्यन्त उत्तरी स्थान है। उत्तरी ध्रुव इस स्थान से प्रायः साढ़े तीन हज़ार मील दूर है। चूँकि उत्तरी ध्रुव और भूमध्यरेखा के बीच सवा छः हज़ार मील की दूरी है इसलिए उत्तर से दक्षिण तक भारतवर्ष की अधिक से अधिक लम्बाई २,००० मील है। ८० पूर्वी देशान्तर काश्मीर के पूर्वी सिरे और लंका के पश्चिमी तट को पार करती है। भारतवर्ष की यही प्रायः मध्यवर्ती देशान्तर रेखा है। बिलोचिस्तान का पश्चिमी सिरा ६०° पूर्वी देशान्तर पर स्थित है और ब्रह्मा की शान-रियासतों का पूर्वी सिरा १०१° पूर्वी देशान्तर को छूता है। इस प्रकार पूर्व से पश्चिम तक भारतवर्ष का अधिक से अधिक विस्तार ४० देशान्तरों* अर्थात् ढाई हज़ार मीलों को घेरे हुए है। पूर्व और पश्चिम का यह विस्तार समस्त (३६०) देशान्तरांशों का $\frac{1}{9}$ है। इस विशाल विस्तार के कारण पूर्वी ब्रह्मा और पश्चिमी बिलोचिस्तान के स्थानीय समय में २$\frac{2}{3}$ घंटे का अन्तर रहता है। जब मिच्चीना में दोपहर होता है, उस समय मीरजावा (बिलोचिस्तान) में (दिन के) ९$\frac{1}{3}$ ही बजते हैं। पर रेल आदि में भारतवर्ष के सभी नगर मद्रास के मध्यवर्ती प्रामाणिक समय का प्रयोग

---

* अक्षांश का प्रत्येक अंश सब कहीं प्रायः ६९ मील के बराबर होता है। पर देशान्तर का एक अंश केवल भूमध्यरेखा पर ही ६९ मील होता है। और अक्षांशों पर दूरी घटती जाती है। ३० अक्षांश पर देशान्तर का एक अंश केवल ६० मील के बराबर होता है।
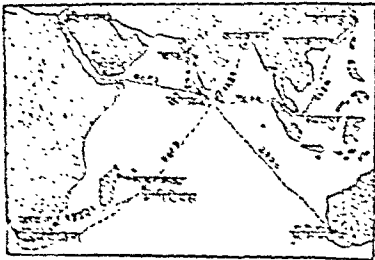
भारतवर्ष की स्थिति और भी केन्द्रवर्ती है। कोलम्बो से पर्थ (आस्ट्रेलिया) और डर्बन (दक्षिण अफ़्रीका) प्रायः समान दूरी पर ही हैं। कलकत्ते से सिंगापुर, और हांगकांग होकर याकोहामा को अक्सर जहाज़ छूटते रहते हैं। अदन और स्वेज़ होकर योरप में हम प्रायः दो ही सप्ताह के भीतर पहुँच सकते हैं। योरप के आगे अमरीका का पूर्वी तट बम्बई से प्रायः उतना ही दूर है जितना कि अमरीका का पश्चिमी तट कलकत्ते से पूर्व की ओर है। संसार की परिक्रमा करनेवाले हिन्दुस्तानी यात्री अक्सर योरप होकर न्यूयार्क पहुँचते हैं और जापान होकर घर लौट आते हैं। वायु-मार्ग के लिये भारतवर्ष की स्थिति और भी महत्त्वपूर्ण है। हवाईजहाज़-द्वारा संसार का चक्कर लगानेवाले प्रायः सभी यात्री करांची या कलकत्ते में पेट्रोल लेने के लिए उतरते हैं।

दूसरा अध्याय

प्राकृतिक विभाग

भारतवर्ष एक विशाल देश है। यहाँ समतल उपजाऊ खेत, सघन वन, उजाड़ रेगिस्तान और उच्च निर्जन हिमागार आदि संसार के सभी प्रदेशों का समावेश है। पर रचना के अनुसार हमारा देश चार भागों में बाँटा जा सकता है।

१—सर्वोच्च पहाड़ी प्रदेश उत्तर में है। इसकी उपत्यकाएँ एक विशाल कोटर के समान अरब-सागर और बंगाल की खाड़ी तक पहुँचती हैं।

२—पहाड़ों की तलहटी में एकदम चौरस मैदान है। यह मैदान दुनिया भर के मैदानों में सबसे अधिक उपजाऊ, सघन और सम्पन्न रहा है। यह मैदान गंगा के डेल्टा से लेकर सिन्ध के डेल्टा तक फैला है।

३—मैदान के दक्षिण में दक्षिण (दक्खिन) का पठार है। यह पठार मैदान की अपेक्षा कहीं अधिक ऊँचा है। पर हिमालय के सामने इसकी ऊँचाई कुछ भी नहीं है। पर इस पठार की दशा, मैदान तथा हिमालय पहाड़ दोनों ही से अधिक पुरानी है।

४—पठार के पूर्वी और पश्चिमी ओर तंग तटीय मैदान है। इस तट का बहुत-सा भाग उथले (केवल १०० फुट गहरे) समुद्र से ढका है।

भारतवर्ष (प्राकृतिक)
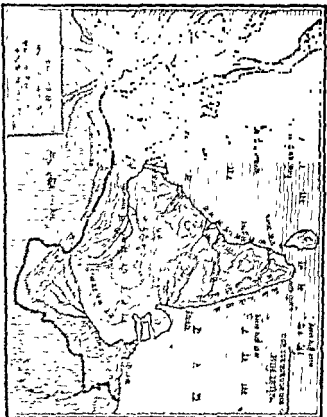
वास्तव में हमारे देश की स्थल-सीमा इसी ६०० फुट गहराईवाली रेखा के पास से आरम्भ होती है। इस प्रकार लंका-द्वीप हमारे भारतवर्ष का ही अंग है। इन दोनों के बीचवाले पाक जल-संयोजक की गहराई ८० गज़ से कम ही है। रामेश्वरम् से १६ मील आगे धनुष्कोटि तक रेल-मार्ग है। धनुष्कोटि और तलैमनार के बीच में भी जल के ऊपर निकली हुई शिलायें प्राचीन सेतु की साक्षी दे रही हैं। अगर समुद्र की गहराई २०० गज़ कम हो जावे तो लंका के भी और आगे प्रायः ५० मील तक भारतवर्ष से हम पैदल जा सकते हैं।

पर्वतीय प्रदेश

विशाल हिमालय-पर्वत दुनिया भर के पहाड़ों से कहीं अधिक ऊँचे हैं। इनकी पर्वत-श्रेणी पामीर (याने दुनिया या संसार की छत) से आरम्भ होती है। दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ने के कारण इस पर्वत-श्रेणी का आकार तलवार के समान हो गया है। पर इस उत्तरी पर्वतीय प्रदेश में हिमालय की एक ही श्रेणी नहीं है। वास्तव में यहाँ कई पर्वत-श्रेणियाँ हैं। इनके बीच में दुर्गम हिमागार और डरावनी घाटियाँ हैं। इस पर्वतीय प्रदेश के दक्षिण में सिंध और गंगा का उपजाऊ और सीधा मैदान है। इसके उत्तर में तिब्बत का प्रायः तीन मील ऊँचा, वीरान और पथरीला पठार है। इस प्रकार गंगा के मैदान से तिब्बत के पठार तक हिमालय की चौड़ाई प्रायः २०० मील है। समतल मैदान में २०० मील की यात्रा रेलद्वारा आठ-दस घंटे में तय हो सकती है। पर हिमालय को पार करना कई हफ़्तों में भी सुगम नहीं है। एक पर्वत-श्रेणी पार करने पर दूसरी और अधिक ऊँची श्रेणी हमारे सामने आती है। पहिली श्रेणी और हमारे [illegible] से कहीं कहीं कई मील लम्बा और चौड़ा हिमागार मिलता [illegible] मार्ग में वेगवती नदी पड़ती है जिस

पर पुल नहीं होता है। जहाँ कहीं पुल होता भी है, तो वह बेंत या

पहलगाँव का पर्वतीय दृश्य और पुल

रस्सी का बना होता है। ज़रा इधर उधर डिगने पर आदमी सैकड़ों फुट गहरी कन्दरा में जा गिरता है और पत्थरों से टकराकर चकनाचूर हो जाता है अथवा उछलती हुई नदी में डूब जाता है।

भारतीय मैदान के सामने वाले ढालों पर पूर्वी हिमालय में हिमरेखा की ऊँचाई प्रायः १५,००० फुट है। पर श्रेणी के पश्चिमी भाग में हिमरेखा १९,००० फुट की ऊँचाई पर मिलती है। दूसरी ओर तिब्बत में हिमरेखा की ऊँचाई इससे भी ३००० फुट अधिक हो जाती है क्योंकि दूसरी ओर पहुँचते पर मानसूनी हवा में नमी नहीं रहती है। हिमालय की छोटी श्रेणी की ऊँचाई १२,००० फुट के भीतर ही है इसीलिए इस समय वहाँ हिमागारों का अभाव है। पुराने हिमागारों के इन पर चिह्न अवश्य मिलते हैं। पर २०,००० फुट की ऊँचाई पर हिमालय में अनेक

हिमागार (ग्लेशियर) हैं। इनमें से कुछ तो दुनिया भर में सबसे बड़े हिमागार हैं। कुछ विशाल हिमागार ऊँचे पर्वतों से नीचे नहीं उतरते हैं। फिर भी आर्कटिक प्रदेश के हिमागारों से बड़े होते हैं। हिस्पार, चोगोलुंगमा आदि कुछ हिमागारों की लम्बाई चौबीस मील से ऊपर है। बाल्टोरो आदि एक दो तो प्रायः ४० मील लम्बे हैं। पर अधिकांश हिमागारों की लम्बाई दो तीन मील ही है। लम्बाकार हिमागार (काश्मीर में) ७ या ८ हजार फुट तक नीचे उतर आते हैं। पर

ग्लेशियर को पार करने में याक को भी बड़ी कठिनाई पड़ती है

समानान्तर घाटियों में विचरने वाले हिमागार १०,००० फुट से नीचे नहीं आते हैं। हिमागारों की दैनिक गति किनारों पर तीन चार इंच है पर बीच में [illegible] फुट तक देखी गई है। भारतवर्ष के प्रसिद्ध हिमागारों की लम्बाई [illegible] दी जाती है

सिक्कम

हिमागार	लम्बाई
जेमू	१६ मील
किंचिंजाउ	१० मील

काश्मीर

हिमागार	लम्बाई
रूपाल	१० मील
दियामीर	७ मील
सोनापानी	० मील
कलहुन	१२ मील

कमायूँ

हिमागार	लम्बाई
मिलम	१२ मील
केदारनाथ	९ मील
गंगोत्री	१६ मील
कोसा	७ मील

कराकोरम

हिमागार	लम्बाई
बियाफो	३९ मील
हिस्पार	२५ मील
बल्तोरो	३६ मील
गशारब्रुम	१४ मील
चोगोलुंगमा	२४ मील

उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत ने हिन्दुस्तान को मध्य एशिया से प्रायः बिलकुल अलग कर दिया है। जो विशाल पर्वत-प्रणाली योरप और एशिया के बीच में चली गई है, हिमालय उसी का दक्षिणी पूर्वी और सबसे अधिक ऊँचा भाग है। पामीर से निकलने वाली पर्वत-श्रेणियों में हिमालय सबसे दक्षिण में है। सिन्ध नदी से लेकर ब्रह्मपुत्रा नदियों के मोड़ तक हिमालय पर्वत तलवार के आकार में १५०० मील तक फैले हुए हैं।

संसार की पर्वत-श्रेणियाँ

हिमालय पर्वत प्रायः तीन समानान्तर श्रेणियों से बने हैं। सिन्ध और गंगा के मैदान के किनारे वाली श्रेणी मैदान की तरह मिट्टी, बालू और कंकड़ की बनी है। इस श्रेणी पर कहीं कहीं हाथी और दूसरे स्तनधारी जानवरों के पुराने ढाँचे मिले हैं। इससे सिद्ध होता है कि यह श्रेणी किसी समय में हमारे मैदान का अंग थी। यह श्रेणी बहुत ऊँची भी नहीं है और शिवालिक नाम से प्रसिद्ध है। इसके आगे हिमालय की दूसरी श्रेणी है जो पचास साठ मील चौड़ी और ६००० फुट से १२,००० फुट तक ऊँची है। दक्षिण की ओर यह श्रेणी कहीं कहीं शिवा-

लिक पहाड़ियों से जुड़ी हुई है। पर अक्सर इन दोनों श्रेणियों के बीच में छोटे छोटे मैदान हैं जो पश्चिम में दून (जैसे देहरादून) और पूर्व में (भूटान के पास) द्वार कहलाते हैं। दूसरी श्रेणी के उत्तर में हिमालय की सबसे ऊँची तीसरी श्रेणी है। इस श्रेणी की औसत ऊँचाई २०,००० फुट है। चालीस से अधिक चोटियाँ प्रायः पाँच मील ऊँची उठी हुई हैं। हिमालय की मुख्य चोटियाँ ये हैं—नंगा पर्वत २६,१८२ फुट (काश्मीर में), नंदादेवी २५,६४५ फुट (संयुक्तप्रान्त में) गौरीशंकर या माउंट एवरेस्ट २९,१४१ फुट, किंचिनजंगा २८,१४६ फुट और धवलागिरि २६,८२६ फुट (नेपाल में)। [illegible] है। इस श्रेणी की सब चोटियाँ [illegible] रहता है। इस [illegible]
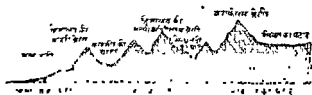
बरफ से घिरे रहते हैं। यह बर्फीली श्रेणी मैदान से प्रायः १०० मील ही दूर है। पर यहाँ पहुँचना या इसको पार करके तिब्बत के पठार में जाना सरल नहीं है। पहाड़ी प्रदेश के मार्ग अत्यन्त दुर्गम हैं। सड़कों के स्थान पर केवल पगडंडियाँ हैं। कहीं कहीं इनका भी अभाव है। हिमागारों में यात्री को बरफ काटकर अपना रास्ता बनाना पड़ता है। नदियाँ अत्यन्त गहरी कन्दराओं में होकर बहती हैं। इन्हें पार करने के लिए रस्से का पुल बना होता है। पर पहाड़ी लोग बोझा लाद कर इन पुलों को बेधड़क पार कर जाते हैं। साधारण ऊँचाई पर भेड़ से और अधिक ऊँचाई पर याक से बोझा ढोने का काम लिया जाता है।

दर्रे

हिमालय के प्रधान दर्रे लेह, शिमला, नैनीताल, और दार्जिलिंग से तिब्बत जाने वाले मार्गों पर पड़ते हैं। लेह से आगे चलने पर

प्रसिद्ध कराकोरम दर्रा पश्चिमी तिब्बत के लिए रास्ता खोलता है।

शिमला के आगे सतलज की कन्दरा के ऊपर शिपकी दर्रा पड़ता है। नैनीताल और अल्मोड़ा के आगे भी हिमालय में माना और नीति दर्रे हैं। हिन्दू यात्री इन्हीं मार्गों से मानसरोवर को जाया करते हैं। कुछ और पूर्व काली नदी ने एक (माईलांग) दर्रा बना दिया है। दार्जिलिंग के आगे चोला और जलप दर्रों और चुम्बी घाटी में होकर ल्हासा को मार्ग गया है। सम्भव है कि ब्रह्मपुत्र की घाटी का मार्ग भविष्य में सिन्ध के मार्ग की तरह प्रसिद्ध हो जावे। पर आजकल इस ओर गंवार लोग बसे हुए हैं। इन सब दर्रों से साल के कुछ महीनों में थोड़ा सा व्यापार होता है। अधिकतर महीनों में ये दर्रे बरफ़ से घिरे रहते हैं। ये दर्रे फ़ौजी सामान के लिए अत्यन्त दुर्गम हैं। इसलिए इनके सिरों पर कहीं भी किले नहीं बने हैं।

उत्तरी-पश्चिमी शाखाएँ

हिमालय के पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत है जो दक्षिण-पश्चिम की ओर अफ़ग़ानिस्तान में चला गया है। काबुल नदी के दक्षिण में सफ़ेद-कोह (पर्वत) है। यह पहाड़ प्रायः पूर्व-पश्चिम की ओर चला गया है। सफ़ेद-कोह के दक्षिण में और पंजाब के पश्चिम में सुलेमान पहाड़ उत्तर से दक्षिण को गया है। इस पहाड़ के मध्य में तख़्त-सुलेमान चोटी ११,२०० फुट ऊँची है। सुलेमान के दक्षिण में और सिन्ध प्रान्त के पश्चिम में किरथर या हाला पहाड़ है। किरथर पहाड़ की कई समानान्तर श्रेणियाँ दक्षिण में प्रायः समुद्र-तट तक चली गई हैं।

हिमालय की पश्चिमी पर्वत-शाखाएँ अधिक नीची और उजाड़ हैं। पर इन पहाड़ों को काट कर सिन्ध में मिलने वाली नदियों ने इनमें कई दर्रे बना दिये हैं। उत्तर में पेशावर और काबुल के बीच में ख़ैबर [illegible] में शिकारपुर और कन्धार के बीच में बोलन दर्रा प्रसिद्ध है।

हाथ की अँगुलियों की तरह निकली हुई हैं। पटकोई, नागा और लुशाई पहाड़ियाँ आसाम को ब्रह्मा से अलग करती हैं। मनीपुर-राज्य में होती हुई ये पहाड़ियाँ ब्रह्मा के अराकान योमा से मिल जाती हैं और इरावदी-मुहाने के पश्चिम की ओर नीग्रेस अन्तरीप में समाप्त होती हैं। पर वास्तव में अंडमान और निकोबार द्वीपों के द्वारा इन पहाड़ियों की श्रेणी पूर्वी द्वीपसमूह (सुमात्रा) से जुड़ी हुई है। पटकोई पहाड़ी के दक्षिण में नागा पहाड़ी से प्रायः समकोण बनाती हुई जयन्तियाँ, खासी और गारो पहाड़ियाँ ठीक पश्चिम की ओर चली गई हैं। ये आसाम की घाटी को सिलहट और कछार से अलग करती हैं। हिमालय की पूर्वी शाखाओं का दृश्य पश्चिमी शाखाओं के दृश्य से बिल्कुल भिन्न है। प्रबल वर्षा के कारण ये पहाड़ियाँ सघन और दुर्गम वनों से ढकी हुई हैं। उत्तर में हुकांग घाटी ने अपने पहाड़ी मार्ग को काट कर और दक्षिण में चिंदविन (इरावदी की प्रधान सहायक नदी) की एक सहायक नदी ने मनीपुर से ब्रह्मा के लिए दरवाज़ा खोल दिया है। पर ये दरवाज़े ऐसे भयानक हैं कि इस स्थल-मार्ग की अपेक्षा कलकत्ता और रंगून के बीच के समुद्री मार्ग कहीं अधिक पसन्द किये जाते हैं।

मैदान

पहाड़ी दीवार के दक्षिण में सिन्ध और गंगा का उपजाऊ मैदान है। यह समतल मैदान बहुत ही घना बसा है। यहीं प्राचीन समय की सर्वोच्च सभ्यता का जन्म हुआ। इसका क्षेत्रफल पाँच लाख वर्ग-मील है। इसमें सिन्ध का बड़ा भाग, उत्तरी राजपूताना, समस्त पंजाब, संयुक्त-प्रांत, बिहार, बंगाल और आधा आसाम शामिल हैं। इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई (पश्चिमी भाग में) ३०० मील है। कम से कम चौड़ाई पूर्व में प्रायः ०० मील है। इसकी ऊँचाई का अभी तक पूरा पूरा

पता नहीं लगा है। पर एक दो जगह की खुदाई से जाना गया है कि इसकी गहराई ऊपरी धरातल से १३०० फुट अर्थात् समुद्रतल से १००० फुट नीची है। पाताल्तोड़ कुआँ खोदने के लिए जब कहीं गहराई की जाँच की गई तो नीचे की कभी चट्टान का पता नहीं लगा। न बारीक मिट्टी (काँप) का ही अन्त मिला।

मैदान की अधिक से अधिक ऊँचाई समुद्रतल से ९०० फुट है। यह ऊँचा भाग सहारनपुर, अम्बाला और लुधियाना जिलों के बीच पंजाब में स्थित है। यही ऊँचा भाग (जल-विभाजक) गंगा में आने वाले पानी को सिन्ध में जाने वाले पानी से पृथक् करता है। पर यह जलविभाजक बहुत पुराना नहीं है। कुछ लोगों का अनुमान है कि वैदिक काल की सरस्वती नदी पहिले पूर्वी पंजाब और राजपूताना में होकर समुद्र में गिरती थी। फिर वह पूर्व की ओर हटते हटते प्रयाग में गंगा से मिल गई और यमुना कहलाने लगी। सरस्वती के पुराने मार्ग में अब एक छोटी नदी बहती है जो बीकानेर के रेत में समाप्त हो जाती है।

इस विशाल मैदान में जहाँ तहाँ कंकड़ को छोड़ कर पत्थर का नाम नहीं है। इसका पुराना ऊँचा भाग संयुक्त प्रान्त और बंगाल में बाँगर कहलाता है। नये नीचे भाग को खादर या कछार कहते हैं। गंगा का डेल्टा (५०,००० वर्गमील) वास्तव में खादर का ही अंग है। इसी प्रकार सिन्ध का डेल्टा सिन्ध के खादर का अंग है। पर सिन्ध नदी का वर्तमान डेल्टा बहुत ही नया है क्योंकि पहिले यह नदी अधिक पूर्व की ओर सम्भे या खम्भात की खाड़ी में गिरती थी। फिर कुछ समय तक कच्छ के रेत में पानी गिरता रहा। अन्त में वर्तमान डेल्टा बना।

गंगा की घाटी की तरह पंजाब का ढाल बहुत ही क्रमशः है। पर पंजाब में यह ढाल दक्षिण-पश्चिम की ओर है। पंजाब के दक्षिण-पश्चिम में सिन्ध-प्रान्त का प्रायः प्रत्येक भाग सिन्ध नदी के नीचे रह चुका है।

राजपूताना का रेगिस्तान प्रायः ४०० मील लम्बा और १०० मील चौड़ा है। पर अरावली पहाड़ ने इसे उत्तरी-पश्चिमी और दक्षिणी-पूर्वी दो भागों में बांट दिया है। दक्षिणी-पूर्वी भाग वास्तव में गंगा नदी का बेसिन है क्योंकि चम्बल नदी इस प्रदेश का पानी यमुना में बहा लाती है। उत्तरी-पश्चिमी राजपूताना सिन्ध नदी का बेसिन है। यही असली रेगिस्तान है और हवा से उड़ा कर लाई हुई बालू से बना है। जगह जगह पर सौ दो सौ फुट ऊँचे रेतीले टीले मिलते हैं। यहाँ की प्रधान नदी लूनी है जो कच्छ की खाड़ी में गिरती है और अधिकतर सूखी पड़ी रहती है। अधिक दक्षिण में काठियावाड़ का थैलीनुमा प्राय-द्वीप है। इसकी लहरदार धरती बीच में तीन चार हज़ार फुट ऊँची है। सम्भव है कि पहले यह एक द्वीप रहा हो। और कच्छ और खम्भात की खाड़ियाँ एक दूसरे से मिलती हों। काठियावाड़ के उत्तर में कच्छ का उजाड़ रेतीला और पहाड़ी द्वीप है। बड़ा रन (२०० मील लम्बा और १०० मील चौड़ा) अक्सर महीनों में रेतीला नमकीन उजाड़ रहता है। जहाँ जङ्गली गधे लोटते हैं। पर मानसून के दिनों में जुलाई से नवम्बर तक यह नमकीन और उथले (एक दो गज़ गहरे) पानी से घिर जाता है।

गंगा और सिन्ध के मैदान के दक्षिण में पठार की भूमि कछारी मिट्टी के नीचे दबती जा रही है। मैदान के दक्षिण में कुछ दूर तक कछारी मिट्टी से दबी हुई पहाड़ियाँ और चट्टानें मिलती हैं। पर इस मैदान के उत्तर में हिमालय की पर्वतश्रेणियाँ एक-दम ऊँची होती जा रही हैं।

भाबर

जहाँ पर हिमालय की श्रेणियों का आरम्भ होता है वहीं पर असंख्य धाराओं और नदियों ने कंकड़-पत्थर का ढेर इकट्ठा कर दिया है। इस तरह के पथरीले ढाल हिमालय के एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिलते

है। कंकड़ और पत्थर मिले हुए निर्जल ढाल को भावर कहते हैं। इस ढाल को पार करते समय केवल बड़ी नदियों का पानी ऊपर रहता है। छोटी छोटी धाराओं का पानी कंकड़ों के नीचे गिर जाता है। इसमें इस प्रदेश में बड़े बड़े पेड़ तो नज़र आते हैं पर खेती और आबादी का प्रायः अभाव है। यह प्रदेश ५ मील से १० मील तक चौड़ा है।

तराई

अधिक आगे भावर की ज़मीन मैदान में मिल जाती है। यहाँ पर (भीतर का) पानी ऊपर प्रकट हो जाता है। इसमें बड़े बड़े दलदल हो गये हैं। इन दलदलों में ऊँची घास और घने पेड़ हैं। इन भयानक जङ्गलों में मलेरिया के कारण आबादी नहीं है। पर अभी बड़े बड़े जङ्गली जानवर बहुत हैं। इस रोगग्रस्त प्रदेश को तराई कहते हैं। जिस तरह हिमालय की पहाड़ियों के नीचे एक सिरे से दूसरे सिरे तक भावर है उसी तरह भावर के नीचे तराई का प्रदेश है। अधिक पश्चिम में वर्षा की कमी के कारण सिन्ध के मैदान और हिमालय के ढालों के बीच में भावर तो बहुत है पर तराई का अभाव है। असली तराई का प्रदेश सहारनपुर, पीलीभीत, खीरी, बहराइच, गोरखपुर, मोतिहारी, जलपाई-गुड़ी आदि नगरों के उत्तर में आरम्भ होता है। भावर की अपेक्षा तराई का प्रदेश अधिक चौड़ा है।

पठार

मैदान के दक्षिण में भारतवर्ष का प्रायः समस्त त्रिभुजाकार प्रदेश पठार है। गंगा और सिन्ध के किनारे मैदान के [illegible] में मालवा और बुन्देलखण्ड की ओर ढलान [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

होता हुआ बिहार-उड़ीसा प्रान्त में सोन-घाटी के ऊपर ऊँची दीवार के समान खड़ा हुआ है। यह पहाड़ गंगा के प्रवाह-प्रदेश को नर्मदा, ताप्ती और महानदी में गिरने वाले पानी से पृथक् करता है। नर्मदा की घाटी विन्ध्याचल को सतपुरा पहाड़ से अलग करती है। सतपुरा पहाड़ विन्ध्याचल के ही समानान्तर ७०० मील तक (प्रायः अरब सागर से गंगा के

भारत का पहाड़ी ढाँचा

मैदान तक) चला गया है। इसकी ऊँचाई प्रायः तीन चार हज़ार फुट है। सतपुरा के दक्षिण में ताप्ती नदी की घाटी है। इन दोनों नदियों ने [illegible] मैदान बना दिये हैं। नर्मदा का मैदान प्राय [illegible] [illegible] है। इसकी चौड़ाई [illegible] [illegible] इसकी गहराई [illegible] [illegible] प्राय १०० मी[illegible] [illegible] समुद्र [illegible]

है। इनके आस पास का प्रदेश भी घाटियों से १००० फुट ऊँचा है। इसलिए एक घाटी से दूसरी घाटी में जाना सुगम नहीं है। पर खँडवा और बुरहानपुर के बीच में पहाड़ियों के नीचे हो जाने से दो घाटियों के बीच सुगम मार्ग बन गया है। उत्तरी भारत से दक्षिण में पहुँचने के लिए सदियों तक यही राजमार्ग रहा है। इस समय बम्बई और जबलपुर को जोड़ने के लिए ग्रेट इंडियन पेनिन्सुला रेल्वे ने भी इसी मार्ग का अनुसरण किया है।

ताप्ती नदी के दक्षिण में दक्खिन का असली त्रिभुजाकार पठार है। यह पठार पश्चिम में सबसे अधिक ऊँचा है और दक्षिण-पूर्व की ओर क्रमशः नीचा होता गया है। इस पठार का पूर्वी किनारा पूर्वीघाट के नाम से प्रसिद्ध है। पूर्वी घाट की टूटी फूटी पहाड़ियों की औसत ऊँचाई २००० फुट से अधिक नहीं* है। ये पहाड़ियाँ पूर्वी समुद्र-तट के समानान्तर चली गई हैं। पूर्वी घाट के पीछे की धरती पश्चिम की ओर ऊँची होती गई है। बीच में ऊँचे और चौड़े मैदान हैं। कुछ मैदान भूरे रंग के हैं पर अधिकांश काले हैं। कहीं कहीं पर चपटी चोटी वाली विचित्र पहाड़ियाँ हैं। पश्चिमी किनारे पर पश्चिमी घाट वास्तव में पहाड़ कहे जा सकते हैं। इनकी औसत ऊँचाई ३००० फुट है। दक्षिण में नीलगिरि की सर्वोच्च चोटी (दोदाबेटा) की ऊँचाई प्रायः ९००० फुट है। पश्चिमी घाट बम्बई से लेकर प्रायः कुमारी अन्तरीप तक फैले हुए हैं। समुद्र की ओर से देखने पर पश्चिमी घाट वास्तव में ऊँचे घाट की तरह नज़र आते हैं। उनको पार करने के लिए केवल तीन सुगम दर्रे हैं। थालघाट (२००० फुट से कुछ कम) बम्बई के उत्तर-पूर्व

---

* गंजाम ज़िले में इनकी केवल एक चोटी (महेन्द्रगिरि) लगभग ५००० फुट ऊँची है।

में और भोरघाट (२००० फुट से कुछ ऊपर) बम्बई के दक्षिण-पूर्व में स्थित हैं। पर नीलगिरि के दक्षिण में २० मील चौड़ा और केवल १००० फुट ऊँचा पालघाट का विचित्र दरवाज़ा है।

तटीय मैदान

पूर्वी घाट और बंगाल की खाड़ी के बीच में कारो-मंडल का चौड़ा और उपजाऊ समतल तटीय मैदान है। पर पश्चिमी घाट और अरब-सागर के बीच का तटीय मैदान तंग है और मलाबार तट के नाम से प्रसिद्ध है।

तीसरा अध्याय

नदियाँ

गंगा

गंगा नदी मध्यवर्ती हिमालय में १३८०० फुट की ऊँचाई पर गंगोत्री के पास गो-मुख (गाय का मुँह) की हिमकन्दरा से निकलती है। इसकी समस्त लम्बाई १५५० मील है। आरम्भ में यह भागीरथी कहलाती है। निकास के पास गंगा केवल ९ गज चौड़ी और १५ इंच गहरी है। प्रथम १८० मील तक यह एक प्रबल पहाड़ी धारा रहती है। टेहरी के नीचे इसमें अलकनन्दा आ मिलती है। हरिद्वार तक गंगा में अधिकांश पिघली हुई बरफ का निर्मल जल रहता है। हरिद्वार में ही गंगा की बड़ी नहर निकलती है। हरिद्वार में दूर दूर के यात्री स्नान करने आते हैं। हर १२वें साल कुम्भ के दिनों में ४ लाख से कम यात्रियों की भीड़ नहीं रहती है। यहाँ से आगे गंगा मैदान में प्रवेश करती है। और यमुना के संगम (इलाहाबाद) तक प्राय. दक्षिण-पूर्व की ओर मन्द-गति से बहती है। इसके बाद घाघरा के संगम तक गंगा का रुख कुछ उत्तर-पूर्व की ओर हो जाता है। इस संगम के आगे गंगा पूर्व की ओर बहती है। राजमहल की पहाड़ियों के आगे गंगा फिर एक बार दक्षिण की ओर मुड़ती है और कई शाखाओं में बँट जाती है। इसका प्रधान शाखा पद्मा दक्षिण पूर्व की ओर बहती है। गोआलन्डो के पास ब्रह्मपुत्र

की प्रधान शाखा यमुना और पद्मा (या पद्दा) में मिल जाती है। गंगा की पश्चिमी दूसरी शाखा पहले भागीरथी फिर मुहाने के पास हुगली कह-

हरिद्वार में गंगा की बड़ी नहर का दृश्य
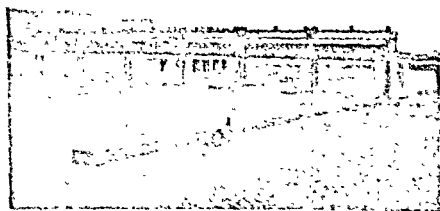
लाती है। हुगली के ही बायें किनारे पर कलकत्ता और दूसरी ओर दाहिने किनारे पर हावड़ा बसा हुआ है।

यमुना

दाहिने किनारे की सहायक नदियों में यमुना मुख्य है। यमुना नदी नन्दादेवी के उत्तरी ढाल में ११००० फुट की ऊँचाई पर यमुनोत्री से निकलती है। यमुनोत्री और गंगोत्री पास ही पास हैं। पर यमुना ८६० मील बहने के बाद प्रयाग (इलाहाबाद) में गंगा से मिलती है। संगम के आगे कुछ दूर तक यमुना का नीला पानी गंगा के भूरे जल से बिल्कुल अलग दिखाई देता है। चम्बल नदी मालवा पठार और दक्षिणी विन्ध्याचल और पूर्वी अरावली (क्योंकि अरावली के पूर्वी ढाल

गंगा का मैदान-प्रदेश

नागपुर के पठार से दामोदर नदी हुगली के दाहिने किनारे पर मुहाने के पास आ मिलती है।

डेल्टा

गंगा का डेल्टा तीन नदियों के मिलने से बना है। गंगा और ब्रह्मपुत्रा गोआलंडो में मिलती हैं। कुछ नीचे की ओर सुरमा या बारक नदी मिलती है। डेल्टा की प्रधान धारा मेघना कहलाती है। डेल्टा-प्रदेश का क्षेत्रफल ५०,००० वर्ग-मील है। यह डेल्टा उस अपार काँप से बना है, जो नदियाँ द्वारा हिमालय, आसाम की पहाड़ियों और ऊपरी मैदान से लाई गई हैं। डेल्टा का कुछ भाग जंगल और दलदल है। शेष में धान के खेत हैं। डेल्टा में नदियों की अनेक धाराएँ हो गई हैं। बंगाल की खाड़ी के पास जंगल के नीचे दलदली भाग में साँप, मगर और चीता आदि जंगली जानवर बहुत हैं। यहाँ एक पेड़ होता है जिसे बंगाली में सुन्दरी कहते हैं। इसीलिए डेल्टा का यह भाग सुन्दरबन कहलाता है।

यदि मिस्र को नील नदी का वरदान कहें तो उत्तरी पूर्वी भारत को गंगा का वरदान कह सकते हैं। गंगा की लाई हुई उपजाऊ मिट्टी और मीठे पानी से करोड़ों मनुष्यों का भरण-पोषण होता है। भोजन, जल और आने जाने की सुविधा होने के कारण गंगा के किनारे संसार की एक उच्च कोटि की सभ्यता का विकास हुआ। कई अंशों में भारतवर्ष का इतिहास गंगा का इतिहास है। फिर इसमें आश्चर्य ही क्या यदि यहाँ के निवासी गंगा को पूज्य समझें और उसे गंगामाता कहकर पुकारें?

ब्रह्मपुत्रा

यह नदी १८०० मील लम्बी है और तिब्बत तथा उत्तरी पूर्वी हिन्दुस्तान के विस्तृत (३,५०,००० वर्ग मील) प्रदेश का पानी बहा लाती है। यह नदी मानसरोवर झील के पूर्व कैलाश पर्वत से निकलती है। तिब्बत में यह नदी सांपू कहलाती है। अपने आधे मार्ग में ब्रह्मपुत्रा एक तंग घाटी में पूर्व की ओर हिमालय की समानान्तर होकर

बहती है। हिमालय के पूर्वी सिरे को पार करके मगर यह नदी दिहांग कहलाने लगती है और दक्षिण की ओर मुड़ती है। आसाम की घाटी में ब्रह्मपुत्रा ४५० मील तक ठीक पश्चिम की ओर बहती है। गोआलंडो में ब्रह्मपुत्रा गंगा नदी से मिल जाती है। इसके आगे का वर्णन गंगा के साथ किया जा चुका है। ब्रह्मपुत्रा के मार्ग में आसाम में प्रबल वर्षा होती है और सदिया के पास इसकी तली समुद्र-तल से केवल ४००० फुट ऊँची है। इसलिए आगे चल कर इसकी सतह पर गहरी धारा नावों के लिए अत्यन्त अनुकूल है। सदिया के पास नदी की चौड़ाई बहुत ही कम है दोनों किनारों पर उज्ज्वल रेत है। पर आगे बढ़ने पर हिमालय और आसाम की पहाड़ियों से सहायक नदियाँ इतना मटीला पानी लाती हैं कि इसमें कई सौ मील तक स्टीमर चलते हैं।

सिन्ध

सिन्ध नदी पश्चिमी तिब्बत में कैलाश पर्वत से (१७,००० फुट की ऊँचाई) हिमालय की प्रधान श्रेणी के उत्तरी ढाल के पास निकलती है और उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है। गिलगिट के पास दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़कर हिमालय के पश्चिमी सिरे को पार करती है। सिन्ध नदी के ऊपरी मार्ग में श्योक और गिलगिट नदियाँ काराकोरम का बर्फ़ीला पानी सिन्ध नदी के दाहिने किनारे पर ले आती हैं। काबुल नदी, स्वात और कुँआर नदियों के ज़रिये से हिन्दुकुश का पानी अटक के पास सिन्ध नदी में गिरता है। अटक के पास सिन्ध का पहाड़ी मार्ग पीछे छूट जाता है। दो तीन मील ऊँचे भयानक पहाड़ी किनारे भी पीछे ही रह जाते हैं। पर अटक के आगे भी कालाबाग तक सिन्ध की धारा काफ़ी तेज़ है और छोटी छोटी पहाड़ियों के बीच में घिरी हुई है। कुर्रम नदी अपनी सहायक टोची का पानी लेकर सिन्ध नदी के दाहिने किनारे पर मिलती है। इसके पार गोमल नदी अपनी सहायक झोब को मिलाकर डेरा इस्माइल खाँ के पास दाहिने ओर से सिन्ध में मिलता है

बाईं ओर की सहायक नदियों में सतलज प्रधान है। सतलज नदी सिन्ध के निकास के पास ही राक्षसताल से निकलती है और प्रायः हिमालय को पार करके पश्चिम की ओर बहती है। दाहिने किनारे पर सीधी रेखा में व्यास नदी सतलज से मिलती है। व्यास के संगम के बाद चनाव का पानी मिलाने के लिए सतलज का रुख दक्षिण पश्चिम की ओर हो जाता है। सतलज से मिलने से पहले चनाव के दाहिने किनारे पर झेलम और आगे चलकर बायें किनारे पर रावी नदी गिरती है। चनाव और सतलज की संयुक्त धारा पंजनद कहलाती है। ६० मील बहने के बाद पंजनद सिन्ध के बायें किनारे पर आ मिलती है। इस संगम के बाद किसी ओर से और कोई नदी सिन्ध में नहीं मिलती है। हैदराबाद के नीचे सिन्ध का डेल्टा शुरू होता है।

सिन्ध और उसकी सहायक नदियों में पहाड़ी बरफ के पिघलने से पानी आता है। इसलिए ये नदियाँ सिंचाई के लिए बहुत ही अच्छी हैं। सिंचाई के लिए सिन्ध और उसकी सहायक नदियों का संसार भर में प्रथम स्थान है। नील नदी कुछ कुछ सिन्ध की बराबरी कर सकती है।

मध्यभारत और दक्खिन की नदियाँ

नर्मदा

अमरकंटक से निकल कर नर्मदा एक तंग और सीधी घाटी में पश्चिम की ओर बहती है। नर्मदा के उत्तर में विन्ध्या और दक्षिण में सतपुरा की ऊँची पहाड़ी दीवार खड़ी हुई है। जबलपुर के नीचे संगमरमर की चट्टानों और प्रपात का दृश्य बड़ा मनोहर है। मध्यप्रान्त छोड़ने के बाद नर्मदा १ मील चौड़ी और मन्द हो जाती है। भड़ौंच के नीचे इसकी इस्चुअरी (खुला मुहाना) १३ मील चौड़ी है। यहाँ बड़ी बड़ी नावें चलती हैं। पर नर्मदा का ऊपरी भाग नाव चलाने और सिंचाई करने के लिए अनुकूल नहीं है। गंगा की भाँति नर्मदा नदी भी पवित्र मानी

जाती है। होशंगाबाद आदि बहुत से स्थानों पर नर्मदा के किनारे सुन्दर घाट और मनोहर मन्दिर हैं।
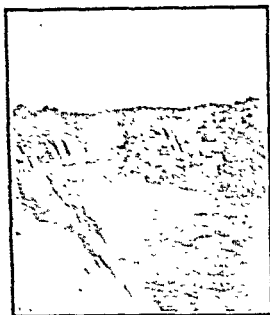
जबलपुर में नर्मदा का जल-प्रपात

ताप्ती

ताप्ती नदी मध्यप्रान्त के बैतूल ज़िले में मुलताई नगर के पास से निकलती है।

ताप्ती नदी की घाटी सतपुरा के दक्खिन में है। यह नदी मध्यभारत का बहुत सा पानी लेकर ४५० मील बहने के बाद खम्भात की खाड़ी में गिराती है। पर इसकी लाई हुई मिट्टी ने सूरत शहर को आजकल के स्टीमरों के लिए व्यर्थ कर दिया है। मुग़ल-काल में पश्चिमी हिन्दुस्तान का यही प्रधान बन्दरगाह था।

महानदी

यह नदी रायपुर ज़िले में अमरकंटक के पूर्वी सिरे से निकल कर

दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। यह नदी मध्यप्रान्त के आधे भाग और मद्रास के कुछ भाग का पानी लेकर ५०० मील बहने के बाद उड़ीसा में डेल्टा बनाती है। डेल्टा के पास ही बाईं ओर से ब्राह्मणी नदी आ मिलती है। दोनों का संयुक्त डेल्टा अत्यन्त उपजाऊ है।

गोदावरी

गोदावरी बम्बई के उत्तर में नासिक के पास पश्चिमी घाट से निकलती है। इस नदी के पथ का दृश्य बड़ा मनोहर है। भवभूति आदि पुराने संस्कृत-कवियों ने भी इसके दृश्य की प्रशंसा की है। यह नदी ९०० मील लम्बी है। अपने ⅓ मार्ग में यह नदी हैदराबाद राज्य में होकर ठीक पूर्व की ओर बहती है यहाँ दक्षिण में मंजीरा नदी गोदावरी के समानान्तर बहने के बाद दाहिने किनारे पर मिल जाती है। इस राज्य के बाहर निकलने पर यह नदी दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। मोड़ के पास ही इसके बायें किनारे पर पैनगंगा, वार्धा और वैनगंगा का संयुक्त जल गोदावरी में आ मिलता है। मोड़ के आगे कुछ दूर तक गोदावरी नदी हैदराबाद-राज्य और मद्रास प्रान्त के बीच में सीमा बनाती है। यहीं इन्द्रावती नदी दुर्गम प्रदेश को पार करती हुई गोदावरी के बायें किनारे पर आ मिलती है। इन्द्रावती की ही पहाड़ियों में गोंड़ लोग रहते हैं जो बीसवीं सदी में भी पत्थर के हथियार इस्तेमाल करते हैं। इन्द्रावती के संगम के बाद उत्तर-पूर्व से चल कर सबरी नदी गोदावरी में गिरती है। इन नदियों के मिलने से गोदावरी का जल बहुत बढ़ जाता है। पर गोदावरी को पूर्वी घाट की पहाड़ियाँ पार करनी पड़ती हैं। इसलिए मद्रास प्रान्त के २० मील में गोदावरी की घाटी बहुत ही तंग हो जाती है। पूर्वी घाट के पार करने के बाद अपने अन्तिम ६० मील में यह नदी फैल कर इतनी चौड़ी हो जाती है कि इसके बीच में अनेक द्वीप बन गये हैं। राजमहेन्द्री के पास गोदावरी की धारा के आरपार २½ मील लम्बा बाँध (एनीकट) बना हुआ है। यहाँ से तीन

दक्षिणी गंगा कहलाती है। शिवसमुद्रम् के नीचे कावेरी की दोनों शाखाओं में कई सुन्दर प्रपात हैं। झरनों की सहायता से ३०० फुट नीचे उतर कर कावेरी नदी मद्रास प्रान्त में प्रवेश करती है। इसके डेल्टा से ही तंजौर का उपजाऊ ज़िला बना है जो दक्षिण-भारत का बगीचा कहलाता है।

भारतीय नदियों की विशेषतायें

प्रदेश के अनुसार नदियों की गति भिन्न है। उत्तरी-पश्चिमी भारत की नदियाँ वर्षा की कमी के कारण प्रायः सालभर सूखी पड़ी रहती हैं। केवल बरफ़ के पिघलने पर उनमें ग्रीष्म के आरम्भ में कुछ पानी हो जाता है।

हिमालय के बड़े बड़े हिमागारों का बर्फ़ीला पानी लाने वाली सिन्ध आदि नदियों में ग्रीष्म ऋतु में प्रबल बाढ़ आती है और ऋतुओं में भी उनमें काफ़ी पानी रहता है। इसीलिए सिन्ध और पंजाब के उपजाऊ प्रदेश को सींचने के लिए इन नदियों से बड़ी बड़ी नहरें निकालने में सुविधा हुई है। मध्य और पूर्वी हिमालय से निकलने वाली नदियों में दो बार बाढ़ आती है। ग्रीष्म के आरम्भ में बरफ़ पिघलने से बाढ़ आती है। इस बाढ़ से नदियों में पानी बढ़ जाता है पर पानी मटीला नहीं होता है। दूसरी और अधिक बड़ी बाढ़ प्रबल वर्षा से होती है। इसी से पानी एक दम मटीला हो जाता है और अक्सर किनारे के गाँव डूब जाते हैं। इन नदियों का मध्यवर्ती भाग उपजाऊ और प्रायः समतल मैदान में स्थित है। इसलिए ये नदियाँ सिंचाई करने और नाव चलाने के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। दक्षिणी भारतवर्ष की नदियाँ ऐसे भागों से निकलती हैं जहाँ बरफ़ कभी नहीं

कावेरी का डेल्टा प्रसिद्ध द्वीप श्रीरंगम है जो त्रिचनापल्ली के पास है।

चौथा अध्याय

भूगर्भ-विद्या और प्राकृतिक सम्पत्ति

भूगोल में पृथिवी के ऊपरी धरातल का वर्णन रहता है। पर भूगर्भ-विद्या में पृथिवी के गर्भ अर्थात् पपड़े की चट्टानों की रचना, उनके परिवर्तन और अवस्था का अध्ययन रहता है। इस प्रकार भूगर्भ-विद्या का अध्ययन अधिक गहरी तह तक पहुँचता है। भूगर्भ-विद्या के विद्वानों ने पृथिवी की चट्टानों को चार बड़े बड़े युगों में बाँटा है। अति प्राचीन या एज़ोइक चट्टानों में किसी प्रकार के पशु या वनस्पति सम्बन्धी जीवों के ढाँचे या चिन्ह नहीं मिलते हैं। प्राचीन या पेलिओज़ोइक चट्टानें उस समय की हैं जब कि जीवधारियों का प्रथम विकास हुआ। इसलिए इनमें कहीं कहीं आरम्भ काल के जीवधारियों के ढाँचे और चिन्ह पाये जाते हैं। मध्यकालीन या मेसोज़ोइक चट्टानों में अधिक विकसित जीवों के निशान मिलते हैं। नवीन या निओज़ोइक अथवा केनिओज़ोइक चट्टानों में आज कल के प्रायः सभी जीवधारियों के ढाँचे मिलते हैं।

भारतवर्ष का दक्षिणी प्रायद्वीप अत्यन्त पुराना भाग है। दक्खिन की २ लाख वर्गमील भूमि समय समय पर ज्वालामुखी के फूट निकलने से लावा की तहों से बनी है। लावा की एक एक तह दो गज़ से लेकर

में बहुत स्थानों पर पाये जाते हैं। संगमूसा और बुन्द के नरम मूंह बहुत प्रसिद्ध हैं।

मिट्टी

जबलपुर और आगरा के रेत से अच्छा शीशा बनता है। मैदान में कंकड़ बहुत से स्थानों में मिलता है। इससे सीमेन्ट तैयार किया जाता है और सड़कें बनती हैं। चिकनी मिट्टी बहुत स्थानों में पाई जाती है। पर राजमहल की पहाड़ी, जबलपुर, भागलपुर, और गया की मिट्टी सर्वोत्तम है। कटिनी, जैसलमेर और बीकानेर में मुल्तानी मिट्टी मिलती है।

गंगा के मैदान में बहुत से स्थानों से कंकड़ मिलता है जिससे चूना और सीमेन्ट तैयार किया जाता है इसीसे पक्की सड़कें भी बनाई जाती हैं। निम्नलिखित स्थान चूना और सीमेन्ट तयार करने के बड़े बड़े केन्द्र हैं:—

कटिनी (जबलपुर) यहाँ कच्चा माल विन्ध्याचल की निचली पहाड़ियों से आता है।

सतना (रीवाँ) यहाँ कच्चा माल ऊपरी विन्ध्याचल से मिलता है।

सिलहट (आसाम) यहाँ कच्चा माल आसाम की पहाड़ियों से आता है।

रंगपुर (बंगाल) यहाँ कच्चा माल कुछ विन्ध्याचल से और कुछ स्थानीय कंकड़ों से लिया जाता है।

शाहाबाद (बिहार) जिले के कारखानों में रोहतास (विन्ध्याचल) के चूने का पत्थर काम आता है। सीमेन्ट बनाने के लिए शिवालिक, साल्टरेंज, हज़ारा और बाहरी हिमालय में भी कच्चा माल मिलता है

मकान बनाने के पत्थर

अर्काट, बंगलौर और दक्षिणी भारत के बहुत से स्थानों में सुन्दर दानादार पत्थर निकलता है। यह पत्थर संसार के और देशों के पत्थरों

पलना (बीकानेर) से निकलता है। इसके अतिरिक्त मध्यभारत, काश्मीर सीमा प्रान्त और कच्छ में भी कोयला निकाला जा सकता है।

पीट

नीलगिरि, नैपाल और काश्मीर की घाटियों और कई झीलों में पीट पाया जाता है। इसे काट कर और सुखा कर जलाने के लिए ईंधन बनाया जाता है।

मिट्टी का तेल

जहाँ हिमालय के दोनो सिरे मुड़ते हैं वहीं मिट्टी के तेल के प्रधान केन्द्र हैं। [यह अधिकतर पूर्व की ओर बरमा और आसाम प्रान्त में मिलता है। कुछ पश्चिम की ओर पंजाब और बिलोचिस्तान से निकलता है। बरमा में यनांजाऊं, सिंजु, यनांजात और मिनबू प्रसिद्ध तेल-केन्द्र हैं। यहाँ प्रतिवर्ष प्राय: २७ करोड़ गैलन तेल निकलता है। आसाम के लखीमपुर ज़िले के तेल का सम्बन्ध माकूम की कोयले की खानों से है। डिगबोई इसका मुख्य केन्द्र है जहाँ से ४५ लाख गैलन तेल प्रति वर्ष निकलता है।

पंजाब में रावलपिंडी और अटक ज़िलों के तेल के चश्मों से लोग बहुत वर्षों से परिचित हैं। साल्टरेंज के उत्तर में पिंडीगेब के चश्मे बहुत ही लाभदायक जान पड़ते हैं। प्राकृतिक तेल के साफ करने पर वेसलिन, मोम (मोमबत्ती) आदि बहुत सी गौण उपज मिलती है। प्राकृतिक गैस हमारे यहाँ व्यर्थ ही चली जाती है। पर और देशों में यह नलों के द्वारा शहरों में भेजी जाती है और प्रकाश तथा गरमी पैदा करने के काम आती है।

सोना

सोने की उपज के लिए संसार में भारतवर्ष का आठवाँ स्थान है। पर समस्त उपज का केवल ३ % यहाँ सोना यहाँ निकलता है। हिन्दुस्तान
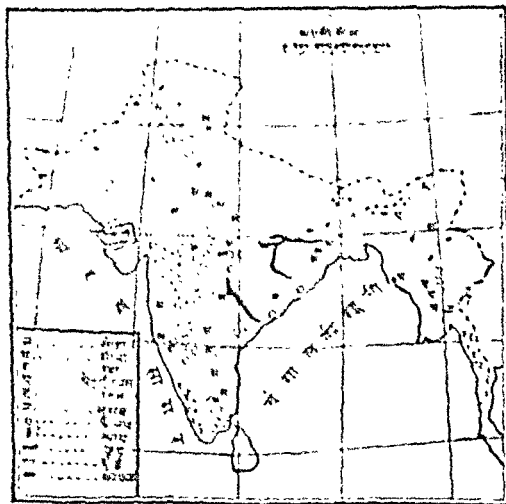
दक्षिण दिशा में एक दूसरे के समानान्तर चली गई हैं। कोई कोई चार फुट मोटी हैं।* इनमें सोने के छोटे छोटे टुकड़े मिलते हैं। पहले लोग चट्टान को चूर चूर कर लेते हैं फिर उसमें पानी मिलाकर पारा जड़े हुए तांबे के बर्तनों में बहाते हैं। सोने का अधिक बड़ा भाग इस प्रकार प्राप्त होता है। शेष भाग को दूसरे वैज्ञानिक ढंगों से निकालते हैं।

यह सब काम बिजली से होता है जो यहाँ से ९२ मील की दूरी पर कावेरी के शिवसमुद्रम् प्रपात से तयार की जाती है और तार द्वारा यहाँ पहुँचाई जाती है। मज़दूरों की संख्या प्रायः २०,००० है। प्रति वर्ष कोलार से तीन करोड़ रुपये का सोना निकलता है। प्रायः ½ लाख रुपये का सोना हट्टी (निजाम राज्य) और एक लाख रुपये का सोना अनन्तपुर (मद्रास प्रान्त) से मिलता है। सारा सोना बम्बई की टकसाल में खरीद लिया जाता है।

तांबा

सिंहभूमि, छोटा नागपुर, अजमेर, खेड़ी, अलवर, उदयपुर, सिकम, कुल्लू, गढ़वाल आदि कुछ स्थानों में तांबा पाया जाता है। प्रायः दो ढाई लाख रुपये का तांबा इस प्रकार निकलता है। पर देश में तांबे की बड़ी माँग है। इस माँग को पूरा करने के लिए प्रतिवर्ष ३ करोड़ रुपये का तांबा विदेशों से मँगाया जाता है।

लोहा

सर्वोत्तम लोहा बंगाल के मयूरभंज राज्य, मध्यप्रान्त के रायपुर ज़िले और मैसूर के बाबाबुदन पहाड़ से निकलता है। बंगाल-बिहार अपनी

---

* एक शिला ४ मील लम्बा [illegible] फुट [illegible] कहीं [illegible] ६००० [illegible] गहरा है।

बरमा का मोगोक ज़िला लाल के लिए प्रसिद्ध है। काश्मीर में पुखराज निकलता है।

अन्य मूल्यवान पत्थर भी कहीं कहीं हिमालय या विन्ध्याचल के पहाड़ी भागों में पाये जाते हैं।

नमक

मद्रास तथा बम्बई-तट, कच्छ और सिन्ध-डेल्टा के पास समुद्र के पानी को धूप में सुखाकर नमक तयार किया जाता है। जैपुर की सांभर, जोधपुर की डिडवाना तथा फलौदी और बीकानेर की लूंकारसर झीलों से भी नमक निकाला जाता है। बिहार, दिल्ली और संयुक्त प्रान्त के आगरा आदि शुष्क ज़िलों में खारी सोतों और कुओं से नमक बनाया जाता है। उत्तरी भारत में पहाड़ी नमक अपार है। झेलम ज़िले में खेउड़ा की खानों से शुद्ध नमक निकाला जाता है। एक तह की मुटाई ५५० फुट है। इसकी लम्बाई बहुत बड़ी है। कोहाट ज़िले में बहादुरखेल के पास नमक की एक पहाड़ी की मुटाई १००० फुट और लम्बाई ८ मील है।

शोरा

बिहार, पंजाब, सिन्ध आदि प्रान्तों में खारी मिट्टी को गरम कर उससे शोरा बनाया जाता है। पहले बारूद बनाने के लिए हिन्दुस्तानी शोरा योरुप को बहुत जाता था। पर अब बनावटी शोरा तयार हो जाने से केवल १८ लाख रुपये का (१०,००० टन) शोरा बाहर जाता है।

फिटकरी

बनावटी फिटकरी तयार हो जाने से हिन्दुस्तान में अब केवल कच्छ और कालाबाग में फिटकरी तयार की जाती है।

३—मद्रास की भूरी कछारी ज़मीन गंगा के मैदान की ज़मीन से कम उपजाऊ होती है।

४—मद्रास प्रान्त की पहाड़ी लाल ज़मीन (जो कोयम्बटूर, मदुरा, करनूल और कृष्णा ज़िलों में मिलती है) कमज़ोर होती है। यह ऐसी चट्टानों के घिसने से बनी है जिनमें पौधों का भोजन अधिक नहीं रहता है।

५—लुहारी मिट्टी महाराष्ट्र, रीवाँ आदि हिन्दुस्तान के बहुत से भागों में पाई जाती है। इसमें पचीस या तीस फ़ी सदी लोहा मिला रहता है। जब यह ताज़ी खोदी जाती है तो यह मुलायम होती है और इसमें
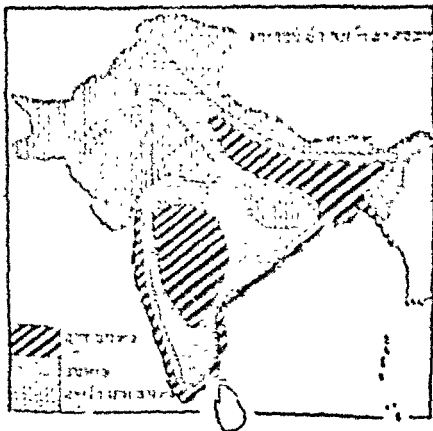
पाँचवाँ अध्याय

जल-वायु

भारतवर्ष एक विशाल देश है। यह प्रायः ६ उत्तरी अक्षांश से लेकर ३६ उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। इसका बहुत सा भाग समुद्र-तल से कुछ ही गज़ ऊँचा है। कुछ भाग समुद्र-तल से चार-पाँच मील ऊँचा है। कहीं समुद्र पास है, कहीं समुद्र और भीतरी प्रदेश के बीच में सैकड़ों मील की दूरी है। देश के कुछ भाग पानी लाने वाली हवाओं के मार्ग में स्थित हैं। कुछ भाग मार्ग से दूर अलग पड़े हुए हैं। इन सब कारणों से हमारे देश में प्रायः सभी तरह की जल-वायु पाई जाती है। इसके दक्षिणी भागों में भूमध्य रेखा की उष्णार्द्र[1] (गरम और तर) जलवायु है। पर हिमालय के उच्च शिखर ध्रुव प्रदेश की भाँति ठंडे हैं।

तापक्रम (सरदी और गरमी) नमी, हवा और वर्षा ही जलवायु के ४ प्रधान अंग हैं। हमें यह देखना है कि जलवायु के प्रत्येक अंग का भारत वर्ष पर क्या प्रभाव पड़ता है।

---

[1] Hot and moist

दिल्ली
जोधपुर
कराची
अहमदाबाद
सूरत
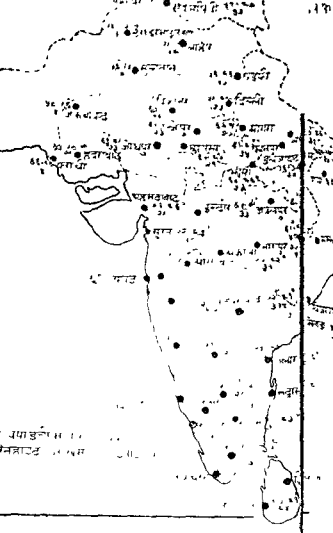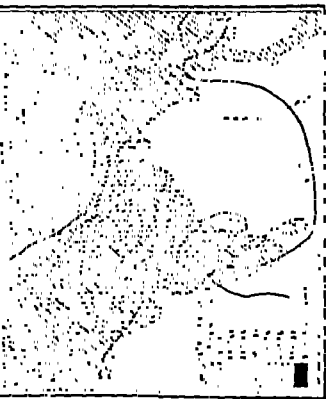
अधिक से अधिक गरम दिन और अधिक से अधिक ठंडी रात के ताप-क्रम में १९ अंश से अधिक भेद नहीं पाया गया है।

अगर हम उत्तर में बम्बई तक बढ़ें तो तापक्रम-भेद भी बढ़ता जायगा। पर प्रायद्वीप के सब भागों में यह तापक्रम-भेद एकसा नहीं बढ़ता है। एक ही अक्षांश में पश्चिमी तट का तापक्रम-भेद सब से कम, पूर्वी तट का उससे अधिक और समुद्र से दूर बीच में सबसे अधिक है। उदाहरणार्थ पश्चिमी तट पर मंगलोर पूर्वी तट पर मद्रास और मध्य में बंगलोर प्रायः एक ही अक्षांश में स्थित हैं। पर अत्यन्त ठंडे और अत्यन्त गरम महीने का तापक्रम-भेद मंगलोर में ७ अंश, मद्रास में १२ अंश और बंगलोर में १३ अंश होता है। सूरत, नागपुर और कटक भी प्रायः एक अक्षांश में हैं पर सूरत का तापक्रम-भेद १६ अंश, नागपुर का २६ अंश और कटक का १९ अंश है। पर अधिक उत्तर की ओर बढ़ने पर पश्चिमी तट के पास वाले स्थानों का तापक्रम-भेद पूर्वी तट के स्थानों के तापक्रम-भेद से कहीं अधिक बढ़ जाता है। अत्यन्त ठंडे और अत्यन्त गर्म महीने और तापक्रम का भेद हैदराबाद (सिन्ध) में २८ अंश, बनारस में ३० अंश, सिलचर (आसाम) में १८ अंश होता है। इन एक अक्षांश वाले स्थानों में सूर्य की किरणें समान कोण से गिरती हैं। दिन रात की लम्बाई भी समान होती है। पर हवा की नमी और खुश्की के कारण इनके तापक्रम में भेद हो जाता है। हवा जितनी ही अधिक नम (आर्द्र) होगी उतना ही कम भेद शीतकाल और ग्रीष्म काल के तापक्रम में रहेगा। बम्बई के दक्षिण में पश्चिमी तट की हवा पूर्वी तट की हवा से कहीं अधिक नम होती है। मध्य भाग में हवा दोनों तटों से भी कहीं अधिक खुश्क होती है। उत्तरी सिन्धु गङ्गा वाला मैदान और पंजाब में यह भेद और भी अधिक विकराल हो जाता है हैदराबाद और नागपुर में गरमी की ऋतु में दिन का तापक्रम [illegible] में ११० अंश से अधिक हो जाता है पर यहाँ के [illegible]

ऋतु में रात को ठंड से बचने के लिये कुछ न कुछ गरम कपड़ा धारण कर सोते हैं। इंगलिस्तानवालों में किसी किसी साल सरदी की ऋतु में बर्फ़ पड़ जाती है पर गरमी का तापक्रम १२० अंश फारेनहाइट रहता है। इसके विपरीत आसाम और पूर्वी बंगाल में गरमी की ऋतु कभी ज़्यादा नहीं होती है। जिन दिनों में उत्तरी-पश्चिमी भारत में लोगों की जान झुलस जाती है और नदियों में धूल उड़ा करती है उन दिनों में भी आसाम, बंगाल, ढाका और मद्रास के तर (आर्द्र) भागों में सब कहीं हरियाली रहती है।

गुजरात, मध्यप्रान्त, मध्यभारत, बिहार और संयुक्तप्रान्त न सिन्ध की तरह ख़ुश्क और न आसाम की तरह तर हैं। कर्करेखा से भी दूर नहीं हैं। इसलिए यहाँ गरमियों में काफ़ी गरमी पड़ती है और सरदी में मामूली ठंड होती है।

ऊँचाई और तापक्रम

समुद्र-तल से प्रायः प्रति ३०० फ़ुट की ऊँचाई पर १ अंश फारेन-हाइट तापक्रम कम होता जाता है। इसी से हिमालय की ऊँची चोटियों पर युग के युगों से भी बरफ़ जमी रहती है। गरमी की ऋतु में जब मैदान में हम लोग पसीने से भीग जाते हैं और रात को पंखा चलाने से भी चैन नहीं पाते हैं उसी समय छः सात हज़ार फुट की ऊँचाई पर उसी अक्षांश में ऐसी ठंडक रहती है कि लोग गरम कपड़े पहनते हैं और रात को अँगीठी जलाकर मकान के अन्दर सोते हैं। औसत से ७००० फुट की ऊँचाई पर हमारे यहाँ उसी तरह की ठंडी जलवायु है जिस तरह की दक्षिणी योरप में रहती है। पर दक्षिणी उत्तरी हिन्दुस्तान का शीत-काल योरप के ग्रीष्म-काल से बहुत कुछ मिलता है। यही कारण है कि हिन्दु-

स्तान के प्रायः प्रत्येक प्रान्त में योरोपियन लोगों ने गरमियों में रहने के लिये कोई न कोई पहाड़ी स्थान* निश्चित किया है।

मानसून

तापक्रम के विवरण में हम देख चुके हैं कि हिन्दुस्तान के बहुत से भागों की जलवायु अनुकूल रहती है। समुद्र और भूमध्य रेखा की समीपता के अतिरिक्त हिन्दुस्तान की बनावट भी इस जलवायु को अनुकूल बनाती है। हिन्दुस्तान का जो भाग भूमध्य रेखा के पास है वही भाग ऐसा त्रिभुजाकार है कि उस पर समुद्र का अधिक से अधिक असर पड़ता है। पठार की ऊँचाई भी प्रायद्वीप की गरमी को कुछ कम कर देती है। सिन्ध और गंगा के मैदान के उत्तर में प्रायः चार पाँच मील ऊँचा हिमालय का पहाड़ है। यह पहाड़ दूसरी ओर वाले दो तीन मील ऊँचे तिब्बत के पठार की ठंडी (धरातली) हवाओं को हिन्दुस्तान में नहीं आने देता है। हिन्दूकुश, सफ़ेद-कोह, सुलेमान आदि उत्तर-पश्चिम की पहाड़ियाँ भी औसत से छः सात हज़ार फुट ऊँची हैं। इनके पीछे ईरान का पठार औसत से पाँच हज़ार फुट ऊँचा है। इसलिए हिन्दुस्तान की उत्तरी-पश्चिमी पहाड़ियाँ भी ईरानी तूफ़ानों से हिन्दुस्तान को काफ़ी सुरक्षित रखती हैं। दर्रों के ज़रिये से आने वाली हवा का असर बहुत अधिक नहीं होता है।

दक्षिणी-पश्चिमी मानसून

हिमालय की ऊँची पहाड़ी दीवार से दूसरा लाभ यह है कि

---

* शिमला (पंजाब), मंसूरी और नैनीताल (संयुक्तप्रान्त), रांची (बिहार उड़ीसा), दार्जिलिंग (बंगाल), शिलांग (आसाम), पचमढ़ी (मध्यप्रान्त), आबू (राजपूताना), महाबलेश्वर (बम्बई), उटकमंड (मद्रास) ये सब स्थान ५०००-८००० फुट के बीच की ऊँचाई पर बसे हैं।

ग्रीष्म ऋतु की वर्षा
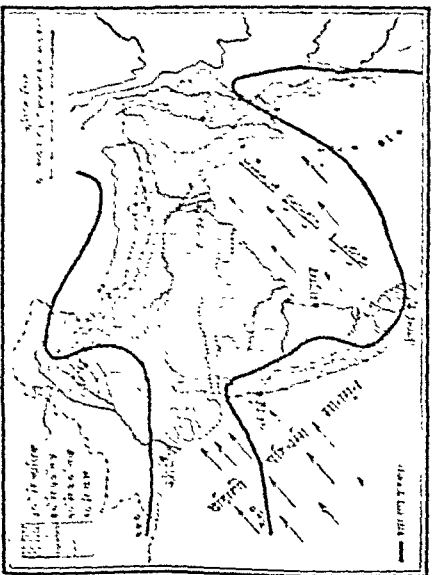
वह हिन्दुस्तान की पानी बरसाने वाली हवाओं को भी बाहर नहीं जाने देती है। यदि अटलांटिक महासागर और प्रशान्त महासागरों की तरह हिन्दमहासागर भी उत्तर में आर्कटिक महासागर तक फैला होता तब तो हिन्दमहासागर में भूमध्य रेखा के पास सदा परम-तापक्रम और अल्प[1] वायुभार रहता। इसलिए यहाँ उत्तरी-पूर्वी ट्रेड हवायें चला करतीं। पर हिन्द महासागर के उत्तर में स्थल समूह है जो गरमी के दिनों में समुद्र से कहीं अधिक गरम हो जाता है। जून-जुलाई में भूमध्यरेखा के पास हिन्दमहासागर का औसत तापक्रम केवल ७७ अंश फारेनहाइट होता है। पर उन्हीं दिनों में भारतीय प्रायद्वीप का औसत तापक्रम ८२ अंश होता है। सिन्ध, बिलोचिस्तान और अरब का औसत तापक्रम ९५ अंश से ऊपर हो जाता है। अधिक गरमी के कारण स्थल की हवा भी हल्की होकर ऊपर उठती है और भूमध्यरेखा की अधिक भारी हवा इसका स्थान भरने के लिए आती है। लगातार भाप के मिलते रहने से यह हवा नमी से सम्पृक्त[2] होती है। इस हवा का एक भाग पूर्वी अफ्रीका (एबीसीनिया) की ओर जाता है। दूसरा भाग हिन्दुस्तान की ओर आता है। हिन्दुस्तान की ओर आनेवाली हवा भी दो भागों में बँट जाती है। अरबसागर की हवा पहले पहल पश्चिमी घाट से टकराती है। यह हवा प्रति वर्ष प्रायः नियत समय पर बड़े वेग (प्रति घंटे प्रायः २० मील की चाल) से आया करती है। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न प्रान्तों में भिन्न भिन्न तिथि को पहुँचती है। सब प्रान्तों से इसके लौटने का समय भी भिन्न है।—

---

[1] Low pressure [2] Saturated

प्रान्त	मानसून के आरम्भ होने की तिथि	लौटने की तिथि
बम्बई	५ जून	१५ अक्टूबर
बंगाल	१५ जून	१५-३० अक्टूबर
संयुक्त प्रान्त	२५ जून	३० सितम्बर
पंजाब	१ जुलाई	१४-२१ सितम्बर

जुलाई तक यह हवा समस्त हिन्दुस्तान में फैल जाती है। साल भर की ८५ फ़ी सदी वर्षा इसी हवा से होती है। पर यह मानसून लगातार पानी नहीं बरसाती है। बीच बीच में वर्षा रुक जाती है।

सब भागों में एक सी वर्षा नहीं होती है। लंका और पश्चिमी घाट में अधिक वर्षा (१०० इंच से ऊपर) होती है। बम्बई में प्रतिवर्ष औसत से ७१ इंच वर्षा होती है। बम्बई के दक्षिण में तट पर वर्षा की मात्रा बढ़ते बढ़ते धुर दक्षिण में २०० इंच तक हो जाती है। पर बम्बई के उत्तर में वर्षा की कमी है। कराची में प्रति वर्ष औसत से केवल ६ इंच वर्षा होती है। सिन्ध का डेल्टा अक्सर सूखा पड़ा रहता है। पश्चिमी घाट को पार करने के बाद इस हवा में बहुत कम नमी रह जाती है। इसलिए दक्खिन में बहुत थोड़ी (२० इंच) वर्षा होती है।

अरब सागर की ओर से आनेवाली मानसून की मात्रा बंगाल की खाड़ी की मात्रा से कहीं अधिक होती है। बंगाल की खाड़ी का विस्तार अधिक हो गया है। इस हवा से इरावदी के डेल्टा, ब्रह्मा के पश्चिमी तट और गंगा के डेल्टा में प्रबल वर्षा होती है। आगे बढ़ने पर खासिया

पहाड़ और अराकानयोमा के बीच में इस हवा को तंग रास्ते में एकदम ऊँचा चढ़ना पड़ता है। मैदान में अधिकतर पानी होने से बारहम भी ऊँचा रहता है। इसलिए जहाँ मैदान में (ढाका में) ७७ इंच पानी बरसता है वहीं सिल्हट में १०४ इंच पानी बरसता है। पर सिल्हट भी पहाड़ के नीचे मैदान पर ही बसा है। चेरापूंजी ४४५५ फुट ऊँची पहाड़ी के ठीक दक्षिणी ढाल पर बसा है। यहाँ दुनिया भर में सब से अधिक (४०० इंच) वर्षा होती है। एक वर्ष तो यहाँ ६०५ इंच वर्षा हुई। इस पहाड़ी के अधिक आगे भी वर्षा कम है। चेरापूंजी से २५ मील भीतर की ओर होने से शीलांग में ५७ इंच ही वर्षा होती है। हिमालय की रुकावट होने से बंगाल की खाड़ी का प्रधान भाग उत्तर पश्चिम की ओर चढ़ता है। पर अधिक पश्चिम की ओर बढ़ने से वर्षा क्रमशः कम होती है। बरेली में ३६ इंच और पेशावर में केवल ४ इंच वर्षा होती है। इस मानसून के उत्तरी सिरे पर (हिमालय के पास) सब कहीं दक्षिणी सिरे से अधिक वर्षा होती है। गया में पटना से, झाँसी में इलाहाबाद से, आगरा में बरेली से दिल्ली में देहरादून से कहीं कम वर्षा होती है।

उत्तरी-पूर्वी मानसून

अक्टूबर के महीने से शीतकाल आरम्भ हो जाता है तभी जल की अपेक्षा स्थल अधिक ठंडा हो जाता है और हवा को समुद्र की ओर लौटना पड़ता है। लौटते समय इस हवा में अधिक नमी नहीं रहती है। पर बंगाल की खाड़ी में कुछ भाप मिल जाने से यह हवा पूर्वी तट में गोदावरी के मुहाने से कुमारी अन्तरीप तक तथा पूर्वी लंका में विशेष रूप से पानी बरसाती है। अरबसागर की मानसून लौटते समय मलाबार तट पर पानी बरसाती है।

इस समय सीमा प्रान्त पंजाब और संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी ज़िलों में दो-तीन इंच पानी बरसा देती हैं। अधिक ऊँचाई पर बरफ़ गिरती है। इस प्रकार वर्षा के अनुसार हिन्दुस्तान चार भागों में बँटा हुआ है:—

शीतकाल की वर्षा
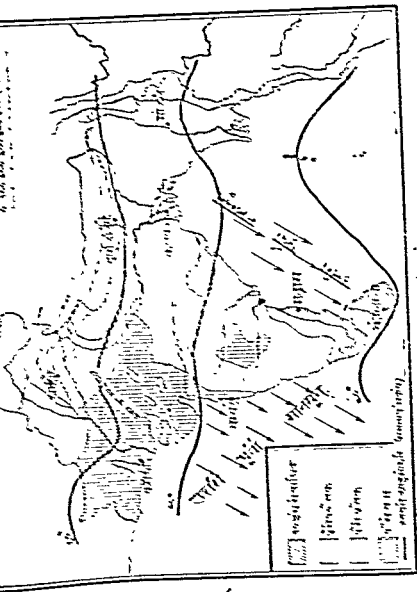
१—अधिक वर्षा के प्रदेश

१०० इंच से ऊपर वर्षा पश्चिमी तट, गंगा के डेल्टा, आसाम और सुरमाघाटी, ब्रह्मा के तट, और इरावदी-डेल्टा में होती है।

२—अच्छी वर्षा के प्रदेश

४० से ८० इंच तक वर्षा गंगा की घाटी से दिल्ली तक, पूर्वी तट और ब्रह्मा के उत्तरी-पूर्वी पहाड़ी प्रदेश में होती है।

३—शुष्क प्रदेश

२० से ४० इंच तक वर्षा दक्खिन, मध्यभारत के पठार और मांडले के दक्षिण ब्रह्मा के मध्य भाग में होती है।

४—अधिक शुष्क भाग

५ से १० इंच तक वर्षा अरावली के पश्चिम में सिन्ध और बिलोचिस्तान में होती है। अकाल में पीड़ित होने वाले प्रान्त क्रमशः ये हैं:—सिन्ध और कच्छ, संयुक्त प्रान्त, मध्य देश और बरार, बिहार, हैदराबाद, मध्य भारत, गुजरात, बम्बई-वाला दक्षिण प्रदेश, मैसूर, करनाटक राजपूताना, पंजाब, उड़ीसा, और उत्तरी मद्रास।

बंगाल की खाड़ी के चक्रवात

ये कुछ दूर भीतर तक पहुँचते हैं। और निचले भागों में अपने साथ पानी भी बहा लाते हैं। अगर इनके साथ ज्वार भी मिल गया तो कुछ ही मिनट में दस बारह गज पानी चढ़ आता है। १८७६ ई० की अक्टूबर में आध घन्टे के भीतर ही भीतर मेघना के कछार (बाकरगंज) में १ लाख से अधिक मनुष्य डूब गये और इसके बाद बीमारी फैली उससे भी २ लाख मनुष्य मर गये। पर ऐसे भयानक तूफान कहीं दस-बीस वर्षों में एक-दो बार आते हैं।

मानसून पर निम्न बाहरी कारणों का गहरा असर पड़ता है:—

१—जब हिमालय और उसकी पश्चिमी पहाड़ों पर मई के महीने तक भारी बरफ़ पड़ती रहती है तो उत्तरी और पूर्वी खुश्क हवाएँ चलने लगती हैं। इससे मानसून देरी से आती है और कम पानी बरसाती है।

२—मारीशस के पास हिन्द महासागर में हवा के बहुत भारी दबाव होने से हिन्दुस्तान में भी हवा का भार बढ़ जाता है और मानसून कमज़ोर पड़ जाती है।

३—मार्च, अप्रैल और मई महीनों में जिस तरह का वायुभार आ-र्जेन्टाइना, और चिली (दक्षिणी अमरीका) में रहता है उसका उल्टा हिन्दुस्तान में देखा गया है। यदि यह वायुभार ऊँचा होता है तो मानसून अच्छी चलती है।

४—यदि अफ्रीका में ज़ंज़ीबार आदि भूमध्य रेखा के पास वाले स्थानों में अप्रैल और मई में ज़ोर की वर्षा होती है तो मानसून कमज़ोर पड़ जाती है। यदि इन महीनों में वहाँ कम पानी बरसता है तो मानसून खूब पानी बरसाती है।

५—यदि हिन्द महासागर के दक्षिणी भाग में अधिक बरफ़ पड़ जाती है तो मानसून उस साल खूब पानी बरसाती है।

६—नील नदी में अधिकतर बाढ़ एबीसीनिया की वर्षा से होती है। जिस साल नील नदी में भारी बाढ़ आती है उस साल हिन्दुस्तान में भी मानसून से अच्छी वर्षा होती है।

७—यदि हिन्दुस्तान में किसी वर्ष वायुभार ऊँचा रहता है तो दूसरे वर्ष वायुभार कम रहता है और वर्षा अच्छी होती है।

छठा अध्याय

सिंचाई

हिन्दुस्तान में बहुत से भाग ऐसे हैं जहाँ काफ़ी पानी नहीं बरसता। बिना सिंचाई के वहाँ मुश्किल से एक फ़सल उग सकती है। कुछ

[illegible] का दृश्य

भागों में तो बिना सिंचाई के कुछ भी फ़सल नहीं उग सकती है।

उत्तरी हिन्दुस्तान के पहाड़ी ज़िलों में तथा सिन्ध और पश्चिमी पंजाब में सिंचाई के पुराने चिन्ह मिलते हैं। यमुना की दो नहरें और कावेरी डेल्टा की नहरें बहुत पहले ही बनाई गई थीं।

केवल बंगाल और आसाम ऐसे प्रान्त हैं जहाँ वर्षा की अधिकता के कारण नहरों की आवश्यकता नहीं है। बिहार-उड़ीसा में भी काफ़ी वर्षा होती है। इसलिए यहाँ भी नहरें कम हैं। सोन नहर से दक्षिणी बिहार में, त्रिवेणी नहर से चम्पारन में और उड़ीसा प्रॉजेक्ट से उड़ीसा में सिंचाई होती है। २०भर मद्रास में भी वर्षा की अधिकता है। केवल मध्य मद्रास की खुश्क ज़मीन सींचने के लिए मॉडले और इरवो नहरें निकाली गई हैं।

सिंचाई की बड़ी बड़ी नहरें आजकल पंजाब,[1] सिन्ध और संयुक्त-प्रान्त[2] में पाई जाती हैं। कुछ प्रसिद्ध नहरों का उल्लेख नीचे किया जाता है:—

बारी द्वाब नहर

रावी नदी के दाहिने किनारे से उस स्थान (मधुपुर) पर निकलती है जहाँ रावी नदी पहाड़ों से बाहर आती है। यह नहर रावी और व्यास नदियों के बीच में गुरुदासपुर, अमृतसर और लाहौर ज़िलों के एक बड़े प्रदेश (२५ लाख एकड़) को सींचती है।

---

[1] पंजाब की नहरें सिक्खों की दूसरी लड़ाई के बाद आरम्भ हुईं। जब वीर सिक्ख-सेना छिन्न भिन्न कर दी गई तब पंजाब में विद्रोह की आशंका थी। इसलिए बेकार सिपाहियों को काम देने के लिए नहरें बनने लगीं।

[2] संयुक्त-प्रान्त की नहरें प्रायः अकाल के समय में खोदी गईं। अकाल-पीड़ित मज़दूरों ने दो-चार मुट्ठी भर अन्न के [illegible] भर खुदाई की। इसलिए ये बहुत सस्ती बन गईं।

सरहिन्द नहर

शिवालिक के पास रूपर स्थान पर सतलज नदी से निकलती है और पटियाला, नाभा, झींद, फरीदकोट रियासतों तथा लुधियाना और फीरोजपुर ज़िलों की ज़मीन को सींचती है।

लोअर चनाब नहर

दुनिया की बड़ी नहरों में से एक है। चनाब नदी से वज़ीराबाद के पास खानकी स्थान पर बाँध बनाकर यह नहर निकाली गई है। इस नहर से २५ लाख एकड़ ज़मीन सींची जाती है।

लोअर झेलम नहर

रसूल नगर के पास झेलम नदी से निकलती है।

अपर चनाब और लोअर बारी द्वाब नहरों को ट्रिपिल प्राजेक्ट भी कहते हैं। इनके निकालने में बड़ी होशियारी से काम लिया गया है। रावी नदी में पुल बनाकर चनाब नदी का पानी दूसरी ओर पहुँचाया गया है। यहाँ इसे लोअर बारी द्वाब नहर कहते हैं। लोअर चनाब नहर में भी पानी की कमी न पड़े इसलिए झेलम नदी का पानी खानकी के पास चनाब नदी में छोड़ दिया गया है।

गंगा-नहर

यह नहर सबसे पहले खोली गई। हरिद्वार के घाट के नीचे यह नहर गंगा के दाहिने किनारे से निकलती है। नहर का ढाल क्रमशः रक्खा गया है। इसलिए मार्ग के नालों और छोटी नदियों को पार करने के लिए कहीं नहर के ऊपर पुल बनाया गया है और नदी का पानी नहर के ऊपर से निकाल दिया गया है। कहीं नदी के ऊपर पुल बनाया गया है और नहर का पानी नदी के ऊपर से लाया गया है। रुड़की के पास सोलानी नदी के ऊपर पुल बाँध कर नहर का पानी दूसरी

है। आगरा-नहर बहुत छोटी है और दिल्ली से ११ मील नीचे ओकला स्थान के पास यमुना के दाहिने किनारे से निकलती है। यह नहर गुड़गाँव, मथुरा और आगरा ज़िलों की ज़मीन को सींचती है।

बेतवा नहर

यह नहर यमुना की सहायक बेतवा नदी के बायें किनारे से निकलती है। यह नहर झाँसी से बारह मील उत्तर से आरम्भ होती है और बुंदेलखंड के जालौन और हमीरपुर ज़िलों को सींचती है।

सारदा नहर

सारदा नदी संयुक्त प्रान्त और नैपाल की सीमा पर बहती है। ब्रह्मदेव के पास इस गहरी नदी में बीस बीस फुट की दूरी पर १६ फौलाद के फाटक लगे हैं। यहीं से दुनिया भर में सब से अधिक लम्बी (शाखाओं समेत ४ हज़ार मील) सारदा नहर निकाली गई है। इसकी नालियाँ १८ हज़ार मील लम्बी हैं। रुहेलखंड और अवध के उपजाऊ प्रदेश की १५ लाख एकड़ ज़मीन इस नहर से सींची जाती है।

दक्खिन की नहरें

गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टा बड़े उपजाऊ हैं। वर्षा कम होने के कारण इधर सिंचाई की बड़ी आवश्यकता थी। इस लिए डेल्टा के पास इन नदियों में बाँध बनाकर सिंचाई का प्रबन्ध किया गया है। कर्नूल-कडापा-नहर तुंगभद्रा नदी से निकलती है। पर सब से अधिक विचित्र नहर पेरियार प्राजेक्ट है। पेरियार नदी ट्रावनकोर राज्य में स्थित थी और पश्चिमी घाट से निकल कर अरब सागर में गिरती थी। पश्चिमी घाट की प्रबल वर्षा से मदुरा के सूखे ज़िले में सिंचाई करने के लिए पेरियार नदी की घाटी में एक विशाल १७० फ़ुट ऊँचा बाँध बाँधा गया। उस पर से एक बड़ी झील हो गई सब [illegible] घाट में एक सुरंग [illegible] के द्वारा वैगाई
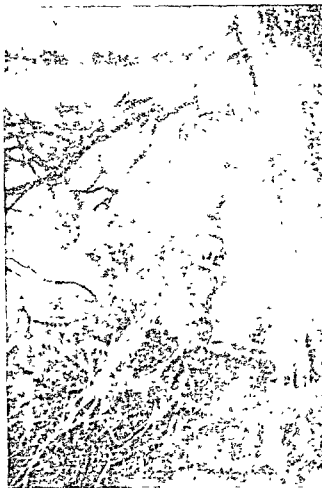
कँटीले जंगल

पंजाब, मध्यभारत, काठियावाड़, मध्यप्रदेश आदि भागों में ४० इंच से भी कम पानी बरसता है। वर्षा की कमी से पेड़ भलीभाँति नहीं उग पाते हैं। पानी की किफायत करने के लिए प्रकृति ने उनका क़द नाटा कर दिया है और उन्हें काँटों का जामा पहना दिया है। इन जंगलों में वास्तव में काँटेदार झाड़ियाँ अधिक हैं। उपयोगी पेड़ों का अभाव है।

घास के प्रदेश

कम वर्षा वाले प्रदेशों में वनों के बीच बीच में घास है।

रेगिस्तानी पौधे

पश्चिमी राजपूताना, सिन्ध, बिलोचिस्तान आदि भागों में प्रतिवर्ष १५ इंच से भी कम वर्षा होती है। इसलिए यहाँ काँटेदार पेड़ और झाड़ियाँ कम हैं। केवल कहीं कहीं लम्बी जड़ वाले और मोटी गूदेदार तनह वाले पौधे मिलते हैं। इनमें पत्तियों के स्थान पर काँटे होते हैं।

पर्वतीय वनस्पति

पहाड़ों पर ऊँचाई के अनुसार भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न प्रकार की वनस्पति है। समुद्र-तल से चार-पाँच हज़ार फुट की ऊँचाई तक उष्ण प्रदेश की वनस्पति है। इससे अधिक ऊँचाई पर ठंढ के कारण देवदारु आदि शीतोष्ण प्रदेश के वन हैं। उनसे ऊपर ढालों पर घास है। १८,००० फुट के ऊपर सब कहीं शाश्वत हिम है।

आठवाँ अध्याय

कृषि

यदि प्रकृति के काम में बाधा न डाली जाती तब तो सारे भारतवर्ष में किसी न किसी तरह के वन-प्रदेश का ही साम्राज्य होता। पुराने समय में भी अब से कहीं अधिक वन प्रदेश था। पर आबादी के बढ़ने से अधिक भोजन की आवश्यकता पड़ी। इसलिए मनुष्यों ने वनों को काट कर खेती के लिए ज़मीन साफ़ कर ली। इस समय जलवायु और ज़मीन के अनुसार भारतवर्ष में तरह तरह की खेती होती है। पर भारतवर्ष की समस्त खेती का क्षेत्रफल प्रायः ३५ करोड़ एकड़ है। खेती ही इस देश का प्रधान पेशा है। प्रायः ९० फ़ी सदी लोग खेती ही की फ़सलें उगा कर अपना निर्वाह करते हैं। अपने देश की मुख्य फ़सलें ये हैं:—

धान

धान का जन्म-स्थान पूर्वी द्वीप-समूह है। पर अपने देश में अति प्राचीन समय से इसकी खेती होती है। धान को बहुत से पानी, सूर्य की गरमी और चिकनी मिट्टी की आवश्यकता होती है। आरम्भ में पौधे का प्रायः ⅔ भाग पानी में डूबा रहता है। इसलिए धान की खेती हिन्दु-

चित्र मय
कपास
आम

चित्र मय भारतवर्ष-उपयोगी पौधे

कपास
मक्का
आम
ज्वार
नारियल

चित्र मय भारतवर्ष-उपयोगी पौधे
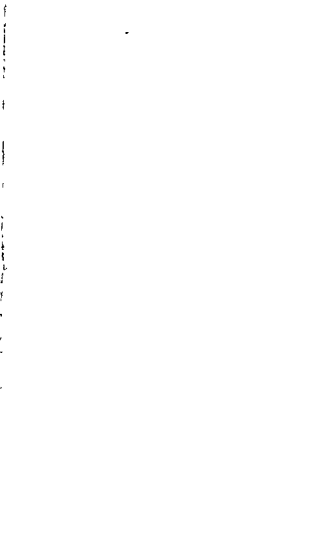
पयाल बिछाने या छप्पर छाने के काम आता है। धान को कूटकर और फटक कर भूसी अलग कर ली जाती है। इस प्रकार साफ़ चावल

निकल आता है। बड़े बड़े कारख़ानों में चावल साफ़ करने का काम कल से किया जाता है।

बंगाल में सबसे अधिक चावल पैदा होता है पर घनी आबादी होने

धान
चाय

के कारण सब का सब चावल वहीं खर्च हो जाता है। ब्रह्मा में बहुत सा चावल फालतू बचता है और दिसावर को भेजा जाता है।

गेहूँ

गेहूँ का पौधा प्रायः धान के पौधे के बराबर होता है। पर गेहूँ को खुश्क और ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है। अधिक नमी में यह सड़ जाता है। इसलिए पंजाब और संयुक्तप्रान्त की कछारी या रेत मिली हुई चिकनी मिट्टी में अच्छा गेहूँ पैदा होता है। गेहूँ को केवल एक-दो सिंचाई की ज़रूरत पड़ती है। यह सिंचाई नहर या कुओं से होती है। मध्य प्रान्त और बम्बई की रेगर या काली मिट्टी में सिंचाई की ज़रूरत नहीं पड़ती है। बरसात के बाद खेत तीन चार बार जोता जाता है। ढेले फोड़ने के लिए पटेला भी चला दिया जाता है। शीतकाल के आरम्भ होने पर बीज बो दिया जाता है। सिंचाई चाहनेवाले खेत में क्यारियाँ बना दी जाती हैं। होली के आस पास दाना पक जाता है और गरमी पड़ने ही काट लिया जाता है। फिर दायँ चला कर भूसे से गेहूँ को अलग कर लेते हैं।

चावल की अपेक्षा गेहूँ कहीं अधिक पुष्टिकारक भोजन होता है। इसीलिए चावल खाने वाले लोगों से गेहूँ खाने वाले (उत्तरी भारत के) लोग अधिक बलवान् होते हैं। पर जिस तरह माँड निकला हुआ चावल अधिक लाभदायक नहीं रहता उसी तरह महीन छना हुआ मैदा भी बलदायक नहीं रहता है।

जौ

जौ के पौधे की जड़ें गेहूँ के पौधे से कम गहरी होती हैं। इसलिए जौ अधिक खुश्की नहीं सह सकता है। जौ अक्सर गेहूँ से पहले पक जाता है। इसलिए संयुक्त-प्रान्त के ग़रीब किसान प्रायः मकई की फ़सल काट कर इसी खेत में जौ बो देते हैं।

चना, मटर और मसूर अक्सर गेहूँ या जौ के साथ मिलाकर बोये जाते हैं। अधिक नमी की ऋतु में किसान लोग ज्वार या बाजरा को बिना काटे ही खुरपी से ज़रा सा गढ़ा करके चना गुल देते हैं। ज्वार या

जौ

बाजरा की फसल कट जाने पर चना तेज़ी से बढ़ आता है। और गेहूँ के साथ काटा जाता है।

इसी रबी की फ़सल के साथ तेल के लिए सरसों, दुआं और अलसी के बीज बो दिये जाते हैं। पर ये चीज़ें गेहूँ से पहले काटी जाती हैं।

मक्का या मकई, मडुआ, ज्वार और बाजरा की फ़सलें वर्षा

आरम्भ होने ही जुलाई में बो दी जाती हैं। सब से पहले मक्का काटी जाती है। पर अगहन मास तक खरीफ की सब फसलें कट जाती हैं। इनके साथ ही किसान लोग उर्द, मूँग और अरहर (दाल के लिए) और तिल (तेल के लिए अथवा खाने के लिए) बो देते हैं। उर्द और मूँग को खरीफ की फसल के साथ ही काटते हैं। तिल एक दो महीने बाद और अरहर को बैशाख में काटते हैं। इस प्रकार अरहर के बड़े और कड़े दाने को पकने में आठ-दस महीने लगते हैं। मेड़ पर अंडी बो दी जाती है। पर इसको तैयार होने में एक वर्ष लग जाता है। इसका तेल कई कामों में आता है। पत्ते रेशम के कीड़ों को खिलाये जाते हैं। रेशम के कीड़ों को जङ्गली पौधों के पत्ते भी खिलाये जाते हैं। पर सर्वोत्तम रेशम शहतूत के पत्ते खिलाने से मिलता है।

ईख

गन्ने को अच्छी ज़मीन, काफ़ी गर्मी और अधिक सिंचाई की ज़रूरत होती है। इसलिए यह अधिकतर (प्रायः २,००० वर्ग मील) संयुक्त-प्रान्त में और कुछ (१,००० वर्गमील) बंगाल और (५०० वर्गमील) पञ्जाब में होता है। गन्ना काट काटकर चैत के महीने में बोया जाता है पर इसको तयार होने में दस-ग्यारह महीने लग जाते हैं। जाड़े के दिनों में गन्नों को कोल्हू के कोल्हू में पेर कर रस निकाल लेते हैं। इस रस को बड़े बड़े कड़ाहों में औटकर गुड़ या शक्कर बना लेते हैं। हर एकड़ में औसत से ५० मन गुड़ पैदा होती है। पर आज-कल इस उपज से काम नहीं चलता है। इसलिए बहुत सी शक्कर जावा, मॉरीशस आदि बाहरी देशों से मँगाई जाती है।

कपास

कपास को गर्म और शुष्क जलवायु अच्छी लगती है। हिन्दुस्तान के जिन भागों में ४० इञ्च से कम पानी बरसता है उन सभी प्रान्तों में

कपास उगती है। सारे हिन्दुस्तान में २ करोड़ एकड़ क्षेत्रफल कपास उगाने के काम आता है। पर दक्खिन की गहरी काली मिट्टी (रेगर) में कपास सबसे अधिक होती है। इस उपजाऊ मिट्टी में नमी बहुत दिनों तक बनी रहती है। पर सिन्ध और गंगा के कछारी मैदान में कपास का पौधा अधिक बड़ा होता है। यहीं सिंचाई करके अधिकतर अमरीकन कपास उगाई जाती है। इस कपास का रेशा देशी कपास के रेशे से अधिक बड़ा होता है।
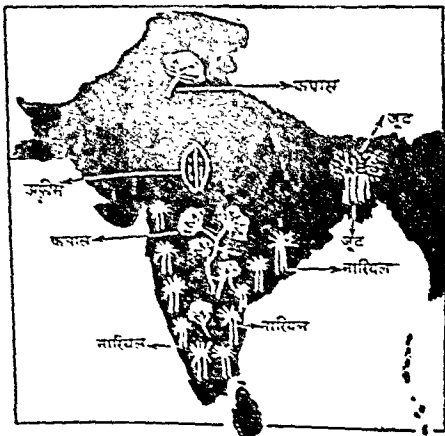
कपास वर्षा के आरम्भ में ही आषाढ़ महीने में बो दी जाती है।

कार्तिक में फूल आते हैं। अगहन या पौष महीने में ढेंट इकट्ठे किये जाते हैं। खेतों में अक्सर चार-पाँच बार चुनाई होती है। कपास को ओट कर बिनौले अलग कर लिये जाते हैं। बिनौले से तेल निकाला जाता है। और सानी जानवरों को खिलाई जाती है। धुनने के बाद रुई कात ली जाती है और धागे से तरह तरह के कपड़े बुने जाते हैं। बहुत सी रुई विदेश भेज दी जाती है और उसके बदले में विलायती कपड़ा मँगाया जाता है। इससे दाम भी अधिक देने पड़ते हैं और देश में बेकारी भी फैलती है।

जूट या पाट

जूट एक पौधे का रेशा है। जूट के पौधे को उष्णार्द्र (गर्म और तर) जलवायु और उपजाऊ कछारी मिट्टी चाहिये। जूट की फसल ज़मीन को शीघ्र ही कमज़ोर कर देती है। इसलिए कछारी मिट्टी पर हर साल बाढ़ के साथ लाई गई नई बारीक मिट्टी की तह पड़ जाने की आवश्यकता होती है। इन कारणों से दुनिया भर में जूट का एक-मात्र प्रदेश गंगा और ब्रह्मपुत्रा की निचली घाटी में, पूर्वी, उत्तरी और दक्षिणी बंगाल और आसाम में स्थित है।

बसन्त-ऋतु की वर्षा के बाद जूट के खेत की जुताई आरम्भ हो जाती है। मार्च, अप्रैल या मई महीने में बीज बो दिया जाता है। जुलाई या अगस्त में फल आने के पहले ही फसल कट जाती है। पौधों को छोटे छोटे गट्ठों में बाँधकर पास के तालाब में गाड़ देते हैं। और प्रायः २१ दिन तक गाड़े रहते हैं। इसके बाद ऊपर की छाल बिलकुल सड़ जाती है और मार मार कर पानी में धोने से साफ़ रेशा निकल आता है। फिर यह रेशा लकड़ी से अलग कर लिया जाता है। छोटे छोटे सौदागर किसानों से जूट मोल लेकर शहरों के बड़े बड़े सौदागरों के हाथ बेच देते हैं। ये लोग जूट को कलकत्ते भेज देते हैं। यहाँ रेशों को

रेंडी
सरसों

तालाबों की अधिकता होने से बंगाल में जूट (पाट) बोने के लिये बड़ी सुविधा है

नील

यह भी एक छोटा पौधा होता है और गंगा की ही घाटी में उगाया जाता है। इसकी पत्तियों को पानी में गला कर नीला रंग तैयार किया जाता है। पर जब से जर्मनी में बनावटी नीला रंग तैयार होने लगा तबसे हिन्दुस्तान में नील की खेती कम हो गई है।

अफ़ीम

यह पोस्ते के पौधे का सूखा हुआ रस है। यह पौधा शीतकाल में बोया [illegible] हाथ के निकट इसमें सफ़ेद फूल आते हैं। फूल आने [illegible] पकने के पहले किसान लोग दोपहर के बाद बाड़ा

नारियल

नारियल का पेड़ सुपारी से कहीं अधिक लम्बा और मोटा होता है। यह भी समुद्र के पास रेतीली ज़मीन में उगता है जहाँ अधिक वर्षा होती है। नारियल को समुद्री नमकीन वायु और तटीय रेतीली मिट्टी विशेष प्रिय है। इसलिए पूर्वी और पश्चिमी तटीय मैदानों और लंका में नारियल बहुत होता है। पर तट से अधिक दूर जाने पर नारियल का पेड़ नहीं

केला

नारियल

मिलता है। हरे फल का रस पिया जाता है। पक्के फल को काट कर खोपड़ा या गिरी निकाल लेते हैं। जिससे तेल तैयार किया जाता है।

मसाले
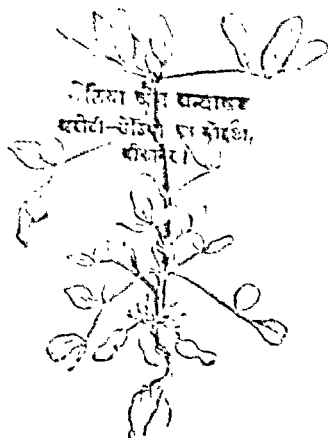
लाल मिर्च प्रायः सब कहीं पैदा होती है। मूँगफली की तरह हल्दी एक चौड़ी पत्तीवाले पौधे की जड़ में लगती है। कालीमिर्च और इलायची मलाबार की पहाड़ियों के ढालों पर उगाई जाती है। जब गुच्छे हरे होते हैं तब मिर्च का रंग काला नहीं होता है। सूखने से ऊपरी छिलका सिकुड़ जाता है और उसका रंग काला पड़ जाता है।

कालीमिर्च

फल

हिन्दुस्तान में केला, सेब, अमरूद आदि तरह तरह के फल बहुत होते हैं। पर इनमें आम सर्वप्रसिद्ध है।

तरकारियाँ

यहाँ आलू, गोभी, मूली, गाजर, लौकी आदि तरकारियाँ अनेक हैं। पर अच्छी खाद मिलने से शहरों के पास ये अधिक उगाई जाती हैं। और माँग अधिक होने से यहीं इनका अच्छा दाम लगता है।

[illegible] का पेड़ और फल

सिनकोना

सिनकोना की छाल को कूट कर कुनैन बनाते हैं। सिनकोना के पेड़ का असली घर दक्षिणी अमेरिका में एंडीज के ऊँचे ढालों पर है। पर

अब से ७० वर्ष पहिले नीलगिरि, मैसूर, ट्रावनकोर और दार्जिलिंग में सिनकोना के पौधे लगाये गये। इन्हीं से देश भर के लिए कुनैन तयार की जाती है।

रबड़

रबड़ एक पेड़ के रस से तैयार की जाती है। यह पेड़ अत्यन्त गर्म और तर जलवायु में उगता है। इसलिए लंका और लोअर (निचले) ब्रह्मा में इसके बग़ीचे लगाये गये हैं।

लाख

यह एक तरह का गोंद है जिसे एक कीड़ा इकट्ठा करता है। छोटा नागपुर और आसाम की जंगली जातियाँ अधिकतर लाख बाहर भेजती हैं। मिर्ज़ापुर में लाख साफ़ करने के कई कारख़ाने हैं।

नवाँ अध्याय

कला-कौशल

कृषि प्रधान देश होने पर भी भारतवर्ष सदा से स्वावलम्बी रहा है। यहाँ आवश्यकताएँ कम थीं। जो आवश्यकताएँ थीं उनकी पूर्ति यहीं हो जाती थी। प्रत्येक गाँव में लुहार खेती के औज़ार और अस्त्र-शस्त्र बनाता था। बढ़ई लकड़ी का काम करता था। कुम्हार घड़े आदि मिट्टी के बरतन तैयार करता था। चमार मरे जानवरों का चमड़ा निकालता था और जूते, ढोल आदि चमड़े का सामान बनाता था। जुलाहा या कोरी कपड़ा बुनता था। दर्जी उसे सीता था और आवश्यकता पड़ने पर रंगरेज़ उसे रंग देता था। सुनार ज़ेवर बनाता था और तेली तेल पेरता था। यही नहीं पर ये तथा इसी तरह के दूसरे काम हज़ारों घराने मिल जुल कर करते थे जिससे यहाँ का माल दूसरे देशों को भी पहुँचता था। पर जब से पश्चिमी देशों में बड़े बड़े कारखाने खुल गये, उनकी सरकारों ने अपने अपने कारखानों की मदद की, जहाज़ों और रेलों ने सस्ते किराये पर वह माल हिन्दुस्तान के बाज़ारों में भरना शुरू कर दिया तब से यहाँ के कारीगरों की दशा बड़ी शोचनीय हो गई है।

बड़े बड़े शहरों में चतुर कारीगर लोग राजा-महाराजा और धनी लोगों

कुम्हार की कारीगरी

के लिए बढ़िया कारीगरी का काम तैयार करते थे। पत्थर का तराशना, लकड़ी का खरादना, हाथी दांत की पच्चीकारी करना, रेशमी कपड़ों पर सोने-चाँदी के तारों से बेल-बूटा बनाना और सूती कपड़ों पर चिकन का काम करना बहुत प्रचलित था। पर पुराने राज्य के नष्ट होने और लोगों में निर्धनता बढ़ने से भोगविलास का सामान तैयार करने वाले

दक्षिण-भारत के बढ़ई अपने सीधे सादे औज़ारों से बढ़िया कारीगरी की चीज़ें तैयार करते हैं

कारीगर एकदम बेकार हो गये। दिल्ली, आगरा, बनारस, मथुरा, ग्वालियर, जैपुर, ढाका, अमृतसर, मुर्शिदाबाद और श्रीनगर आदि शहरों में अब भी पुरानी कारीगरी के कुछ काम होते हैं। बड़े पैमाने पर सामान तैयार करने वाले कारख़ाने हिन्दुस्तान भर में १६ हज़ार से कुछ ही अधिक हैं। ये सब अभी हाल में खोले गये हैं। इन सब कारख़ानों

में लगभग ३० लाख मनुष्य लगे हुए हैं। इन कारखानों में निम्न प्रधान हैं:—

जूट

बंगाल में जूट का घरेलू धन्धा बहुत पुराना है। पर १८५५ ई० म श्रीरामपुर के पास में रिसरा में पहली मिल खुली। पर इस काम में बहुत ही अधिक लाभ हुआ। आजकल ३७ लाख एकड़ ज़मीन जूट उगाने के काम आती है। प्रति एकड़ म औसत से पन्द्रह-बीस मन पाट (जूट) पैदा होता है। जिससे किसान को लगभग १००) मिलते हैं। ब्रह्मपुत्रा का पानी बहुत साफ है। इसलिए इधर के ज़िलों का जूट सर्वोत्तम होता है। गंगा के प्रदेश में पानी मटीला होने से जूट का रंग कुछ पीला होता है और कम चमकीला होता है। पुरनिया ज़िले का बिहारी जूट गँदले पानी में धुलने के कारण बहुत ही घटिया होता है। हाथ या दबाने वाली मशीनों से दबाकर जूट (बेलें) के गट्ठे बाँध लिये जाते हैं और हावड़ा को भेज दिये जाते हैं।

अधिक लाभ होने के कारण कलकत्ते से ३५ मील उत्तर बंसबरिया बाज़ार से लेकर कलकत्ते के ६५ मील दक्षिण बामगंज तक हुगली के किनारे किनारे जूट के ८० बड़े बड़े कारखाने हैं। इन कारखानों में लगभग ३½ लाख मज़दूर काम करते हैं और प्रतिदिन ५ हज़ार टन पक्का माल (बुना हुआ कपड़ा) तैयार होता है।

इस प्रदेश में कारखानों का अड्डा होने के कई कारण हैं:—

(१) समीपवर्ती प्रदेश में कच्चा माल बहुत होता है और जल और स्थल-मार्गों से यहां सुगमता से आ जाता है।

(२) गंगा के अपार जल से कारखाने के काम में सहायता मिलती है।

(३) कोयले की खानें पास हैं। विदेश से मशीनें भी आसानी से आ सकती हैं।

(४) इनको आसाम, मद्रास, उड़ीसा और मध्यप्रान्त से लगातार मजदूर मिलते रहते हैं।

इन कारखानों में प्रति वर्ष ५० करोड़ रुपये का माल तैयार होता है। पर जूट के सब कारखाने अंग्रेज़ों के हाथ में हैं इसलिए लाभ का अधिकतर भाग देश के बाहर चला जाता है।

सूती कपड़ा

सूती कपड़ा बनाने का काम आजकल भी देश के बहुत से भागों में होता है। हाथ के करघे से या तो बहुत मोटा खद्दर या गाढ़ा बुना जाता है अथवा बहुत बारीक और कामदार कपड़ा तैयार किया जाता है। हाथ का बुना हुआ मोटा कपड़ा मिल के कपड़े से अधिक दिन चलता है। इसलिए ग़रीब लोग हाथ के बुने हुए कपड़े को पसन्द करते हैं। असहयोग आन्दोलन के समय से दूसरे पढ़े लिखे देशभक्त हिन्दुस्तानी भी खद्दर पहनने लगे हैं। इससे ग़रीब जुलाहों की दशा कुछ हद तक सुधर गई है। ढाका, बनारस, बुरहानपुर और राजमहेन्द्री में हाथ से बढ़िया कपड़ा बुना जाता है। कानपुर, बम्बई, अहमदाबाद, शोलापुर, बेलगाँव, हुगली, बड़ौदा, इन्दौर, उज्जैन, नागपुर, जबलपुर, मद्रास, बंगलौर और हैदराबाद आदि में बड़े बड़े पुतलीघर हैं। इन पुतलीघरों में लगभग ५ लाख मजदूर काम करते हैं। ये सब शहर कपास पैदा करने वाले प्रदेश के पास हैं। नारायणगंज और श्रीरामपुर (कलकत्ते के पास) ऐसे स्थान हैं जो रुई के प्रदेश से दूर हैं। पर उनमें रुई मँगाने की सुविधा है। पर बम्बई और अहमदाबाद में अनुकूल जलवायु और उपज की सुविधा होने से सारे हिन्दुस्तान का प्रायः ९० फी सदी कपड़ा यहीं बुना जाता है। रुई के प्रायः सभी कारबार की पूँजी और प्रबन्ध हिन्दुस्तानियों के हाथ में है।

रेशम

रेशम बुनने का काम कुछ अधिक धनी लोगों के हाथ में है। ये

ोग संगठित भी हैं। गुजरात, आसाम, मैसूर, पंजाब और काश्मीर में
शम बुनने के प्रधान केन्द्र हैं। हिन्दुस्तान की अपेक्षा ब्रह्मा में अधिक

ास पहना जाता है। बनारस आदि कई शहरों में रेशम पर सोने
ी का काम होता है। मुर्शिदाबाद आदि कुछ शहरों में सूती

कपड़ों पर रेशम की कढ़ाई होती है। आजकल बनावटी विलायती रेशम के आने से देशी कारख़ानों को बड़ा धक्का पहुँच रहा है। फिर भी अहमदाबाद, बेलगाँव, शोलापुर, पूना, धारवार, नासिक, सूरत, काठियावाड़, मांडले, प्रोम, अमरावती, चाँदा, होशंगाबाद, रायपुर, गुजरानवाला, झेलम, जालन्धर, लुधियाना, मुल्तान, पेशावर, रावलपिंडी, बनारस, शाहजहाँपुर, बंगलौर, वारंगल, औरंगाबाद, श्रीनगर, जम्मू, बाँकुड़ा, बर्दवान, हुगली, जलपाईगुड़ी, माल्दा, मुरशिदाबाद, राजशाही, अनन्तपुर बिलारी, कोयम्बटूर, मदुरा, तंजौर, त्रिचनापली, भागलपुर, गया और सम्भलपुर में रेशम के कारख़ाने चल रहे हैं।

ऊनी कपड़ा

ऊनी कपड़ा बहुत थोड़े स्थानों में बुना जाता है। अच्छी ऊन केवल उत्तरी हिन्दुस्तान में और विशेष कर हिमालय के प्रदेश में मिलती है।

कश्मीरी जुलाहे

अधिक गरम भागों में भेड़ के मोटे बाल हो जाते हैं। इसलिए सब से

अच्छे ऊनी शाल दुशाले श्रीनगर (काश्मीर) अमृतसर, लाहौर और मुल्तान आदि शहरों में तयार किये जाते हैं। मोटे देशी कम्बल गड़रिये लोग बहुत से स्थानों में बुन लेते हैं। ऊनी कपड़े बुनने की बड़ी बड़ी मिलें कानपुर और धारीवाल (अमृतसर के पास) में हैं। अन्य मिलें लाहौर, अमृतसर, बम्बई, बंगलौर और कनानोर (मद्रास) में हैं। धारीवाल और कानपुर में कांगड़ा, कमायूं, नैपाल और पूर्वी पंजाब की ऊन आसानी से आ जाती है। बम्बई के कारखानों में खान्देश और दक्खिन की ऊन आती है। बंगलौर की मिल के लिए मैसूर राज्य की ऊन काफी होती है। इनमें लगभग ७००० मनुष्य काम करते हैं।

मिट्टी के बरतन

मिट्टी के बरतन प्रायः सब कहीं बनाये जाते हैं पर अच्छे चिकने और चमकीले बरतन चुनार, खुरजा, पेशावर और मुल्तान आदि शहरों में बनते हैं। ग्वालियर, दिल्ली, जबलपुर और कलकत्ते में यह काम बड़े पैमाने पर होता है। इन सब जगहों में कच्चामाल (चिकनी मिट्टी) पड़ोस में ही मिलता है।

धातु का काम

कुम्हार की तरह लुहार भी बहुत से स्थानों में लोहे का काम करता है। बड़े बड़े शहरों में ताले और ट्रंक बनाये जाते हैं। बाराकर (बंगाल) में बड़े पैमाने पर लोहा गलाने का काम होता। पर लोहे और फ़ौलाद का सब से बड़ा कारखाना (टाटा आयरन एण्ड स्टीलवर्क्स) उड़ीसा और मध्य प्रान्त की सीमा पर जमशेदपुर में है। यह नगर कलकत्ते से १५५ मील पश्चिम की ओर ऐसे स्थान पर बसा है जहाँ कोयला (झरिया से) लोहा, चूना और मैंगनीज़ पास ही मिलता है। अच्छे पानी के लिए स्वर्णरेखा नदी बिल्कुल पास है। मध्यप्रान्त और उड़ीसा से मज़दूर बहुत मिल जाते हैं। यही कारण है कि जहाँ पहले एक छोटा

जाती है। सबाई घास साल भर मिलती है और छोटा नागपुर से लेकर हिमालय के तराई प्रदेश तक उगती है। माइवगंज और बेतिया इस घास के मुख्य केन्द्र हैं। घास के अतिरिक्त पानी और कोयला भी अत्यन्त आवश्यक है। अभी हिन्दुस्तान में देश की माँग के लिए काफ़ी कागज़ नहीं बनता है और बहुत सा (१ लाख टन) कागज़ जर्मनी, ग्रेटब्रिटेन आदि से आता है।

चावल आदि के कारख़ाने

धान कूट कर चावल तैयार करने की बड़ी बड़ी २०० मिलें रंगून, कलकत्ता, चिटगाँव, मद्रास और बम्बई आदि नगरों में हैं। इनमें ६५ हज़ार मनुष्य काम करते हैं। लकड़ी चीरने की मिलें ब्रह्मा में हैं। शक्कर के कारखाने अधिकतर संयुक्त प्रान्त, बिहार, आसाम, बंगाल, मद्रास, और मैसूर में हैं।* कुछ पंजाब और बम्बई प्रान्त में हैं। आटा पीसने की चक्कियाँ उत्तरी भारत में बहुत हैं। तिलहन अधिकतर विदेश भेज दिया जाता है इसलिए तेल पेरने का काम बहुत कम हो गया है। सारे देश में केवल ८०० मिलें हैं। कपास के बिनौलों से तेल निकालने की मिलें कानपुर और अकोला (बरार) में हैं। छापाखाने सभी बड़े बड़े शहरों में बढ़ रहे हैं।

चमड़े के कारख़ाने

जूते के अतिरिक्त तबला, ढोल आदि बाजों और जीन, मियान, मशक आदि अनेक कामों में चमड़े का प्रयोग होता है। हिन्दुस्तान में काफ़ी जानवर हैं जिनके मरने से सदा खाल मिलती रहती है। पर अधिकतर खाल मारे हुए जानवरों से निकाली जाती है। यों तो प्रायः

---

*नैनी, शाहजहाँपुर, कानपुर, गोरखपुर, पूना आदि शहरों में शक्कर के ४१ कारख़ाने हैं।

हैं। पर अधिकतर कारख़ाने लंदन वालों के हाथ में हैं जिससे लाभ उन्हीं को होता है।

रेलवे के कारख़ाने

रेलवे गाड़ियों की मरम्मत के लिए प्रत्येक बड़ी लाइन का कोई न कोई कारख़ाना है जहाँ हज़ारों मनुष्य काम करते हैं। जमालपुर, खड्ग-पुर, झाँसी, लखनऊ, मुगलपुरा (लाहौर), अजमेर और मिंगे (मांडले) में बड़े बड़े कारख़ाने हैं। डब्बे के काम में भी हज़ारों मनुष्यों को जीविका मिलती है। डब्बे का काम कलकत्ता, बम्बई मद्रास, कराची, रंगून, दिल्ली और कानपुर में अधिक होता है।

मोटर और बाइसिकिल

मोटर का काम भी दिनों दिन बढ़ रहा है। इनकी मरम्मत के कारख़ाने प्रायः सभी बड़े शहरों में हैं।

शीशे के कारख़ाने

शीशे के लिए बालू, सोडा, नमक, सिलिका आदि पदार्थों की ज़रूरत पड़ती है। ये चीज़ें हिन्दुस्तान के कई भागों में मिलती हैं। आज कल शीशे के बड़े बड़े कारख़ाने नैनी (इलाहाबाद), बहजोई (मुरादाबाद), लाहौर, अमृतसर, अम्बाला, बम्बई, बेल्गांव, सतारा, हैदराबाद, (दक्षिण), जबलपुर और कलकत्ता में हैं। फ़ीरोज़ाबाद में चूड़ी बनाने का काम होता है। फिर भी शीशे का बहुत सा सामान चेकोस्लो-वेकिया, बेल्जियम, जापान और अमरीका से आता है।

मकान बनाने का काम

हिन्दुस्तान में बड़े बड़े शहरों के अधिकतर मकान पत्थर ईंट और लकड़ी के बने हुए हैं। हिमालय प्रदेश के मकान लकड़ी और पत्थर के बनाये जाते हैं। राजपूताना, दक्षिण के पठार में भी पत्थर का अधिकता

या जहां पथरीली और रेतीली ज़मीन है और वर्षा की कमी है, सिंचाई के भी साधन नहीं है वहां भी आबादी बहुत कम है।
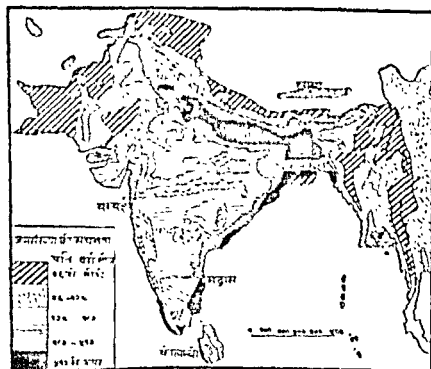
उत्तरी हिन्दुस्तान के लोग आर्य हैं। उनका क़द लम्बा, रंग गोरा और शरीर मज़बूत होता है। दक्षिणी हिन्दुस्तान में प्रायः द्राविड़ लोग रहते हैं। इनका क़द कुछ छोटा और रंग काला होता है। ब्रह्मा आदि पूर्वी भागों के रहने वालों में मंगोल रुधिर की अधिकता है।

धर्म

भारतवर्ष के अधिकांश निवासी (प्रायः २२ करोड़) हिन्दू या आर्य हैं जो वैदिक धर्म के मानने वाले हैं। यह धर्म सब से अधिक पुराना है।

आरम्भ से गुण और कर्म के अनुसार वैदिक धर्मानुयायियों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र केवल चार वर्ण और ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ

और सन्यास चार आश्रम माने जाते हैं। ज्ञान, कर्म और भक्ति द्वारा ईश्वर की उपासना करना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है। हिन्दू धर्म आत्मा को अमर मानता है। जिस तरह मनुष्य पुराने कपड़े को उतार कर नया कपड़ा पहन लेता है उसी तरह हिन्दू-धर्मानुसार एक शरीर के नष्ट होने पर आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेता है। जब हिन्दू धर्म शिथिल होने लगा तब आज से २५०० वर्ष पूर्व महात्मा गौतम बुद्ध ने हिन्दू धर्म के पीछे आये कुसंस्कारों को लेकर उस समय की लोक-भाषा पाली या प्राकृत

आरम्भ से गुण और कर्म के अनुसार वैदिक धर्मानुयायियों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र केवल चार वर्ण और ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ

और सन्यास चार आश्रम माने जाते हैं। ज्ञान, कर्म और भक्ति द्वारा ईश्वर की उपासना करना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है। हिन्दू धर्म आत्मा को अमर मानता है। जिस तरह मनुष्य पुराने कपड़े को उतार कर नया कपड़ा पहन लेता है उसी तरह हिन्दू-धर्मानुसार एक शरीर के नष्ट होने पर आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेता है। जब हिन्दू धर्म जटिल होने लगा तब अब से २५०० वर्ष पूर्व महात्मा गौतम बुद्ध ने हिन्दू धर्म के सीधे सादे मूलतत्वों को लेकर उस समय की लोक-भाषा पाली या प्राकृत

में एक नवीन धर्म का प्रचार किया। बौद्ध धर्म में वर्णव्यवस्था नहीं मानी जाती है और अहिंसा पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। इस लोक-प्रिय धर्म का संसार में प्रचार हुआ। चीन, जापान आदि देशों में इस समय भी बौद्ध धर्म के मानने वाले और किसी धर्म के मानने वालों से संख्या में बढ़े हुए हैं। पर जिस भारतवर्ष ने महात्मा बुद्ध को जन्म दिया वहाँ बौद्ध धर्म प्रायः लुप्त हो गया। भारतवर्ष में केवल १ करोड़ १५ लाख बौद्ध हैं जो अधिकतर ब्रह्मा और लंका में बसे हुए हैं। जैन धर्म प्रायः हिन्दू और बौद्ध धर्म का मिश्रण है। इसके मानने वाले ५० लाख हैं जो अधिकतर पश्चिमी भारत में फैले हुए हैं।

भारतवर्ष का दूसरा बड़ा धर्म इस्लाम है। इस धर्म पर चलने वाले मुसलमान लोग केवल एक ईश्वर को मानते हैं और मुहम्मद साहब को ईश्वर का रसूल (दूत) समझते हैं। सुन्नी लोग हज़रत अबूबकर, उमर और उस्मान को ख़लीफ़ा या मुहम्मद साहब का वली मानते हैं। पर शिया लोग इस बात से इनकार करते हैं। शिया लोग चौथे ख़लीफ़ा अली का बड़ा मान करते हैं और कभी कभी तो उन्हें ईश्वर तुल्य समझते हैं। हिन्दुस्तानी मुसलमानों में सुन्नी लोगों की प्रधानता है। शिया लोग बहुत ही कम हैं और अधिकतर अवध (लखनऊ) में बसे हुए हैं। सारे हिन्दुस्तान में प्रायः ७ करोड़ मुसलमान हैं जो अधिकतर उत्तरी-पश्चिमी हिन्दुस्तान और पूर्वी बंगाल में बसे हुए हैं।

समय के अनुसार हिन्दू धर्म में सुधार करने के लिए गुरु नानक ने सिक्ख धर्म की उत्पत्ति की। इसमें गुरु गोविन्द सिंह ने सिक्खों को सिंह बना दिया। गुरु गोविन्द सिंह के मत को मानने वाले तम्बाकू नहीं पीते हैं और केश, कच्छ, कड़ा, कंघा और कृपाण रखते हैं। उनके धर्म-ग्रन्थ ग्रन्थ-साहब में केवल एक ईश्वर का आदेश है। सिक्ख लोग अधिकतर पंजाब में हैं, उनकी संख्या ३२ लाख है।

पारसी—जब फ़ारस पर मुसलमानी हमला हुआ तब बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया लेकिन कुछ लोगों को अपना पुराना धर्म इतना प्रिय था कि उन्होंने अपना घर छोड़ना पसन्द किया पर धर्म छोड़ना स्वीकार न किया। इसलिए ये लोग बम्बई के पास हिन्दुस्तान में आकर बस गये। इनकी संख्या प्रायः १ लाख है।

ईसाई लोग अधिकतर मद्रास प्रान्त में रहते हैं। मलाबार तट पर पुर्तगालियों के अत्याचार से अधिकतर लोग ईसाई हो गये। दक्षिण में अधिकतर रोमन केथलिक हैं उत्तरी हिन्दुस्तान में प्राटेस्टेन्ट ईसाइयों की संख्या बढ़ रही है। सारे हिन्दुस्तान में आजकल प्रायः ४० लाख ईसाई हैं।

प्रकृति के उपासक—किसी विशेष धर्म को न मानने वाले किन्तु भूत-प्रेतों में विश्वास करने वालों की संख्या ९७ लाख है। ये लोग अधिकतर छोटानागपुर, मध्यप्रान्त, मद्रास और आसाम के पहाड़ी भागों में रहते हैं।

भाषाएँ

हिन्दुस्तान एक बड़ा देश है। बड़े देश में यदि एक भाग से दूसरे भाग को आने जाने की सुविधा न हो, लोग एक दूसरे से अक्सर न मिलें, उनमें अनिवार्य शिक्षा न हो, तो आरम्भ में एक भाषा होने पर भी चिरकाल में अनेक भाषाएँ हो जाती हैं। समय समय पर भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले विदेशी हमला करने वालों के आ जाने से देश की भाषाओं में और भी अधिक भेद हो जाता है। इसीसे हिन्दुस्तान में कई भाषाएँ हैं। सतपुरा पहाड़ के उत्तर में आर्य भाषाएँ और दक्षिण में द्राविड़ भाषाएँ हैं। आर्य भाषाओं की रचना संस्कृत से बिगड़ी हुई शौरसेनी,

कारण कोई बड़ा भेद नहीं पड़ता है। पर उनके उच्चारण में भारी अन्तर

पड़ जाता है। सब प्रकार की हिन्दी बोलने वालों की संख्या प्रायः १४ करोड़ है। हिन्दी समझने वालों की संख्या और भी अधिक है। इसी से

कारण कोई बड़ा भेद नहीं पड़ता है। पर उनके उच्चारण में भारी अन्तर
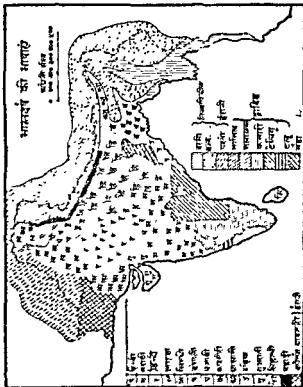
पड़ गया है। सब प्रकार की हिन्दी बोलने वालों की संख्या प्रायः १४ करोड़ है। हिन्दी समझने वालों की संख्या और भी अधिक है। इसी से

सीधी रेखाओं का अभाव है। इस लिपि में गोलाकार और चन्द्राकार मोड़दार रेखाएँ बहुत हैं। दक्षिण की जिन जिन भाषाओं के लिखने में इन पत्तों का प्रयोग हुआ है उन सभी की लिपि में मोड़दार रेखाओं की अधिकता है।

द्राविड़ भाषाएँ

उड़िया भाषा के दक्षिण में मद्रास शहर तक तेलिगू भाषा का प्रदेश है। मध्य प्रान्त के दक्षिणी सिरे पर और हैदराबाद राज्य के पूर्व में भी तेलिगू भाषा बोली जाती है। इस भाषा में विस्तृत साहित्य है। इस भाषा के बोलनेवालों की संख्या दो करोड़ से ऊपर है। तेलिगू भाषा के दक्षिण में न केवल कुमारी अन्तरीप तक वरन् लंका के उत्तरी भाग (जाफना प्रान्त) में भी तामिल भाषा बोली जाती है। तामिल भाषा बड़ी पुरानी है। इसका साहित्य भी महान् है। इसकी लिपि तेलिगू लिपि की तरह देवनागरी लिपि से भिन्न है। तामिलभाषियों की संख्या डेढ़ करोड़ से कुछ ऊपर है। तामिल के पश्चिम में मलाबार तट पर मलायालम भाषा बोली जाती है। यह भाषा वास्तव में तामिल की ही नवीन उपशाखा है। इसका साहित्य काफ़ी बढ़ गया है। यह भाषा ग्रन्थ लिपि में लिखी जाती है जिसमें संस्कृत का सभी साहित्य दक्षिण भारत में लिखा गया है। मलयालम-भाषियों की संख्या प्रायः ६० लाख है। कनारी भाषा मैसूर राज्य और पास वाले पश्चिमी तटीय (बम्बई प्रान्त के दक्षिणी सिरे पर) प्रदेश में बोली जाती है। कनारी साहित्य बहुत पुराना है। इसके बोलने वालों की संख्या १ करोड़ से कुछ ऊपर है।

कनारी और मलायालम भाषाओं के बीच में पश्चिमी तट के कनारा ज़िले में टुल्‌टू भाषा बोली जाती है।

मध्य भारत के पहाड़ी ज़िलों में गोंड आदि कई तरह की भाषाएँ हैं। पर वे लिपिबद्ध नहीं हैं। न उनमें साहित्य ही है।

ग्यारहवाँ अध्याय

भारतवर्ष के प्राकृतिक प्रदेश

किसी देश के राजनैतिक विभाग अक्सर बदलते रहते हैं। पर उसके प्राकृतिक प्रदेशों में परिवर्तन नहीं होता है। जिन भागों की ऊँचाई, भू-रचना, ज़मीन और जल-वायु एक सी होती है वे सब एक ही प्राकृतिक प्रदेश में शामिल किये जाते हैं। इस समानता के कारण उनकी वनस्पति, उपज और भाषा भी एक सी ही होती है। भारतवर्ष में निम्नलिखित प्राकृतिक प्रदेश हैं :—

१—पश्चिमी तट

पश्चिमी घाट का सपाट ढाल पश्चिम की ओर है। इसके नीचे टूटा फूटा निचला तटीय मैदान है। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के दिनों में इस ओर प्रबल वर्षा होती है। ढालों पर सागौन के वन हैं। मैदान में धान की खेती होती है। गोआ के दक्षिण में वर्षा कुछ अधिक है। धान के अतिरिक्त मसाले भी उगाए जाते हैं। औसत आबादी प्रति वर्गमील में ३०० है। यहाँ के लोग अधिकतर मलायालम भाषा बोलते हैं। गोआ के ऊपर उत्तरी भाग की भाषा मराठी है।
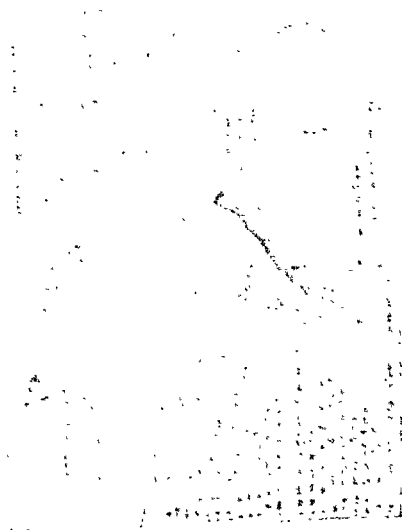
ही यहाँ की प्रधान फ़सल है। कृष्णा नदी से बंगाल तक उत्तरी सरकार में तटीय मैदान कुछ तङ्ग है। अधिकांश वर्षा जून से अक्टूबर तक होती है। इसके उत्तरी भाग में उड़िया और दक्षिणी भाग में तेलिगू बोली जाती है। औसत से प्रति वर्गमील में पाँच छः सौ मनुष्य रहते हैं। कृष्णा नदी के दक्षिण में (कर्नाटक में) लौटती हुई उत्तरी-पूर्वी मानसून से नवम्बर और दिसम्बर के महीनों में थोड़ी सी वर्षा हो जाती है। इसलिए धान के खेतों के लिए सिंचाई की अधिक ज़रूरत पड़ती है। इस भाग की भाषा तामिल है।

३—दक्खिन-प्रदेश

इस प्रदेश में बम्बई और मद्रास प्रान्तों के पठार तथा मैसूर और हैदराबाद के राज्य शामिल हैं। इस प्रदेश में प्रतिवर्ष ४० इंच से कम ही वर्षा होती है। यहाँ की आबादी (हिन्दुस्तान की औसत आबादी १७७ से) भी कम है। दक्खिन का दक्षिणी भाग अधिक ऊँचा और कम आबाद है। यहाँ अधिकतर घास के खुले हुए मैदान हैं। मैसूर के दक्षिण में नीलगिरि की उच्च पहाड़ियाँ हैं। मैसूर की ज़मीन दानेदार चट्टानों के घिसने से बनी है। जहाँ तालाबों से सिंचाई होती है और चावल उगाया जाता है। अधिक उत्तर-पश्चिम में लावा का ऊँचा, उपजाऊ और शुष्क प्रदेश है। यहाँ की काली मिट्टी कपास और ज्वार, बाजरा के लिए बड़ी अच्छी है। इस महाराष्ट्र-प्रदेश की आबादी काफ़ी घनी है।

४—बरार और नागपुर के ऊँचे मैदान

ये मैदान पूर्णा, वार्धा और वैनगंगा की चौड़ी घाटियों से बने हैं। ये मैदान सतपुरा तथा महादेव पर्वत और दक्खिन पठार के बीच में स्थित हैं। इनका पश्चिमी भाग शुष्क है। पर पूर्वी भाग में ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। यहाँ वन भी हैं। इनके पश्चिमी भाग में कपास

और पूर्वी भाग में चावल की फ़सल होती है। पश्चिमी भाग में मराठी और पूर्वी भाग में तेलिगू बोली जाती है। पूर्वी खानदेश और नागपुर को छोड़ कर आबादी कहीं भी घनी नहीं है।

५ बस्तर और उड़ीसा के उच्च प्रदेश

ये प्रदेश पुरानी चट्टानों के बने हैं। अधिकतर ज़मीन समुद्रतल से डेढ़ हज़ार फ़ुट ऊँची है। कहीं कहीं २००० फ़ुट से भी अधिक ऊँची है। महानदी ने इन प्रदेश को दो भागों में बाँट दिया है। साल भर में औसत वर्षा लगभग ५० इंच होती है। अधिकतर प्रदेश वनों से ढका है। इधर होकर कोई रेल नहीं निकली है। अच्छी सड़कों का भी प्रायः अभाव है। इन प्रदेश की औसत आबादी कहीं कहीं प्रति मील में ३६ से भी कम है। यहाँ अधिकतर मूल-निवासी रहते हैं जो पुराने ढङ्ग से खेती करते हैं।

६—छत्तीसगढ़ का मैदान

यह प्रदेश अधिकतर महानदी की ऊपरी घाटी से बना है। इसमें महानदी की मध्यघाटी या सम्भलपुर का मैदान भी शामिल है। बंगाल-नागपुर रेलवे यहाँ होकर हावड़ा को गई है। यहाँ प्रायः ५० इंच की वार्षिक वर्षा होती है। जिन भागों में साल आदि का वन साफ़ कर लिया गया है वहाँ चावल उगाया जाता है।

७—मध्यवर्ती उच्च प्रदेश

यह प्रदेश सतपुरा की प्रधान श्रेणी से आरम्भ होकर छोटानागपुर के पठार तक चला गया है। और समुद्र-तल से प्रायः दो तीन हज़ार फुट ऊँचा है। इसके पश्चिमी सूखे भाग में लावा की धरती है और पूर्वी भाग की ज़मीन पुरानी चट्टानों के घिसने से बनी है जहाँ साल में ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। इन प्रदेश में आबादी कम (प्रायः १०० मनुष्य प्रति वर्ग मील में) है

८—विन्ध्या और अरावली का नम प्रदेश

नर्मदा और सोन नदियों के उत्तर में मध्यभारत का पठार है। विन्ध्याचल इस प्रदेश की प्रधान पर्वत-श्रेणी है। सोन नदी के उत्तर में कैमूर-श्रेणी है। अरावली पर्वत इसकी उत्तरी-पश्चिमी सीमा बनाता है। उत्तर-पूर्व की ओर क्रमशः नीचा होते होते यह पठार गंगा के मैदान में मिल गया है। यह प्रदेश अधिकतर सूखा और उजाड़ है। पर मालवा पठार अधिक ऊँचा और उपजाऊ है। वहाँ की जलवायु भी अच्छी है। गेहूँ, अफीम और कपास की खेती बहुत होती है। वर्षा २० और ४० इंच के बीच में होती है। औसत आबादी प्रति वर्ग मील में प्रायः १२० से कम है।

९—काठियावाड़ और गुजरात

यह कछारी मैदान ताप्ती नदी के किनारे से लेकर थार रेगिस्तान तक चला गया है। इस मैदान के समुद्री तट पर नमकीन दलदल है। काठियावाड़ अधिक सूखा और उजाड़ है। इस प्रदेश के केवल दक्षिणी भाग में हर साल ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। दूसरे भागों में ४० और २० इंच के बीच में वर्षा होती है। बड़े पेड़ों का अभाव* है

---

*जब द्वारका के लिए रेल नहीं बनी थी तब लेखक ने इस प्रदेश में पैदल यात्रा की थी। एक गाँव से कुछ दूर चलने पर पानी बरसने लगा। दूसरा गाँव ७ मील की दूरी पर था। बैलगाड़ी रामबाँस को छोड़ कर मार्ग में कोई ऐसा पेड़ न था जहाँ वर्षा से बचाव होता। पानी पड़ने से ज़मीन बहुत ही अधिक फिसलनी हो गई थी। फिसलने से बचने के लिए पैर ज़ोर से जमाना पड़ता था। पर ज़ोर से पैर रखने से कहीं न कोई मजबूत काँटा चुभ जाता था। जामनगर पहुँचते पहुँचते [illegible]

सिंचाई होती है। बिहार में ५० इंच से ऊपर वर्षा होती है। और हवा में इतना सील रहता है कि गेहूँ के स्थान पर धान की फसल होती है पूर्व की ओर जन-संख्या भी बढ़ती जाती है। पश्चिमी भाग की औसत आबादी प्रति वर्ग मील में ५०० है पूर्वी भाग में ७०० है।

(ग) डेल्टा या पूर्वी मैदान—इस प्रदेश में अधिकतर बंगाल और आसाम की सुरमा-घाटी शामिल है। इस आर्द्र (गीले) और निचले प्रदेश के धरातल को नदियाँ प्रायः सदा बनाती और बिगाड़ती रहती हैं। इस प्रदेश का तापक्रम, (हवा का) सील और वर्षापात बहुत ऊँचा है। यहाँ पाला कभी नहीं पड़ता है सुन्दर वन को छोड़ कर और सब भाग धान की खेती के लिए साफ़ कर लिये गये हैं। सारे हिन्दुस्तान का ½ चावल यहाँ होता है। ब्रह्मपुत्रा के पूर्व में जूट अधिक होता है। प्रति वर्गमील में औसत आबादी ६५० है, किसी किसी ज़िले में एक हज़ार से भी अधिक है।

१२—आसाम-घाटी

आसाम की पहाड़ियों और हिमालय के बीच में ब्रह्मपुत्रा की घाटी का देश गंगा के डेल्टा से ही मिलता जुलता है। यह प्रदेश डेल्टा से कुछ कम गरम है, पर गीला (आर्द्र) अधिक है। शीत काल में यहाँ घना कुहरा रहता है। बहुत सा भाग वन से ढका है। इसी से आबादी कम है। पर जैसे जैसे वन साफ़ हो रहा है वैसे वैसे आबादी बढ़ती जाती है। पश्चिम में औसत आबादी प्रति वर्ग मील में प्रायः २०० है पर पूर्व में १०० से कम है।

१३—उत्तरी-पूर्वी पर्वतीय प्रदेश

यह प्रदेश आसामघाटी के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसमें गारो, खासी और जयन्तिया तथा पूर्वी सीमाप्रान्त की पहाड़ें, नागा, मनीपुर और लुशाई पहाड़ियाँ शामिल हैं। ब्रह्मा की ओर पहाड़ियाँ आ इस

प्रदेश में शामिल हैं। इस प्रदेश में प्रबल वर्षा होती है। पहाड़ियाँ सघन वनों से ढकी हुई हैं। २५० फुट से अधिक ऊँचाई पर देवदारु के पेड़ हैं। कई पहाड़ियों की चोटियों पर घास के खुले हुए मैदान हैं। यहाँ के पहाड़ी लोग वन को जलाकर खेती के लिए ज़मीन साफ़ कर लेते हैं। दो चार फसल उगाने के बाद जब उपज कम होने लगती है तो वे वन के दूसरे भाग में इसी प्रकार जलाकर खेती करते हैं। इस प्रकार की चलताऊ खेती को झूम कहते हैं। इस झूम की खेती से आबादी कहीं भी अधिक नहीं है। अधिकांश प्रदेश में प्रति वर्ग मील में ५० से कम मनुष्य रहते हैं।

१४ हिमालय की तलहटी

हिमालय पर्वत और खुश्क मैदान के बीच में तलहटी का प्रदेश सिन्ध नदी से आसाम तक चला गया है। गंगा नदी इसको दो भागों में बाँटती है।

(क) जिस स्थान पर गंगा पहाड़ से बाहर निकलती है उस स्थान से आसाम तक तलहटी का प्रदेश प्रायः तीस चालीस मील चौड़ा है। पहाड़ के पास होने से इस प्रदेश की वर्षा पास वाले मैदान से सब कहीं अधिक है। तापक्रम कुछ कम है। दल दल से भरी हुई तराई घास से ढकी है। पश्चिम की ओर भाबर के पथरीले प्रदेश में साल का वन है। जनसंख्या सब कहीं प्रति वर्ग मील में २०० से अधिक है।

(ख) गंगा से पश्चिम की ओर सिन्ध नदी तक तलहटी कुछ अधिक खुश्क है। यहाँ तराई का अभाव है। भू-रचना के अनुसार साल्टरेंज और अधिक पश्चिम का पहाड़ी भाग कुछ भिन्न है। पश्चिमी तलहटी अधिक उपजाऊ है। दलदली तराई न होने से यहाँ पहाड़ के ढालों तक लोग बस गये हैं। औसत आबादी प्रति वर्ग मील में सब कहीं २०० से अधिक है।

१५—हिमालय का प्रदेश

यह भी दो भागों में बँटा हुआ है।

(क) पूर्वी हिमालय में आसाम से नैपाल की पश्चिमी सीमा तक सब कहीं दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से प्रबल वर्षा होती है। दार्जिलिंग में १०२ इंच वर्षा होती है। ६५०० फुट की ऊँचाई तक पहाड़ी ढाल उष्ण प्रदेश के वन से ढँके हुए हैं। ६५०० फुट से ११५०० फुट की ऊँचाई तक शीतोष्ण प्रदेश के पेड़ हैं। ११५०० फुट से अधिक ऊपर अल्पायन (तुषाररहित बर्फीला) प्रदेश का कटिबन्ध है। जन संख्या बहुत कम है।

(ख) पश्चिमी हिमालय में जटिल पर्वत-मालायें हैं। इन्हीं में काश्मीर राज्य शामिल है। इस ओर वर्षा कम है। तापक्रम भी नीचा है। इसलिए ५००० फुट की ऊँचाई पर ही शीतोष्ण प्रदेश की वनस्पति आरम्भ हो जाती है। दूसरे वनस्पति कटिबन्ध भी कम ऊँचाई पर आरम्भ होते हैं जनसंख्या और भी कम है।

१६—उत्तरी-पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश

कुर्रम घाटी इस प्रदेश को दो भागों में बाँटती है।

(क) कुर्रम घाटी के उत्तर का प्रदेश हिमालय का ही सिलसिला है। वर्षा कम होती है। यह वर्षा प्रायः सरदी के दिनों में होती है। इस प्रदेश की वनस्पति पश्चिमी हिमालय की वनस्पति के ही समान है। पेशावर ज़िले को छोड़कर जनसंख्या प्रति वर्ग मील में कहीं भी १०० से अधिक नहीं है।

(ख) कुर्रम घाटी के दक्षिण में बिलोचिस्तान के पठार के अतिरिक्त सुलेमान पर्वत का कुछ भाग शामिल है। सब का सब प्रदेश बहुत ही शुष्क है। शीतकाल की तूफ़ानी वर्षा का भी यहाँ अभाव है। ऊँचे पर्वतों को छोड़ कर ठीक ठीक वन कहीं नहीं है। जनसंख्या बहुत ही कम है। बिलोचिस्तान के पश्चिम में औसत से प्रतिवर्ग मील में केवल एक मनुष्य रहता है। केवल क्वेटा—सिलीब के अच्छे भागों में प्रति वर्गमील की आबादी ३६ है।

१७ लंका के प्राकृतिक प्रदेश

(क) लंका का उत्तरी मैदान—जाफना से दक्षिणी भाग तक फैला है। यह मैदान चपटा और शुष्क है। इस भाग की मिट्टी में चूना अधिक है। यहाँ अधिकतर तामिल किसान रहते हैं।

(ख) तटीय मैदान—नीचा और समशीतोष्ण है। वर्षा अच्छी होती है। पूर्वी भाग में अधिकतर वर्षा शीतकाल में होती है। दक्षिणी-पश्चिमी भाग में ग्रीष्म में वर्षा होती है।

(ग) मध्यवर्ती पहाड़—पुरानी चट्टानों के बने हुए हैं। प्रबल वर्षा होने के कारण ये घने वनों से ढके हुए हैं। वन को साफ़ करके चाय, रबड़ और नारियल के बगीचे लगाये गये हैं। इसी भाग की आबादी भी घनी है।

१८ ब्रह्मा के प्राकृतिक प्रदेश

(क) अराकान और टनासिरम का तटीय प्रदेश—बहुत ही तर (आर्द्र) पहाड़ी और कम आबाद है।

(ख) उत्तरी पहाड़ियाँ—पर भी बहुत वर्षा होती है। सघन वन अधिक हैं और आबादी कम है।

(ग) शान-प्लेटो—यह पठार पुरानी चट्टानों का बना हुआ है। पानी काफ़ी बरसता है। आबादी कम है।

(घ) इरावदी की निचली घाटी—इरावदी का कछारी मैदान बड़ा उपजाऊ है। प्रबल वर्षा होने से मैदान में धान की खेती होती है। पहाड़ियों के ढालों पर सघन वन हैं। मैदान में कुछ घनी आबादी है।

(ङ) मध्यवर्ती शुष्क प्रदेश—मांडले के आस पास चारों ओर प्रायः १०० मील की दूरी तक मैदान शुष्क है। सिंचाई द्वारा खेती होती है। ज़मीन प्रायः उपजाऊ है। जल वायु अच्छी होने से आबादी भी घनी है।

भारतवर्ष के
राजनैतिक विभाग

सिकम
भूटान
आसाम
श्याम
लंका
प्रान्त
देशी राज्य
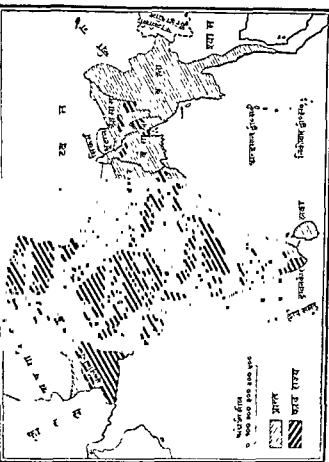
बारहवाँ अध्याय

बिलोचिस्तान

यह देश फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान, सिन्ध और अरब सागर से घिरा हुआ है। मध्यवर्ती बिलोचिस्तान में पहाड़ियाँ उत्तर से दक्षिण को गई हैं। मुंज अन्तरीप के निकट समुद्र के पास वे बिल्कुल छिप गई हैं। यह पहाड़ियाँ सुलेमान पर्वत की ही शाखाएँ हैं जो इस प्रदेश में रीढ़ के समान स्थित हैं। पश्चिमी बिलोचिस्तान में पहाड़ियाँ बहुत हैं। मध्य श्रेणी से निकलने के बाद ये समुद्र-तट के समानान्तर चलती हैं। अन्त में वे या तो समुद्र में लुप्त हो जाती हैं या दक्षिणी फ़ारस के मैदान में नष्ट हो जाती हैं अथवा फ़ारस के पहाड़ों से मिल जाती हैं। पूर्वी बिलोचिस्तान में (जो हरनाई घाटी के पूर्व में स्थित है) पहाड़ियों की गति पश्चिम पूर्व को है। अन्त में ये कुछ उत्तर की ओर मुड़कर सुलेमान की प्रधान श्रेणी से मिल गई हैं।

इस प्रदेश को हम चार भागों में बाँट सकते हैं—

(१) उत्तर-पूर्व में विशाल कच्छी या कछारी मैदान है। यहाँ वर्षा का प्रायः अभाव है और साल में ८ महीने खूब गरमी पड़ती है। पर जहाँ तहाँ पहाड़ी धाराओं के पास यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। समीप

यहाँ पहाड़ी फ़िरक़ों की बस्तियाँ भी यहीं हैं। कन्दहार गान्धार पुरानी राजधानी थी।

(२) इस विशाल कच्छी मैदान के पश्चिम में पहाड़ी प्रदेश है। इसी पठार में बरूही फ़िरक़े रहते हैं। क्वेटा के उत्तर पूर्व में ज़रगन नाम की सर्वोच्च चोटी समुद्र तल से १२००० फुट ऊँची है। शाल या क्वेटा* ५६०० फुट ऊँचा है। कलात की ऊँची घाटी (६८०० फुट) पर खान का अधिकार है। लास-बेला समुद्र तट पर निचला मैदान है।

बरूही पठार की पर्वत-श्रेणियाँ जगह जगह पर टूटी हुई हैं। इन्हीं में होकर कुछ पहाड़ी धाराओं ने अपना मार्ग निकाला। इस प्रकार बरूही पठार इन दर्रों के ज़रिये से कछारी मैदान से जुड़ा हुआ है। उत्तर में बोलन दर्रा ६० मील लम्बा है और क्वेटा और पिशीन के लिए रास्ता बनाता है। दक्षिण में मूला दर्रा ८० मील लम्बा है और कलात और ख़ारान के लिए रास्ता खोलता है। दोनों रास्ते तंग पथरीली घाटियों में स्थित हैं पर अब उनमें तोप गाड़ियों के चलने योग्य सड़क बना दी गई है।

(३) बरूही पठार के पश्चिम में बलोच पठार है। समुद्र तट से साठ सत्तर मील तक ज़मीन धीरे धीरे ऊँची होती जाती है। इसकी ऊँचाई प्रायः ५०० फ़ुट है। पर अधिक आगे बढ़ने पर एक दम डेढ़ दो हज़ार फ़ुट की चढ़ाई है। यही पहाड़ियाँ हेलमन्द के प्रवाह-प्रदेश और अरब सागर के बीच में जल-विभाजक बनाती हैं। बलोच पठार के पहाड़ बरूही पठार के पहाड़ों से कम ऊँचे हैं। बलोच पठार का सब से ऊँचा पहाड़ सियाहन कोह है जो केवल ७००० फुट ऊँचा है। इसी प्रदेश में समुद्र-तट और प्रथम पर्वत-श्रेणी के बीच में मकरान स्थित है। मक-
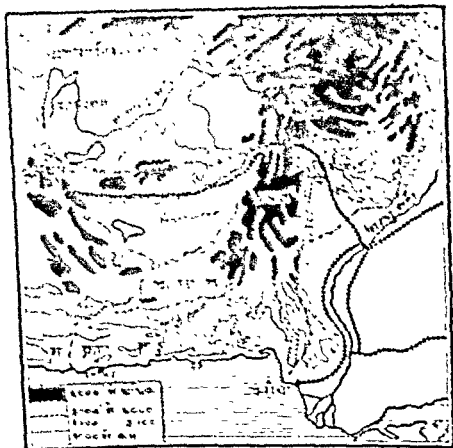
* क्वेटा का पुराना नाम शालकोट था

पहली घाटी कुछ हरी भरी है जहाँ छुहारों के बगीचे, गाँव और क़िले हैं। सिन्ध और फ़ारस के बीच में यह एक प्राकृतिक मार्ग है।

(४) हल्मन्द-घाटी से २०० मील दक्षिण में दूसरी पर्वत-श्रेणी तक बिलोचिस्तान का रेगिस्तान फैला हुआ है। इस रेगिस्तान का ढाल उत्तर-पश्चिम की ओर है। पर इसमें हामून नाम के कई विशाल आब्वात हैं जिसमें समीपवर्ती पहाड़ी धाराओं का पानी समा जाता है। उत्तर-पश्चिम में हामूने-जिरह में शैला नदी का पानी आता है। बीच में मशाखेल नदी अपना पानी हामूने-मशाखेल में गिराती है। उत्तर-पूर्व में हामून लोरा में पिशीन का पानी आता है। इन आब्वातों के पास खेती के योग्य बहुत ज़मीन है। क्योंकि पानी धरातल से दूर नहीं है। रेगिस्तान की दाहिनी ओर खारान प्रदेश है जहाँ बेदो नदी से सिंचाई होती है। यहीं पर फ़ारस, हिन्दुस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के व्यापार का मेल होता है। यह प्रदेश नौशेरवाली सरदार के अधीन था जो कलात के ख़ान का कट्टर दुश्मन था। यह प्रदेश प्रायः १३० मील लम्बा और ५० मील चौड़ा है। इसका उत्तरी-पूर्वी भाग खेती के योग्य है। शेष रेतीला उजाड़ है।

हामूने-लोरा के उत्तर-पूर्व में चागई प्रदेश है। यहाँ ऊँट, बकरियों और गधों के लिए कटीली झाड़ियाँ और घास बहुत हैं। १८८८ ई० में इसे काबुल के अमीर ने अपने राज्य में मिला लिया था। फिर पीछे से यह भाग कलात के ख़ान को लौटा दिया गया।

अधिक पूर्व में पठार के सिरे पर नुश्की है। यहाँ चरवाहों की कुछ बस्तियाँ हैं।

इस प्रकार बिलोचिस्तान शुष्क पहाड़ों और उजाड़ घाटियों का प्रदेश है। कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर ने जब दुनिया के अच्छे भाग बना लिये तो बचा हुआ रद्दी मसाला से बिलोचिस्तान को बनाया। यहाँ पानी के बहाव के मार्गों में ही खेती होती है। ऊपरी भागों पर ऊँट, गधे और बकरे चरते हैं। अधिकांश प्रदेश बिल्कुल उजाड़ है। बिलोचिस्तान में समुद्र

हिन्दुस्तान के किसान

अ र ब सा ग र
कर्क रेखा
अंग्रेज़ी मील

भारतवर्ष राजनैतिक

तेरहवाँ अध्याय

सीमाप्रान्त

अगर हम डेरा गाज़ीखाँ के सामने सुलेमान पहाड़ के पश्चिमी सिरे से ठीक पश्चिम की ओर एक लकीर क्वेटा तक खींचें तो उस लकीर के दक्षिण में बलोच और उत्तर में पठान जातियाँ मिलेंगी। इस प्रकार सफ़ेद कोह और सुलेमान का प्रदेश पठानों का देश है। इस प्रदेश की पूर्वी सीमा सिन्ध नदी और पश्चिमी सीमा अफ़गानिस्तान है। इसके उत्तर में काश्मीर और कुँभार नदी है।

यह लम्बा प्रदेश बहुत ही ऊँचा नीचा है। यहाँ उजाड़, पथरीली पहाड़ियाँ और गहरी घाटियाँ हैं। कहीं कहीं पहाड़ी नदियाँ हैं। किसी किसी पहाड़ी के सपाट ढाल या नदी के मोड़ पर कछारी धरती में एक आध खेत है। यहाँ के रास्ते बड़े भयानक हैं। इस प्रदेश में कुर्रम, ज़ोब, काबुल तथा उसकी सहायक चित्राल, स्वात और पन्जकोरा नदियाँ हैं।

पश्तो या पख़्तो पठानों की भाषा है। कोमल कन्धारी बोली पश्तो नाम से पुकारी जाती। पेशावर घाटी की कर्णकटु भाषा को पख़्तो कहते हैं। अटक प्रदेश की उत्तरी रेखा ही पश्तो को पख़्तो से जुदा करती है। यह भाषा संस्कृत, प्राकृत और अरबी-फ़ारसी के मिश्रण से बनी है।
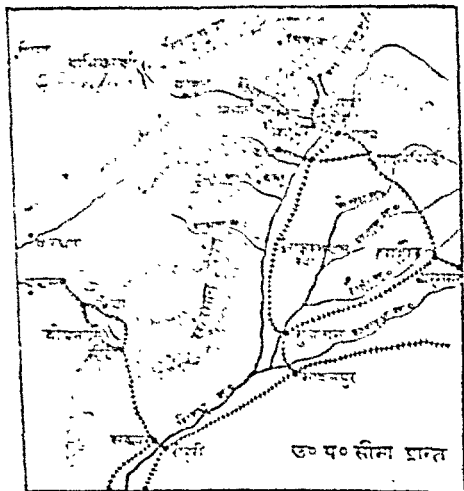
है। इस प्रकार अतिथि सत्कार करना इनका तीसरा धर्म है। ये लोग बदला लेना कभी नहीं भूलते हैं। अंग्रेज़ी फ़ौज में जहाँ दूसरे सिपाही शादी विवाह के लिए छुट्टी लेते हैं वहाँ पठान सिपाही अपने शत्रु से बदला लेने के लिए छुट्टी लेते हैं।

पठान लोग अधिकतर गड़ेरिए या चरवाहे होते हैं। कुछ पोविन्दा लोग तिजारत भी करते हैं। इनके घर क़िलेनुमा होते हैं। इनके गाँव कई भागों या कंडियों में बँटे होते हैं। प्रत्येक कंडी में किसी ख़ास मेल या ख़ान्दान के लोग रहते हैं। हर एक कंडी का प्रबन्ध करने के लिए एक मालिक होता है। हर एक कंडी में एक जमात या मस्जिद भी होती है। इसकी देख भाल मुल्ला के हाथ में रहती है। मस्जिद के पास ही हुजरा या सभाभवन होता है। दर्शक या यात्री लोग यहीं ठहरते हैं। गाँव की सभा भी यहीं होती है। महत्व की बातें इसी सभा या जीरगाह में तय होती हैं। ख़ान या क़िरके का मालिक सभापति बनता है। अधिकतर पठान कट्टर सुन्नी हैं। केवल तुरी, कुछ बंगश और ओरकजई लोग शिया हैं।

उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त भारतवर्ष का प्राय: सब से छोटा प्रान्त है। इसकी लम्बाई प्राय: ४०० मील और औसत चौड़ाई सौ डेढ़ सौ मील है। इसका क्षेत्रफल ३८००० वर्ग मील है। इस प्रान्त का केवल १३००० वर्ग मील प्रदेश सीधे ब्रिटिश शासन में है। शेष २५००० वर्ग मील पर भिन्न भिन्न अर्द्ध स्वतन्त्र फ़िरक़ों का अधिकार है। भीतरी प्रबन्ध में ये लोग स्वतन्त्र हैं। बाहरी मामलों में ये भारत सरकार के अधीन हैं। ब्रिटिश प्रदेश पाँच (हज़ारा, पेशावर, कोहाट, बन्नू और डेराइस्माईलख़ाँ) ज़िलों में बँटा हुआ है। इन ज़िलों की पश्चिमी सीमा प्राय: ६०० मील लम्बी है। इसी सीमा के बाद सीमा प्रान्तीय जातियों का प्रदेश है। इन फ़िरक़ों पर चीफ़ कमिश्नर का अधिकार सीधा नहीं है। इन लोगों पर वह स्वात, दीर, चित्राल, ख़ैबर, कुर्रम और उत्तरी-दक्षिणी

सिन्ध नदी को पार करके कोहाट और हाँगू होती हुई थाल को गई है। थाल नगर कुर्रमघाटी के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। एक तीसरी लाइन कालाबाग में सिन्ध नदी को पार करके पहाड़ के ढाल पर बन्नू शहर

को गई है। सैनिक दृष्टि से खैबर-रेलवे बड़े महत्व की है। यह रेलवे जमरूद (पेशावर से १० मील आगे) से लंडीखाना तक जाती है। इसकी समस्त लम्बाई केवल २७ मील है। पर रेल निकालने के लिए इसी २७ मील में ३२ सुरंग बनाने पड़े। खैबर दर्रे को पार कर के इसने हिन्दुस्तानी रेल को अफगानिस्तान तक पहुँचा दिया है। जमरूद से पास-पोर्ट देखे जाते हैं। बिना पासपोर्ट के कोई यात्री जमरूद के आगे नहीं
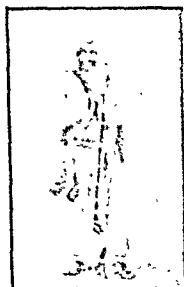
बसे पाता है। इनके सिवा और भी कई सड़कों का विचार हो रहा है।

इस देश में कई फ़िरक़ों का निवास है:—

यूसुफ़ज़ई

यूसुफ़ज़ई लोग पेशावर ज़िले और पास वाले स्वाधीन प्रदेश में रहते हैं। ये लोग प्राचीन गान्धारियों की सन्तान हैं। पहले ये पेशावर घाटी में ही रहते थे। पाँचवीं सदी में कुछ लोग यहाँ से चलकर हल्मन्द की घाटी में जा बसे और गोर के अफ़ग़ानों में हिलमिल गये। यूसुफ़ज़ई लोग सुडौल किसान होते हैं। ये हँसमुख और स्वाभिमानी होते हैं। ये लोग अपने तीन हज़ार वर्ष पहिले गुजरात से चल कर यहाँ (काबुल और कन्धार से [illegible]) आ बसे। कुछ लोग महाबन पहाड़ के ढालों पर बस गये। कुछ लोग हज़ारा ज़िले में चले गये। सुल्तानपुर, मानसेहरा और [illegible]ाबाद में इनके वंशज लोग अब भी मिलते हैं। जिस तरह से ये लोग [illegible] इसी तरह के लोग [illegible] भी [illegible] [illegible] हैं।

[illegible]

[illegible]

पेशावर का बाजार

उतमनख़ैल

इनका देश स्वात, पंजकोरा स्वात और अम्बहर नदियों के बीच में स्थित है। सीमा प्रान्त में स्वात नदी के दोनों ओर इनकी बस्तियाँ हैं। इनका देश सब जगह अत्यन्त दुर्गम है। पहाड़ियों पर पगडंडियों को छोड़कर अच्छे मार्गों का अभाव है। गहरी और तेज़ स्वात नदी को पार करने के लिए सिर्फ़ दो चार जगह पर रस्से के पुल हैं। इन लोगों का बदन गठीला है। पर इनकी स्वाधीनता का कारण केवल इनका दुर्गम प्रदेश है। अधिक उत्तर की ओर बाजौर और दीर में प्राचीन गूजरों के वंशज युसुफ़ज़ई लोग रहते हैं।

पर सीमाप्रान्त के उत्तरी भाग में सबसे बड़ी रियासत चित्राल है। यह गिलगित के पश्चिम में है। हिन्दूकुश पहाड़ इसे अफ़ग़ानिस्तान के काफ़िरिस्तान प्रान्त से अलग करता है। यह देश ख़ास तौर से पहाड़ी है। यहाँ बहुत सी ऊँची बर्फ़ीली पहाड़ियाँ और उजाड़ पहाड़ हैं। खेती के योग्य ज़मीन यहाँ बहुत ही कम है। घाटियाँ बहुत ही तंग और समुद्र तल से मील डेढ़ मील ऊँची हैं। जलवायु ऊँचाई के अनुसार भिन्न है। एक मील की ऊँचाई पर शीतकाल का तापक्रम १२° फ़ारेनहाइट रहता है पर गर्मी में १०० अंश हो जाता है। यहाँ भोजन की इतनी कमी है कि एक भी मोटा आदमी नज़र नहीं आता है। जिस नदी से इस प्रदेश की सिंचाई होती है वह हिन्दूकुश के एक हिमागार से निकलती है। उत्तरी भाग में इस नदी को यारख़ून, मस्तूज या चित्राल नाम से पुकारते हैं। दक्षिणी भाग में यही नदी कुँआर नदी कहलाती है और जलालाबाद के पास काबुल नदी से मिल जाती है। इसे पार करने के लिए रस्सी के कई पुल हैं।

दक्षिणी मैदान और उत्तरी मैदान के बीच में ४०० मील चौड़ा [illegible] रहा है। इसमें [illegible]०० मील चित्राल में स्थित है। इस पहाड़ [illegible] की आबादी [illegible] चित्राल [illegible]

सब के सब सुखी हैं। जब एक मेहतर (यहाँ का राजा मेहतर कहलाता है) गद्दी पर बैठता है तो वह खून की नदी बहाने पर ही सफल हो पाता है। भाई भाई को और पिता पुत्र को मार डालने में कुछ भी नहीं झिझकता है।

मोहमन्द

ये लोग दो भागों में बँटे हुए हैं। कुछ (मैदानी) मोहमन्द पेशावर के मैदान में रहते हैं। बार (पहाड़ी) मोहमन्द प्राचीन गान्धार की पहाड़ियों पर बस गये जहाँ वे अब भी पाये जाते हैं। इन का देश काबुल नदी के कुछ दक्षिण से शुरू होकर उत्तर में बाजोर तक चला गया है। इसकी पूर्वी सीमा पेशावर है। पश्चिम में स्वात नदी है। मोहमन्द प्रदेश प्रायः सब कहीं डरावना और उजाड़ है। गर्मी की ऋतु में पानी की कमी से सख्त तकलीफ होती है। जहाँ कहीं ज़मीन में पानी पास ही मिलता है वहीं क़िलेनुमा गाँव हैं। मोहमन्द प्रदेश में कुछ अनाज, घास, लकड़ी ही मुख्य उपज है। यहाँ से रस्सी, चटाई, शहद, लकड़ी का कोयला और ढोर बाहर भेजे जाते हैं। पर मोहमन्द प्रदेश में होकर चित्राल, कुनार और लग़मान के लट्ठे, बाजौर का लोहा, तीर और स्वात का मोम, घी, चमड़ा और चावल हिन्दुस्तान पहुँचता है। नमक, शक्कर तम्बाकू, कपड़ा, काग़ज़, साबुन, चाय, सुई और दूसरा पक्का माल इधर आता है। गर्मी के दिनों में लट्ठों या मशकों की सहायता से काबुल नदी में बड़ी तेज़ी से व्यापार होता है।

मोहमन्द प्रदेश पहाड़ी अवश्य है पर यहाँ के पहाड़ दुर्गम नहीं हैं। इसी से यहाँ कई सड़कें हैं। पेशावर से डक्का को जाने वाली सड़क सब से अधिक प्रसिद्ध है।

अफ़्रीदी

अफ़्रीदियों का ज़िरका बहुत बड़ा है। ये लोग पेशावर ज़िले के दक्षिण-पश्चिम में सफ़ेद कोह के पूर्वी ढालों पर बसे हुए हैं।

थाल से पाराचिनार तक अच्छी सड़क है। पाराचिनार से पेशावर-कोतल केवल १५ मील पश्चिम में है। इसकी ऊँचाई ९२०० फुट है। इसके बाद शुतुर्गर्दन या ऊँट की गर्दन का दर्रा है जो ११९०० फुट ऊँचा है। इसको पार करने पर लोगर-घाटी काबुल को चली गई है। यह रास्ता गरमी में ही कुछ समय के लिए खुला रहता है।

बंगश लोगों में अधिकतर अरबी खून है। ये लोग शिया हैं। पश्चिमी बंगश बड़ी बड़ी दाढ़ी रखते हैं। पर पूर्वी बंगश अपनी दाढ़ी कटाये रहते हैं। दोनों ही खेती का काम करते हैं: कुछ लोग व्यापारी हैं। ये लोग अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं।

वज़ीरी

वज़ीरिस्तान का पहाड़ी प्रदेश उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त के दक्षिणी भाग से मिला हुआ है। और १४० मील तक सीमा बनाता है। डेराइस्माईलखाँ के पश्चिम में गोमल दर्रे से कोहाट ज़िले तक वज़ीरिस्तान का प्रदेश सीमा प्रान्त से मिला हुआ है। वज़ीरिस्तान के पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में अफ़ग़ानिस्तान है। इसके उत्तर पूर्व और पूर्व में सीमा प्रान्त के कुर्रम, कोहाट, बन्नू और डेराइस्माईलखाँ के ज़िले हैं। इसके दक्षिण में बिलोचिस्तान है।

वज़ीरिस्तान का क्षेत्रफल प्रायः ५,००० वर्ग मील है। इसका आकार एक समानान्तर चतुर्भुज के समान है। प्रदेश में कई नदियों की घाटियाँ हैं जो पश्चिम से पूर्व को बहती हैं और अपने मार्ग में संकुचित मैदान बनाती हैं इसके बीच में छोटे बड़े सभी तरह के पहाड़ों की गाँठ है जहाँ से नदियों को पानी मिलता है। इसके दक्षिण में एक बड़ा पठार है।

वज़ीरिस्तान की दो मुख्य नदियाँ टोची और गोमल हैं। टोची नदी बन्नू ज़िले से अफ़ग़ानिस्तान के बिरमल ज़िले के लिए रास्ता बनाती है। गोमल नदी हिन्दुस्तान के दराजात और ज़ोब ज़िलों को मिलाती है और हिन्दुस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के बीच में एक प्रधान मार्ग बनाती है। पौविन्दा व्यापारी इसी रास्ते से आया जाया करते हैं।

	सिन्ध के उस पार बसने वाले उतमानज़ई, मद्दखेल, अमाज़ई, हसनज़ई, अकाजई और इस पार वाले चगरज़ई।
दीर, स्वात और चित्राल का पोलिटिकल एजेंट।	यूसुफज़ई, सीमा प्रान्त के अकोज़ई, ममरानीज़ई बाजोरी, चित्राली।
पेशावर का डिप्टी कमिश्नर।	यूसुफज़ई—सिन्ध के उस पार वाले चगरज़ई, खुदूखेल, धमला वाला, समचैज़ई सिन्ध के इस पार वाले उतमानज़ई, उतमानखेल, मोहमन्द, गद्दून मुलेखाल। अफ्रीदी—जनकोर और कन्दार के आदमखेल।
खैबर का पोलिटिकल एजेन्ट।	आदमखेल के सिवा समस्त अफ्रीदी, मुल्लागोरी, मोहमन्द-शिलमानी, शिनवारी।
कोहाट का डिप्टी कमिश्नर।	मसूज़ई को छोड़ कर सारे ओरकज़ई। अफ्रीदी—आदमखेल, बंगश।
कुर्रम का पोलिटिकल एजेन्ट।	तुरी। ओरकज़ई—मसूज़ई, चमकनी।
बन्नू का डिप्टी कमीश्नर।	बन्नूची।
टोची का पोलिटिकल एजेन्ट।	दवारी। वज़ीरी—दरवशखेल।
वाना का पोलिटिकल एजेन्ट।	वज़ीर—महसूद।
डेराइस्माइलखाँ का डिप्टी कमिश्नर।	गाज़ा।

भागों में प्रधान श्रेणियाँ बहुत ही पास पास हैं। इसलिए उनके
में तंग घाटियाँ हैं। पर काश्मीर में ये श्रेणियाँ कुछ दूर दूर हो

एक कश्मीरी और कालीन

दूरीस्य इनके बीच में चौड़ी घाटियाँ, सुन्दर झीलें और हिमागार
हैं। अगर हम पंजाब के मैदान से काश्मीर में प्रवेश करें तो सब से

थी जिसके सूखने से यह प्रायः समतल मैदान बन गया। यहाँ झेलम नदी में ६० मील तक नावें चल सकती हैं। यह घाटी चारों ओर ऊँचे और बर्फ़ीले पहाड़ों से घिरी हुई है। इसके उत्तर में हिमालय की प्रधान श्रेणी है जो यहाँ ज़ास्कर श्रेणी कहलाती है। यह श्रेणी सिन्ध नदी के मोड़ के पास नंगा पर्वत से दक्षिण-पूर्व की ओर चली गई है। यही श्रेणी सिन्ध की ऊपरी घाटी को झेलम की घाटी से अलग करती है। ज़ास्कर या प्रधान हिमालय की श्रेणी के उत्तर में सिन्ध की घाटी बड़ी विकराल है। सिन्ध नदी उत्तर में कराकोरम और दक्षिण में हिमालय से घिरी हुई है। कराकोरम पर्वत की सर्वोच्च चोटी माउंट गाडविन आस्टेन २८,२५० फ़ुट ऊँची है। इसका नीचे से नीचा दर्रा भी १८,००० फ़ुट ऊँचा है। यहीं पर कई विशाल हिमागार हैं। यह प्रदेश बहुत ही ऊँचा, ठंढा और उजाड़ है और तिब्बत के पठार से मिलता जुलता है। शायक और गिलगिट नदियाँ इस प्रदेश का बर्फ़ीला पानी सिन्ध नदी में ले आती हैं। सिन्ध नदी इस प्रदेश के एक भाग में १७,००० फुट और दूसरे निचले भाग में ४,००० फ़ुट की ऊँचाई पर बहती है। नदी के दोनों किनारों पर कहीं कहीं दो तीन मील ऊँची पहाड़ी दीवारें हैं।

जलवायु

ऊँचाई के कारण गरमी का सब कहीं अभाव है ग्रीष्मकाल अत्यन्त मनोहर होता है। पर शीतकाल में विकराल जाड़ा पड़ता है। उत्तरी घाटियों और हिमाच्छादित चोटियों से ठंडी हवा नीचे खिसक आती है और ठंडक बढ़ा देती है। दक्षिणी घाटियों में कुछ कम जाड़ा पड़ता है फिर भी झीलें कुछ कुछ जम जाती हैं। वर्षा कम होती है। वर्षा की यहाँ दो ऋतु हैं। गरमी में जून से सितम्बर तक और सरदी में दिसम्बर से अप्रैल तक पानी बरसता है। भीतर की ओर वर्षा की मात्रा और भी कम है। लेह के आस पास वर्षा और हिमपात दोनों की मात्रा

के गेस भाग में स्थित है जहाँ पर पंजाब से आने वाला मार्ग उतर की

झेलम नदी और श्रीनगर

ओर जाके कुल ८८३ फीट के मार्ग से मिलता है। यह नगर

बाढ़ आ जाती है। नगर के पास ही विशाल वुलर झील है। आना जाना अधिकतर नाव के द्वारा होता है तरकारी आदि की बिक्री भी नावों पर ही होती है। ज़मीन क़ीमती होने से झील में टट्टी बना कर मिट्टी छिड़क दी जाती है। इन्हीं चलताऊ खेतों पर ककड़ी और तरकारी भी उगा ली जाती है। कभी कभी इन खेतों की चोरी भी हो जाती है। यह शहर बहुत पुराना है पर कभी कभी भूचाल आने से अधिकतर मकान लकड़ी के बने हुए हैं। पहले यहाँ शाल दुशाले बहुत बनते थे। आज कल यहाँ रेशम का एक बड़ा कारख़ाना भी है। जिसमें बिजली से काम होता है।

जम्मू नगर बाहरी हिमालय के ढाल पर चनाब नदी की एक सहायक तावी नदी पर बसा है। काश्मीर में केवल एक यही नगर रेल का स्टेशन है। शीतकाल में महाराजा साहब यहीं रहते हैं। यहाँ से एक सुन्दर सड़क बानाहाल और इस्लामाबाद होकर श्री नगर को गई है। इस्लामाबाद तक ही झेलम में नाव चल सकती है।

लेह नगर ११,५०० फ़ुट की ऊँचाई पर सिन्ध घाटी में बसा हुआ है। यह नगर लद्दाख की राजधानी है। यहीं से करा-कोरम दर्रे में होकर चीनी तुर्किस्तान को मार्ग जाता है।

गिलगिट नगर इसी नाम की नदी पर बसा है और ऊपरी सिन्ध के आगे हिन्दूकुश के मार्ग की रखवाली करता है।

इतिहास

काश्मीर का इतिहास बहुत पुराना है १४ वीं शताब्दी मे यहाँ मुसल्मानी हमला आरम्भ हुआ। १५८६ ई० में अकबर ने इसे मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया। मुग़ल राज्य के नष्ट होने पर काश्मीर में अफ़ग़ानों का अत्याचार रहा। पर रंजीत सिंह ने शीघ्र ही अफ़ग़ानों को मार भगाया। रंजीत सिंह के मरने पर सिक्खों और अंग्रेज़ों में युद्ध छिड़

गया। सिक्खों की पहली लड़ाई के बाद ७५ लाख रुपये में काश्मीर का राज्य महाराजा गुलाब सिंह को इस शर्त पर दिया गया कि वह दूसरी लड़ाई में सिक्खों का साथ न दे। उनके बाद इस वंश ने लद्दाख-प्रदेश

[illegible] बहुत ही मजबूत कपड़ा बुनती है

जीत लिया गया। इस समय काश्मीर में गिलगित आदि कई छोटे छोटे भाग शामिल हैं। काश्मीर की [illegible] की नयी जन-संख्या सुमार-

मान है। यह शासन डोगरे राजपूतों के हाथ में है। उत्तर-पूर्व की ओर कुछ थोड़े लोग बसते हैं।

चम्बा

काश्मीर के पूर्व में चम्बा रियासत है जो लाहौर के कमिश्नर के अधिकार में है। यह पहाड़ी प्रदेश २००० फुट से लेकर २१००० फुट तक ऊँचा है। इसलिए केवल निचले भागों में ग्रीष्म में अधिक गर्मी पड़ती है। शेष भागों की जलवायु मध्यम अथवा अत्यन्त शीत है। धान, मकई, दाल, बाजरा आदि फसलें काश्मीर के ही समान हैं। कुछ भागों में चाय और अफ़ीम भी होती है। यहाँ के ढोर छोटे होते हैं। भेड़ बकरी बहुत हैं। चम्बा शहर ही इस राज्य की राजधानी है। यहाँ कई सुन्दर मन्दिर हैं।

शिमला की पहाड़ी रियासतें

शिमला की पहाड़ी रियासतें एक ओर जालंधर और अम्बाला ज़िलों और दूसरी ओर देहरादून और टेहरी के बीच में स्थित है। यह प्रदेश अम्बाला के मैदान से आरम्भ होकर हिमालय की मध्यवर्ती श्रेणी तक फैला हुआ है। इसके पश्चिमी भाग का पानी व्यास और सतलज नदियों में जाता है। पूर्वी भाग का पानी यमुना नदी में आता है।

पन्द्रहवाँ अध्याय

नेपाल

नैपाल (क्षेत्रफल ५६००० वर्ग मील, जन संख्या ५६,००,०००) का राज्य प्राय: ५२० मील लम्बा और १०० मील चौड़ा है। यह राज

[illegible]

[illegible]

८० [illegible] से ८८ पूर्वी देशान्तर और २६ ३० से ३० १२ उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। यह राज्य उत्तर में तिब्बत, दक्षिण में

कुमाऊँ, दक्षिण में संयुक्त प्रान्त और बिहार, पूर्व में दार्जिलिंग और सिक्कम से घिरा हुआ है। नेपाल के धुर दक्षिण में तराई है। अधिक उत्तर में हिमालय की श्रेणियाँ और मध्यवर्ती घाटियाँ शामिल हैं। यहाँ की पर्वत-श्रेणियों को बहुत घाटियों ने तोड़ दिया है। पश्चिम में प्रधान नदी घाघरा है। इसी की सहायक काली नदी नेपाल राज्य को संयुक्त प्रान्त से अलग करती है। धौलागिरि घाघरा की घाटी को गंडक की घाटी से अलग करता है। गंडक नदी नेपाल के मध्य भाग में होकर बहती है। सात सहायक नदियों के कारण इस नदी को सप्तगंडकी भी कहते हैं। पूर्वी नेपाल की प्रधान नदी कोसी या सप्तकोसी है। कोसी और गंडक के ही बीच में हिमालय की सब से ऊँची चोटी माउंट* एवरेस्ट स्थित है। नेपाल और सिक्कम की सीमा पर किंचिंजिंगा पर्वत है। जो कोसी की घाटी को तिब्बत की घाटी से अलग करता है। नेपाल की घाटियाँ उपजाऊ और आबाद हैं। पर ये घाटियाँ बहुत ही तंग हैं। केवल काठमाडू की घाटी २० मील लम्बी, १५ मील चौड़ी और समुद्रतल से प्रायः एक मील ऊँची है। इस प्रकार यह घाटी बहुत ही छोटे पैमाने पर काश्मीर-घाटी से मिलती जुलती है।

* एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने का प्रयत्न कई बार किया गया। पर इसमें [illegible] २९,००२ फुट की ऊँचाई [illegible] २८,००० फुट की ऊँचाई तक [illegible]

जलवायु

नैपाल की तराई तथा दो तीन हज़ार फ़ुट ऊँचे ढालों की जलवायु अच्छी नहीं है। वर्षा और गरमी की अधिकता से यहाँ ज्वर बहुत फैलता है। वर्षा प्राय: सब कहीं अधिक है। पश्चिमी भागों की अपेक्षा पूर्वी भागों में अधिक वर्षा होती है। काठमांडू की औसत सालाना वर्षा ६० इंच है। पर ऊँचे भागों की जलवायु बड़ी अच्छी और स्वास्थ्य-कर है।

उपज

नैपाल की साधारण उपज धान है। खेती अधिकतर हाथ[1] से ही खोदकर होती है। कुछ कुछ गेहूँ, जौ और जई की खेती भी होती है। जई घोड़ों को खिलाई जाती है। हिमालय के ढालों पर साल अमैना आदि उपयोगी पेड़ों के वन हैं इसी प्रदेश में भाबर घास भी होती है जो रस्सी और काग़ज़ बनाने के लिए काम आती है। बाँस से यहाँ तरह तरह की चीज़ें बनती हैं।

व्यापार

नैपाल में खेती ही प्रधान पेशा है। घरेलू काम के लिए मोटा सूती और ऊनी कपड़ा बुन लिया जाता है। नेवार लोग बरतन बनाने, लकड़ी खरादने और मिस्त्री का काम करते हैं। नैपाली लोग अनाज दाल, तिल्हन और (काग़ज़ बनाने के लिए) सबाई घास हिन्दुस्तान

[1] ऊँचे नाल और ऊँचे ढ [illegible]

में से आते हैं। और बदले में सूती कपड़े[1], पीतल, और लोहे के सामान नमक और शक्कर अपने यहाँ से जाते हैं।

नगर

नेपाल के तीन बड़े बड़े नगर घाटी में बसे हैं। काठमांडू शहर देश की उपजाऊ घाटी में बागमती (गंडक की सहायक) के किनारे बसा हुआ है। यही नगर नेपाल की वर्तमान राजधानी है। यह नगर बहुत ही साफ़ और सुन्दर है। अधिकतर मकान लकड़ी के बने होने के कारण इसका नाम काठमांडू (काष्ठ-मंडप) पड़ गया। यहाँ मन्दिरों की भरमार है। शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ पशुपति जी का प्रसिद्ध मेला होता है। हिन्दुस्तान से यहाँ पहुँचने के लिये रक्सौल जाना पड़ता है। नेपाली सीमा के पास रक्सौल बंगाल नार्थ-वेस्टर्न रेलवे का अन्तिम स्टेशन है। हम गोरखपुर या पटना, मोतिहारी और सिगौली होकर रक्सौल पहुँच सकते हैं। रक्सौल के आगे २५ मील तक नैपाली रेल है। दूसरे २५ मील में मोटर चलते हैं। इसके बाद अन्तिम तीस मील पैदल तय करने पड़ते हैं। अन्तिम यात्रा में चढ़ाई बड़ी विकट है। सरकारी सामान बिजली के तार पर भेजा जाता है। दो मील दक्षिण की ओर पुरानी राजधानी पाटन नगर है। दोनों ही नगरों में

---

[1] आजकल नैपाल में कपड़े का प्रचार ज़ोरों से हो रहा है सूती और ऊनी कपड़ा हाथ की कलों और करघों से बहुत ही सुन्दर और साफ़ निकलता है। [illegible] नदी के ठीक किनारे राजधानी से लगभग दो मील की दूरी पर बना है [illegible]

सुन्दर मन्दिर और भवन हैं। चार मील दक्षिण-पूर्व की ओर आदगाँव है। नैपाली तराई के पश्चिमी भाग में कपिलवस्तु के भग्नावशेष हैं।

[illegible]

[illegible]

पर इस लड़ाई के बाद गुरखा और अंग्रेजों में बराबर मित्रता बनी रही। इसी से गुरखा सिपाही भी अंग्रेज़ी फ़ौज में भरती होते रहे हैं। गुरखा

काठमांडू का आद घाट

लोगों की वीरता जगत्प्रसिद्ध है। नैपाली लोग प्रायः सभी हिन्दू हैं। केवल कुछ लोग बौद्ध हैं। नैपाली लोग बड़े ही स्वतन्त्रता-प्रेमी होते हैं। इसी से वे अपने यहाँ विदेशियों का आना पसंद नहीं करते हैं और न उनके सुभीते के लिए अच्छी सड़कें बनाते हैं। नैपाल का शासन वहाँ के प्रधान मन्त्री के हाथ में रहता है।

सिकम

सिकम (क्षेत्रफल ३,००० वर्ग मील, जनसंख्या ९०,०००) का राज्य नैपाल के पूर्व में स्थित है। सिकम के उत्तरपूर्व में तिब्बत और दक्षिण में दार्जिलिंग है। तिब्बत के लोग सिकम को देंजोंग (धान का प्रदेश) और सिकमवासियों को रोंगपा (घाटी में बसने वाले) कहते हैं। सबका सब सिकम हिमालय की बाहरी श्रेणी और मध्यवर्ती श्रेणी के

नेपाल-भूटान और सिकम
ति ब्ब त
ने पा ल
भू टा न
ब्रह्मपुत्र नदी
गौरी शंकर
माउंट एवरेस्ट
पटना
इलाहाबाद
मुजफ्फरपुर
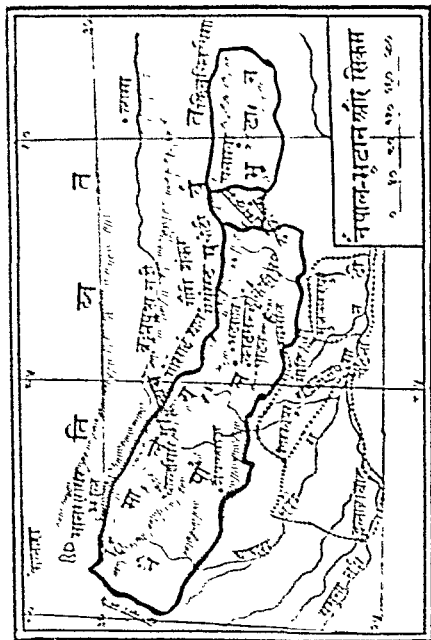
बीच में स्थित है। दक्षिणी भाग समुद्र तल से केवल एक हज़ार से लेकर पाँच हज़ार फुट तक ऊँचा है। पर उत्तरी भाग एक दम १७ हज़ार फुट ऊँचा हो गया है। वर्षा अधिक होती है। वार्षिक वर्षा १०० इंच से ऊपर होती है। तापक्रम ऊँचाई के अनुसार है। पाँच हज़ार फुट तक उष्ण-कटिबन्ध की गरमी पड़ती है। ५ हज़ार से १२ हज़ार फुट तक शीतोष्ण कटिबन्ध का मध्यम तापक्रम रहता है। इसके आगे कड़ाके का जाड़ा पड़ता है और पेड़ों का अभाव है। ऊँचाई के अनुसार वनस्पति भी भिन्न भिन्न हैं। वैसे यहाँ विषुवतरेखा और ध्रुव के बीच की सभी तरह की वनस्पति मिलती है। मकई, धान, गेहूँ और जौ यहाँ की प्रधान फसलें हैं। बग़ीचों में केला, नारंगी और दूसरे फल उगते हैं। ढोर, भेड़ और याक यहाँ के पालतू जानवर हैं। यहाँ के महाराजा के महल तुमलोंग और गंगटोक में बने हैं। पर अँग्रेज़ी रेज़ीडेन्ट गंगटोक में रहता है।

भूटान

भूटान (क्षेत्रफल २०,००० वर्गमील, जनसंख्या ३,००,०००) का देश हिमालय की मध्यवर्ती श्रेणी और पूर्वी बंगाल और आसाम के बीच में स्थित है। पूर्व में ८८ देशान्तर से लेकर पश्चिम में ९२ देशान्तर तक भूटान की लम्बाई प्रायः १९० मील है। यह सब का सब देश तंग घाटियों और ऊँचे पर्वतों का प्रदेश है। आने जाने के मार्ग अत्यन्त दुर्गम हैं। यहाँ की जलवायु और उपज सिक्किम की-सी ही है। मकई ७,००० फुट की ऊँचाई तक होती है। धान, गेहूँ, सरसों और जौ भी उगाये जाते हैं। पर सबसे अधिक आमदनी दारचीनी से होती है। ढ़ालेदार खेतों में सिंचाई की ज़रूरत होती है। पर ग़रीब भूटानी लोग सिंचाई पर अधिक नहीं ख़र्च कर सकते हैं। कुछ रेशम भी तयार किया जाता है। भूटान से लकड़ी, नारंगी, मोम और ऊन हिन्दुस्तान को आती है। विलायती कपड़ा और पान, तम्बाकू यहाँ पहुँचते हैं।

इतिहास

भूटानी लोग अधिकतर बौद्ध हैं। ये लोग देवलोक या लामा, पुजारी और किसान हैं। १७७२ ई० में जब भूटानी लोगों ने कूचबिहार पर हमला किया तब से इनका अंग्रेज़ों से सम्पर्क हुआ। १८६५ ई० भूटान के साथ एक सन्धि हुई तब से भूटानी लोगों को ५,००,००० रु० वार्षिक मिलने लगे। १९१० ई० से भूटान को १ लाख रु० सालाना मिलता है। लेकिन बाहरी मामलों में उन्हें ब्रिटिश सरकार की सम्मति के अनुसार काम करना पड़ता है। शीतकाल में पुनखा यहाँ की राजधानी रहती है। ताशीछुद्ज़ोंग गर्मी में राजधानी रहती है। आने जाने के मार्ग दुर्गम हैं।

सोलहवाँ अध्याय

आसाम-प्रान्त

आसाम-प्रान्त (६२,५०० वर्ग मील, जन-संख्या ८८ लाख) हिन्दुस्तान की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर स्थित है। इस प्रान्त के उत्तर में भूटान और हिमालय के वे दुर्गम पहाड़ी ढाल हैं जहाँ भूटिया, आका, दाफ्ला, मीरी, अबोर और मिश्मी जातियाँ रहती हैं। इसके दक्षिण-पूर्व की पहाड़ियाँ ब्रह्माप्रान्त को अलग करती हैं। आसाम के पश्चिम में बंगाल का मिथला प्रान्त है। इस प्रकार आसाम के केवल एक ओर मैदान और तीन ओर पहाड़ हैं।

प्राकृतिक विभाग

आसाम-प्रान्त तीन प्रधान प्राकृतिक विभागों में बँटा हुआ है:—

१—उत्तर में ब्रह्मपुत्रा की घाटी।

२—बीच में गारो खासी आदि पहाड़ियाँ।

३—दक्षिण में सुरमा-घाटी।

१—आसाम-प्रान्त में ब्रह्मपुत्रा की घाटी

यह घाटी पूर्व में सदिया से आरम्भ होकर पश्चिम में ग्वालपाड़ा ज़िले के धुबरी नगर तक चली गई है। यह घाटी प्राय. ५०० मील लम्बी

ढके हुए दलदल हैं। ब्रह्मपुत्र की अक्सर कई धारायें हो जाती हैं; फिर ये धारायें मिलकर एक हो जाती हैं। पर नदी की गहराई काफ़ी है और डेल्टा से डिब्रूगढ़ तक नदी में स्टीमर चलते हैं। किनारों के पास की कछारी

धरती बड़ी उपजाऊ है और धान की फसलें उगाने के काम आती हैं। धान के खेतों के ऊपर पहाड़ी ढालों पर चाय के बग़ीचे लगे हुए हैं।

२—आसाम की मध्यवर्ती पहाड़ियाँ

ये पहाड़ियाँ ब्रह्मपुत्र की घाटी को सुरमा-घाटी से अलग करती हैं। गारो पहाड़ी पश्चिमी सिरे पर है। कुछ चोटियों को छोड़ कर गारो की औसत ऊँचाई प्रायः २,००० फ़ुट है। यह पहाड़ी और इसकी घाटियाँ घने वनों से ढकी हुई हैं। जहाँ गारो लोगों ने वनों को जलाकर क्षणिक खेत बना लिये हैं वहाँ खुले भाग हैं। गारो के पूर्व में और आसाम-पर्वत-श्रेणी के मध्य भाग में खासी और जयन्तिया-पहाड़ियाँ हैं। आसाम-श्रेणी का यही सब से ऊँचा भाग है क्योंकि अधिक पूर्व में नागा पहाड़ नीचा है। खासी और जयन्तिया पहाड़ियों का आकार पठार के समान है। इनका अधिकतर भाग घास के [illegible] प्रदेश है। बहुत

आसाम की नमी और बदली हिन्दुस्तान भर में मशहूर है। यहीं चेरापूँजी में दुनिया भर में अधिक (प्रायः ५०० इंच) वर्षा होती है। कम वर्षा वाले भागों (मनीपुर और ब्रह्मपुत्रा-घाटी) में भी ७० इंच से कम पानी नहीं बरसता है। सितम्बर के अन्त में आसाम में मानसूनी वर्षा बन्द हो जाती है और फर्वरी तक वर्षा का प्रायः अभाव रहता है। इस प्रकार आसाम में एक छोटी शीत-ऋतु और दूसरी लम्बी वर्षा ऋतु होती है। शुष्क ग्रीष्म-ऋतु का अभाव है। यहाँ सर्दी-गर्मी सभी ऋतुओं में तूफान आते हैं और कभी कभी भयानक भूचालों का भी दौरा हो जाता है।

उपज

ब्रह्मपुत्रा और सुरमा की घाटियों में सब से बड़ी फसल धान की होती है। चावल ही यहाँ के लोगों का मुख्य भोजन है। कुछ खेतों में दाल, जूट और रेंडी भी उगाते हैं। रेंडी के बीज से तेल निकाला जाता है पर पत्तियाँ रेशम के कीड़ों को खिलाई जाती हैं जिनसे अंडी या रेंडी का मोटा और मज़बूत रेशम तैयार किया जाता है।

पहाड़ियों पर चावल के अतिरिक्त आलू और कपास की भी खेती होती है। पर अधिकतर पहाड़ी लोगों में झूम की खेती की चाल है। झूम की खेती इस प्रकार होती है:—किसी पहाड़ी ढाल का वन काटकर साफ कर लिया जाता है। पेड़ जला दिये जाते हैं। इसी राखवाली धरती में चावल, कपास आदि के बीज बो दिये जाते हैं। कुछ वर्षों के बाद फसलें कमज़ोर होने लगती हैं। तब पहाड़ी लोग दूसरी जगह जाकर इसी तरह की खेती करते हैं। पहाड़ी ढालों और कुछ मैदानों में चाय बहुत है। आसामी लोग मज़दूरी करना पसन्द नहीं करते हैं। इस लिए चाय के बगीचों में काम करने के लिए गोरे पूँजीपतियों ने दूसरे दूसरे सूबों से मजदूर मँगाये हैं। सिलहट के पास पहाड़ी ढालों पर नारंगियों के सुन्दर पेड़ हैं जहाँ से हर साल प्रायः एक लाख मन स्वादिष्ट नारंगियाँ हिन्दुस्तान को भेजी जाती हैं। वनों की लकड़ी नाव और

रंग बनाने के काम आती है । लाख बाहर भेज दी जाती है । आसाम के वनों में जंगली हाथी भी बहुत हैं । जिन मुहालों में हाथी मिलते हैं उनका हर साल सरकारी नीलाम होता है । इसके सिवा हर नये पकड़े हाथी पर सरकार को १००) रु० मिलता है ।

खनिज

कोयला, पत्थर और मिट्टी का तेल आसाम की मुख्य खनिज हैं । खनिज का प्रधान केन्द्र उत्तरी-पूर्वी आसाम में (नागा पहाड़ के पास) डिगबोई नगर है । यह नगर एक रेल-द्वारा आसाम बंगाल-रेलवे और डिब्रूगढ़ से जुड़ा हुआ है । डिब्रूगढ़ तक ब्रह्मपुत्र में स्टीमर आ सकते हैं । आसाम के तेल में रोशनी देनेवाला हल्का भाग कम होता है । मोमबत्ती का मोम अधिक होता है ।

नगर और मार्ग

आसाम में जल और स्थल-मार्गों की सुगमता है । उत्तरी-पूर्वी आसाम के व्यापार (चाय) के सुभीते के लिए आसाम-बंगाल-रेलवे खोली गई है । यह रेलवे चिटगाँव बन्दरगाह से आरम्भ होती है और बीच की पहाड़ियों को पार करती हुई उत्तर-पूर्व में डिब्रूगढ़-सदिया रेलवे से मिल गई है । लुम्डिंग जंक्शन से कुछ ऊपर दीमापुर या मनीपुर रोड से (धनसारी की) एक सड़क कोहिमा होती हुई मनीपुर-राज्य की राजधानी इम्फाल को गई है । लुम्डिंग जंक्शन से एक शाखा गौहाटी शहर को गई है । विशाल ब्रह्मपुत्र के बाँये किनारे पर गौहाटी शहर की स्थिति बड़ी रमणीक है । इसके दूसरे किनारे पर ईस्टर्न बंगाल-रेलवे का अन्तिम स्टेशन (अमिनगाँव) है । दोनों के बीच में स्टीमर चला करते हैं । नदी के बीच में एक सुन्दर द्वीप है जहाँ हर्र के पेड़ों से घिरा हुआ एक प्राचीन मन्दिर है । गौहाटी शहर से एक मोटर-सड़क शीलांग को जाती है । प्रथम १६ मील में चढ़ाव

बिल्कुल नहीं मालूम पड़ता है पर बाद को चढ़ाव-उतार के कारण मोटर को भी देरी लगती है और ६० मील की यात्रा में ६ घंटे लग जाते हैं। शीलांग प्रायः ५,००० फुट की ऊँचाई पर बसा होने से गर्मियों में भी ठंढा रहता है। यही शहर आसाम-प्रान्त की राजधानी है। यहीं से एक सड़क चेरापूँजी को गई है जहाँ वर्षा की अधिकता से

शीलांग का एक साधारण दृश्य

मार्गों से वर्षा ने मिट्टी को छाँटकर मिट्टी का नाम भी नहीं रखा है। चेरापूँजी की सफेद सपाट चट्टानों की दूसरी ओर सिल्हट जाने के लिए रास्ता है। इस प्रकार सुषमा और अनुपमता यहाँ एक दूसरे से मिली हुई हैं।

उपज

आसाम के अधिकांश भाग [illegible] हैं। [illegible], [illegible], [illegible] और सिल्हट [illegible] हैं [illegible]

से ऊपर है। गाँवों की अधिकता होने का कारण यह है कि यहाँ ८० फी सदी लोग खेती के पेशे में लगे हुए हैं।

रेशमी और सूती कपड़े का काम भी घर घर ही होता है, बड़े बड़े कारखानों में नहीं होता है। आसाम के प्रायः प्रत्येक घर में स्त्रियाँ कपड़ा बुनना जानती हैं। पर वे सूत कातना नहीं जानती हैं। इसलिए सूत विलायती आता है। केवल पहाड़ी गाँवों में बुनने के साथ साथ कातने का भी काम घर घर ही होता है। नाव बनाने, शीतलपाटी और चटाई बुनने और ज़ेवर आदि का काम करने में भी अधिक लोग लगे हुए हैं। शीतलपाटी बुनने का काम अधिकतर सिलहट में ही होता है। चाय के बगीचों में काम करनेवाले ६-७ लाख कुली बाहर से आये हैं। आसाम का पुराना नाम कामरूप है। यहाँ बहुत ही प्राचीन समय से हिन्दू-सभ्यता का प्रचार हुआ। अहोमवंशी राजाओं का संगठन इतना मज़बूत था कि मुसलमान हमला करनेवालों को भगाने में वे सदा सफल रहे। अन्त में उनके आपस में फूट फैली। एक दल ने १७९२ ई० में ईस्ट इंडिया कम्पनी से मदद ली। दूसरे वर्ष यह फ़ौज तो सरजान शोर साहब ने बुला ली। पर १८१७ में बहुत सा रुपया देकर मग्गी (ब्रह्मा के लोग) बुलाये गये। इन लोगों के बर्ताव से आसाम के राजा को सन्तोष न हुआ। उधर मग्गी और ईस्ट इंडिया कम्पनी में भी खटपट हो गई। इसलिए १८२६ ई० में आसाम ब्रिटिश-राज्य में आ गया। बंग-विच्छेद के समय १९०५ में यह प्रान्त पूर्वी बंगाल में मिला दिया गया। पर १९१२ में फिर अलग कर दिया गया। १९१९ के सुधारों के बाद यहाँ भी गवर्नर नियुक्त होने लगा। इस समय यहाँ आधे से अधिक लोग हिन्दू हैं। ⅓ मुसलमान हैं। शेष प्रेतपूजक हैं। आसामी भाषा बंगाली से मिलती-जुलती है। ये दोनों भाषायें प्रायः ब्रह्मपुत्र मैदान में ही बोली जाती हैं। … २१ फी सदी लोग बंगाली बोलते हैं। २२ फी सदी लोग

आसामी बोलते हैं। पर पहाड़ी भागों में गारो, नागा आदि कई पहाड़ी भाषायें हैं। बड़े शहरों में कुछ लोग हिन्दी भी बोलते हैं।

मनीपुर या मणिपुर (८,४५६ वर्गमील, जन-संख्या प्राय. ५ लाख) राज्य चारों तरफ से ऊँचे ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है। बीच में ५० मील लम्बी और २० मील चौड़ी समतल घाटी है। समुद्रतल से दो तीन हजार फुट ऊँची होने के कारण यहाँ की जल-वायु उत्तम है। आसाम की तरह यहाँ भी जंगली हाथी पाये जाते हैं। टट्टू और गाय बैल आदि यहाँ के पालतू जानवर छोटे पर सुन्दर और सुदृढ़ होते हैं। इम्फाल यहाँ की राजधानी है। यहाँ के ९० फी सदी निवासी हिन्दू हैं। लगभग १०,००० मुसलमान भी बसते हैं। पुरुष खेती करते हैं और स्त्रियाँ लेन-देन और व्यापार का काम करती हैं।

खासी जयन्तिया आदि छोटी छोटी रियासतें आसाम में कई (प्राय. २५) हैं।

सत्रहवाँ अध्याय

बंगाल-प्रान्त

बंगाल-प्रान्त (८०,२०० वर्ग मील, ४ करोड़ ९० लाख) उत्तर में सिक्किम और भूटान, पूर्व में आसाम और ब्रह्मा, पश्चिम में बिहार-उड़ीसा और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी से घिरा हुआ है। कर्करेखा इस प्रान्त को दो विषम भागों में विभाजित करती है। छोटा और आयताकार भाग इस रेखा के दक्षिण में रह जाता है। बड़ा त्रिभुजाकार भाग इस रेखा के उत्तर स्थित है। बंगाल प्रान्त का सब से बड़ा भाग गंगा और ब्रह्मपुत्रा की निचली घाटियों और डेल्टा से बना हुआ है। इस प्रदेश की प्रायः सभी भूमि नदियों की लाई हुई बारीक बलुई मिट्टी या काँप की बनी है। दक्षिणी भाग नदियों की असंख्य धाराओं से कटा फटा है। उत्तर में दार्जिलिंग का ज़िला हिमालय के दक्षिणी ढाल पर स्थित है। इसके नीचे जलपाईगुड़ी के ज़िले में तराई का प्रदेश है। प्रान्त के दक्षिण-पूर्व चिटगाँव और त्रिपुरा में भी पहाड़ियाँ हैं। पश्चिम की ओर मिदनापुर, बर्दवान, वीरभूमि और बाँकुरा ज़िलों के पश्चिमी भाग छोटा नागपुरी-पठार के ही अन्तर्गत हैं। इस प्रकार प्रान्त का सब से बड़ा भाग प्रायः सब का सब बहुत ही नीचा और उपजाऊ है। इसकी जल-

दिनाजपुर
भागलपुर
ढाका
बर्दवान
कलकत्ता
मिदनापुर
खुलना
रेलवे
१ लाख से अधिक
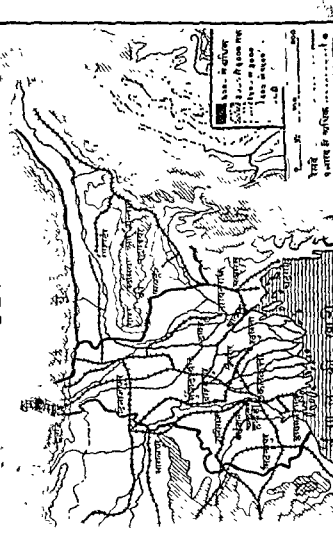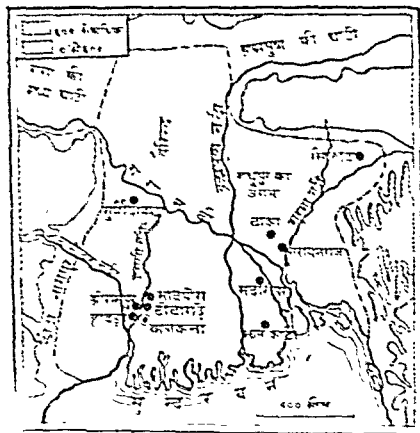
द्वारा मध्य बंगाल में होकर समुद्र में पहुँचता था उन में गंगा का पानी आना बन्द हो गया अथवा बहुत ही थोड़ा आने लगा* । इसलिए वे पुरानी धारायें प्रायः नष्ट हो गईं । उनके स्थान पर बड़े बड़े दलदल या झीलें बन गईं । इन दलदलों का बहुत सा प्रदेश सुखा लिया गया और धान उगाने के काम आने लगा । धुर दक्षिण में समुद्र-तट से प्रायः तीस चालीस मील भीतर की ओर तक अब भी दलदल से भरा हुआ वन है। इस वन में सुन्दरी नाम के पेड़ों की अधिकता है । इसीलिए यह सुन्दर-वन कहलाता है । इस दलदली वन में असंख्य छोटी छोटी धारायें हैं । पर उनके किनारों की ऊँचाई एक हाथ से भी कम है । इसलिए जब समुद्र से (प्रायः दो तीन गज़) ऊँचा ज्वार आता है तब यह प्रदेश समुद्र-जल में डूब जाता है । इस समय सुन्दर-वन की धाराओं में विशाल मगर रहते हैं । कुछ भागों में जंगली सुअर, हिरन और चीते रहते हैं । पर पहले (जब यह भाग कुछ अधिक ऊँचा था) यहाँ खूब खेती होती थी और मनुष्य रहते थे । इस सारे इलाक़े में पक्के मकानों, तालाबों, मंदिरों, मसजिदों और महलों के भग्नावशेष मिलते हैं । सत गुम्बज नाम का यहाँ एक विशाल भवन था । इस भवन में ७७ गुम्बज थे । इसके चारों ओर महराबदार २१ दरवाज़े थे । भीतर की ओर प्रायः ४५ गज़ लम्बा और १२ गज़ चौड़ा कमरा था । अनुमान किया जाता है कि जब से गंगा ने पूर्व की ओर ब्रह्मपुत्रा के संगम के लिए मुड़ना आरम्भ किया तभी से यह प्रदेश नीचे धँस गया । सम्भव है कि आगे चल कर फिर यह प्रदेश पहले की तरह ऊँचा हो जाय ।

डेल्टा के पश्चिम में दामोदर आदि नदियाँ छोटा नागपुर-पठार से पानी लाती हैं । पठार की ओर भूमि क्रमशः ऊँची होती जाती है । पर
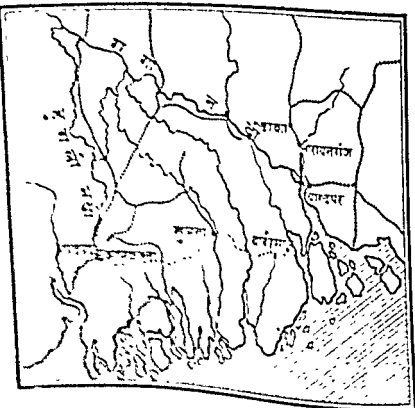
बन जाते हैं। बिना नाव की सहायता के एक गाँव से दूसरे गाँव को जाना असम्भव हो जाता है। इसलिए इस प्रदेश में गाड़ियों की जगह नाव[1] बहुत चलती हैं। बाढ़ के दिनों में इधर के लोग एक गाँव से दूसरे गाँव को और कभी कभी अपने घर से दूसरे घर को नाव पर जाते हैं। पर बाढ़ कम होने पर हर साल इस प्रदेश में बारीक और उपजाऊ काँप की नई तह बिछ जाती है। इसी से यहाँ धान और पाट (जूट) बहुत ज़्यादा होता है।

गंगा और ब्रह्मपुत्रा के संगम से उत्तर और पूर्व की ओर मधुपुर के टीले घास और वन से ढके हैं। मधुपुर का वन समुद्र-तल से केवल ४० फुट ऊँचा है। पर यह गंगा को और अधिक आगे पूर्व की ओर मुड़ने से रोकता है। इसके पूर्व में सुरमा की उपजाऊ घाटी है जो वास्तव में नवीन डेल्टा का अंग है।

जलवायु

कर्क-रेखा बंगाल प्रान्त को दो भागों में बाँटती है। पर उत्तरी भाग की जलवायु शीतोष्ण कटिबन्ध की-सी नहीं है। दार्जिलिंग के पहाड़ी ज़िले को छोड़ कर समस्त बंगाल में उष्णकटिबन्ध की जलवायु पाई जाती है। यह प्रान्त मौसमी हवाओं के रास्ते में स्थित है। इसलिए यहाँ वर्षा ख़ूब होती है। सब कहीं ५० इञ्च के ऊपर ही वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ती जाती है। इस प्रकार सिल्हट ज़िले में १५० इञ्च वर्षा होती है। कभी कभी बंगाल की खाड़ी के चक्रवात यहाँ आ जाते हैं और निचले भागों में बहुत क्षति पहुँचाते हैं। बंगाल प्रान्त समुद्र के पास है। यहाँ वर्षा अधिक होती है। हिमा-

---

[1]प्राचीन इतिहास (रघु-दिग्विजय) में इस बात का उल्लेख है कि

वर्ग मील में प्रायः ६०० मनुष्य रहते हैं। इस प्रान्त के रहने वालों में प्रायः ५३ फ़ी सदी सुन्नी मुसलमान हैं। ये लोग अधिकतर पूर्वी बंगाल में रहते हैं। प्रायः ४५ फ़ी सदी निवासी हिन्दू हैं। शेष दो फ़ी सदी मूल निवासी और ईसाई आदि हैं। इस प्रान्त के ९५ फ़ी सदी लोगों की भाषा बंगाली है। लगभग ४ फ़ी सदी लोग हिन्दी बोलते हैं। शेष १ फ़ी सदी में दक्षिण-पश्चिम की ओर उड़िया भाषी और दार्जिलिंग की ओर नैपाली बोलने वाले हैं। इस प्रान्त के अधिकतर लोग धान या पाट की खेती में लगे हुए हैं। उन्हें अपने खेतों के पास अलग घरों में या छोटे छोटे गाँवों में रहना पड़ता है। इसीलिए बंगाल में प्रायः ९३ फ़ी सदी लोग गाँवों में रहते हैं। शेष ७ फ़ी सदी लोग शहरों में रहते हैं। इसीलिए ५०,००० से अधिक की जन-संख्या वाले शहर बंगाल में केवल सात हैं। कुछ शहर पुराने हैं। ये शहर या तो किसी समय में राजधानी थे या उन में हाट (बाज़ार) लगता है। पर इस तरह के शहर प्रायः घट रहे हैं। नये कारबार और व्यापार वाले शहर धान या जूट की मिलों के पास बढ़ गये हैं।

कलकत्ता

यह शहर (जन संख्या प्रायः १२ लाख) हिन्दुस्तान भर में सब से बड़ा है। पर अब से प्रायः ढाई सौ वर्ष पहले यह एक बहुत ही छोटा गाँव था। १६८६ ई० में (जब हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य न था और अंग्रेज़ लोग (हिन्दुस्तानी प्रजा की हैसियत से रहते थे) अंग्रेज़ी सौदागरों ने मरहठों के डर से यहीं बसने में अपनी खैरियत समझी। यह नगर समुद्र से प्रायः ७० मील ऊपर हुगली नदी के बायें किनारे पर स्थित है। हुगली नदी गंगा की सब से बड़ी और सब से अधिक पश्चिमी शाखा है। यह गहरी इतनी है कि बड़े से बड़े जहाज़ यहां तक आ सकते हैं। इस विशाल और गहरी नदी को पार करके कलकत्ते पर चढ़ाई करना मरहठा

लोगों के लिए आसान न था। १७५६-१७५७ की साज़िश के बाद जब अंग्रेज़ लोग इस नगर और आस पास के प्रदेश के मालिक बन गये तब उन्होंने यहाँ फ़ोर्ट विलियम नामी क़िला बनवाया। १७७२ ई० में कलकत्ता शहर बंगाल की राजधानी बना। फिर जैसे जैसे हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य बढ़ा वैसे वैसे कलकत्ते की भी वृद्धि हुई। यहाँ विश-

कलकत्ता
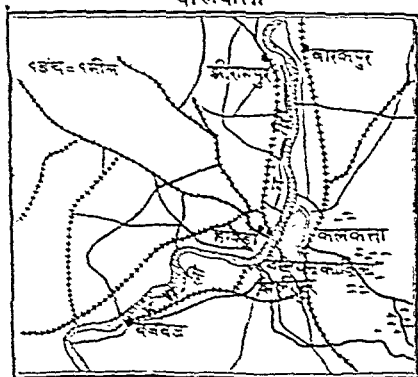
इस नक़्शे के स्केल में १ इंच १६ मील के बराबर है

विद्यालय, हाईकोर्ट आदि तरह तरह की आलीशान इमारतें बनीं। १९१२ ई० से हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली हो गई। पर इस से कल-कत्ते के कारबार और व्यापारिक महत्व में कोई अन्तर न पड़ा। कल-

कत्ता न केवल हिन्दुस्तान का वरन् एशिया का सब से बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। इस शहर के पीछे उत्तरी-पश्चिमी सीमा-प्रान्त और आसाम की पहाड़ियों के सिरे तक प्रायः समतल, सघन और उपजाऊ देश है। इस प्रदेश में सस्ते दामों में आसानी से रेलें, सड़कें और नहरें बनाई जा सकती हैं। गंगा के डेल्टा और मध्यघाटी की असंख्य नदियाँ स्वाभाविक जलमार्ग बनाती हैं। इसलिए गंगा की घनी घाटी की अपार उपज कलकत्ता से ही विलायत को जाती है। भिन्न भिन्न विदेशों से आने वाला पक्का माल भी कलकत्ते में ही उतारा जाता है और फिर यहाँ से गंगा की घाटी में वितरण होता है। कलकत्ते का बन्दरगाह हुगली के किनारे किनारे पाँच मील तक फैला हुआ है। किदरपुर में डाक (या जहाज़ी घाट) हैं। यहाँ तक समुद्र से जहाज बराबर आया जाया करते हैं। पर हुगली नदी में काँप लगातार जमा होती रहती है। इस लिए नदी को सदा साफ रखना पड़ता है। जहाज़ को लाने और ले जाने के लिए शिक्षित और अनुभवी मल्लाह भेजे जाते हैं। इस में व्यापारिक दृष्टि से असुविधा अवश्य है। पर सैनिक दृष्टि से लाभ यह है कि यदि कोई विदेशी दुश्मन अपने जहाज़ों से कलकत्ते पर हमला करना चाहे तो उसके जहाज बीच में ही हुगली की तली से टकरा कर नष्ट हो जावें।*

व्यापार के अतिरिक्त कलकत्ते में कारबार की भी सुविधा है। इसके आसपास बहुत सा पाट (जूट) और चावल होता है। पास में रानीगञ्ज से लोहा और कोयला मिल जाता है। पृष्ठ-प्रदेश में घनी आबादी होने से असंख्य सस्ते मजदूर मिल जाते हैं। इसीलिए कलकत्ते में हुगली के किनारे किनारे मीलों तक बड़े बड़े कारखाने हैं जिनमें बोरियाँ, बोरी

* [illegible]
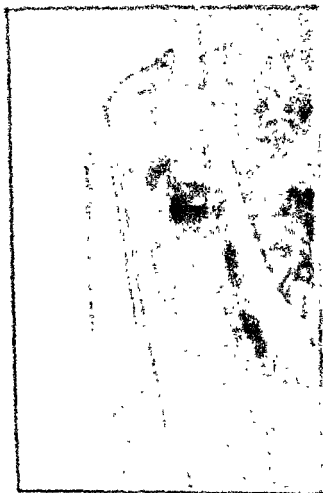
लकड़ी का पुल है जो जहाज़ आने के समय अलग कर लिया जाता है और फिर जोड़ दिया जाता है। हुगली के ही किनारे भाटपाड़ा, टीटागढ़
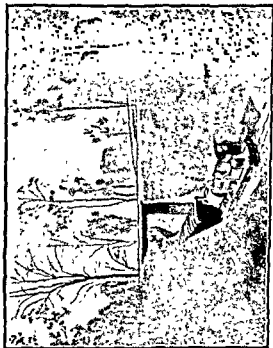
दार्जिलिंग के मार्ग में पहाड़ी रेलवे का एक विचित्र दृश्य

और श्रीरामपुर में जूट की मिलें हैं। टीटागढ़ में कागज़ भी बनता है। ढाका पूर्वी बंगाल का सबसे बड़ा शहर ब्रह्मपुत्र की बूढ़ीगंगा नाम की

अठारहवाँ अध्याय

बिहार-उड़ीसा

बिहार-उड़ीसा (क्षेत्र. १,१२,००० वर्गमील, जनसंख्या ३ करोड़ ७५ लाख ९० हजार) प्रान्त उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी तक चला गया है। यह प्रान्त* सन् १९१२ ई० में बनाया गया। इस प्रान्त के उत्तरी भाग में बिहार अथवा गंगा की मध्य घाटी, बीच में छोटा नागपुर का पठार और दक्षिण में उड़ीसा अर्थात् महानदी का डेल्टा शामिल है। इसके उत्तर में नैपाल राज्य और उत्तरीपूर्वी सिरे पर दार्जिलिंग का जिला है। इसके पश्चिम में संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त,

* अंगरेजी प्रान्तीय विभागों में यह प्रान्त सब से नया है। पर भारतवर्ष के प्राचीन से प्राचीन इतिहास में इस प्रान्त का उल्लेख है। सीता जी के पिता राजा जनक का मिथिला राज्य यहीं था। श्री कृष्ण जी के विरोधी जरासन्ध का मगध देश यहीं था। महात्मा बुद्ध के बाद सम्राट अशोक के शासन काल में इस प्रान्त भर में बौद्ध धर्म या "विहार" स्थापित हो गये। शायद इसी से आगे चलकर इस प्रान्त का नाम बिहार पड़ गया।
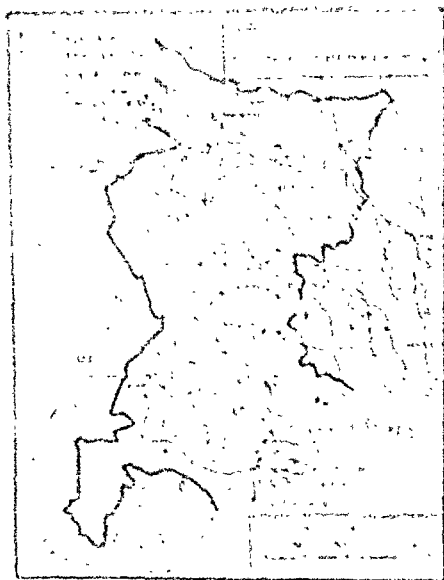
बिहार का प्रदेश गंगा और गंगा की सहायक नदियों के द्वारा लाई हुई बारीक मिट्टी (काँप) से बना है । केवल दक्षिणी बिहार में कु पठार हैं । छपरा ज़िले के पास गंगा नदी संयुक्त प्रान्त से बिहार प्रान्त में प्रवेश करती है । बिहार के उपजाऊ और कछारी मैदान को दो भागों में बाँटती हुई गंगा नदी पूर्व की ओर बहती है । बिहार प्रान्त छोड़ते समय राजमहल की पहाड़ियों ने पूर्व की ओर बढ़कर गंगा को दक्षिण-पूर्व की ओर मोड़ दिया है । बिहार का कछारी मैदान सब कहीं समुद्र तल से ३०० फुट से कम ही नीचा है । इतना नीचा होने पर भी इसका ढाल गंगा के उत्तर में दक्षिण-पूर्व की ओर और गंगा के दक्षिण में उत्तर-पूर्व की ओर है । इसीलिए न केवल हिमालय का वरन् दक्षिणी पठार का पानी भी गंगा नदी में बह आता है । आरम्भ में छपरा के पास घाघरा या सरयू नदी गंगा से उत्तरी किनारे पर मिलती है । इस संगम से कुछ और आगे दानापुर के पास सोन नदी मध्य-भारत का पानी गंगा (दक्षिणी किनारे पर) में मिला देती है । कुछ ही मील और आगे गंडक नदी हिमालय का जल गंगा में छोड़ देती है । इसके बाद मुंगेर के नीचे पूर्वी गंडक और बाघमती हिमालय से चलकर गंगा से मिलती हैं । भागलपुर के नीचे हिमालय की कोसी नदी गंगा में मिलती है । इस प्रकार बिहार प्रान्त थोड़ी थोड़ी दूर पर नदियों से गुंथा हुआ है । लेकिन (दक्षिणी सिरे को छोड़ कर) इस विशाल उपजाऊ मैदान में पत्थर या पहाड़ का नाम नहीं है ।

जलवायु

बिहार प्रान्त में संयुक्त प्रान्त की अपेक्षा अधिक पानी बरसता है । पर बंगाल के मुकाबिले में यहाँ कम वर्षा होती है । साल भर में औसत से प्राय ५० इंच पानी बरसता है । पर हिमालय के पास उत्तरी भाग मे ७० इंच और कभी कभी ८० इंच तक पानी बरस जाता है । दक्षिणी

कटने के समय में फिर घर लौट आते हैं। प्रधान पेशा खेती होने के कारण प्राय: ९७ फी सदी लोग गाँवों में रहते हैं। बड़े बड़े शहर कम हैं।

नगर

पटना शहर बिहार प्रान्त की राजधानी और प्रान्त भर में सब से बड़ा शहर है। गंगा नदी के दाहिने किनारे पर उपजाऊ मैदान के प्रायः मध्य में स्थल और जलमार्गों का केन्द्र होने से पटना शहर की स्थिति राजधानी होने के लिए बिलकुल अनुकूल रही है। इसी से पुराने समय में पटना शहर (पाटलीपुत्र) न केवल इसी प्रान्त का वरन् एक बड़े साम्राज्य की राजधानी था। आजकल पुराना शहर एक छोटा नगर रह गया है। नया शहर जिसे बाँकीपुर भी कहते हैं बढ़ रहा है। यहाँ ई० आई० आर० का जंकशन, सरकारी इमारतें और बाज़ार आदि हैं। चावल आदि व्यापार की चीज़ें भी यहीं इकट्ठी की जाती हैं।

पटना के दक्षिण में फल्गु नदी के किनारे गया शहर हिन्दुओं का एक बड़ा तीर्थ स्थान है। यह शहर मुग़लसराय और कलकत्ता के बीच में सीधी रेलवे लाइन पर स्थित है और रेल द्वारा पटना शहर से भी जुड़ा हुआ है। इसके पास ही एक हवाई स्टेशन भी बनने वाला है। यहाँ से ६ मील की दूरी पर बुद्ध-गया नाम का प्रसिद्ध बौद्ध मन्दिर है। पूर्वी सिरे पर गंगा के दक्षिणी किनारे पर *मुंगेर और भागलपुर नगर हैं।* मुंगेर में पहले एक मज़बूत किला था और यहाँ शस्त्र बनते थे। आज कल यहाँ पेनिन्सुलर टुबेको कम्पिनी ने दुनिया भर में एक बहुत बड़ा सिगरेट का कारख़ाना खोला है। इसी से मुंगेर के आस पास तम्बाकू की खेती भी बढ़ने लगी है। जमालपुर में रेलगाड़ियों की मरम्मत के लिए ईस्ट इंडियन रेल्वे ने एक बड़ा कारख़ाना खोल रक्खा है। गंगा के उत्तर में छपरा, मुज़फ़्फ़रपुर और दरभंगा प्रसिद्ध शहर हैं। दरभंगा ज़िले में पूसा का प्रसिद्ध कृषि-कालेज है।

गंगा और गंडक के संगम पर सोनपुर नगर दुनिया भर में सब से बड़े प्लेटफार्म (बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे का) और हरिहरक्षेत्र के मेले के लिए प्रसिद्ध है। यह मेला कार्तिकी पूर्णिमा को होता है और एक महीने तक रहता है। यहाँ हाथी आदि बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी प्रायः सभी चीज़ें बिकने आती हैं।

छोटानागपुर उस विशाल पठार का पूर्वी भाग है जो गुजरात (कच्छ) की खाड़ी से आरम्भ होकर मध्यप्रान्त को पार करता है। छोटानागपुर में वह सब पहाड़ी प्रदेश शामिल है जो बिहार के दक्षिण और बर्दवान कमिश्नरी के पश्चिम में मध्यप्रान्त और रीवाँ-राज्य तक फैला हुआ है। छोटानागपुर-पठार में कोई बड़ा पहाड़ नहीं है। पर यह पठार समुद्र-तल से प्रायः २००० फ़ुट ऊँचा है। जगह जगह पर नदियों ने इसे बहुत गहरा काट दिया है। पठार के ऊपर कई स्थानों में चपटी चोटी वाली पहाड़ियाँ पठार के धरातल से २००० फ़ुट ऊँची हैं। राजमहल की पहाड़ियाँ उस कोन को घेरे हुए हैं जो बिहार के मैदान और बंगाल-डेल्टा के बीच में बन गया है। इस पठार में सब से ऊँची (४४८१ फ़ुट) चोटी पारसनाथ की है। यहीं जैनियों के महात्मा पारसनाथ का मन्दिर होने से तीर्थ स्थान है।

छोटानागपुर में साल भर में औसत से ५० इंच पानी बरसता है। ऊँचाई के कारण यहाँ का तापक्रम बिहारी मैदान से नीचा रहता है। अधिकांश प्रदेश साल आदि पेड़ों के वनों से ढका है। वनों में लकड़ी के अतिरिक्त लाख* चुआने का काम बहुत होता है। मानभूमि, पलामू, राँची और गया लाख के मुख्य केन्द्र हैं। पठार के चपटे भागों में चरा-गाह या काँटे दार झाड़ियाँ हैं। घाटियों के ढालों पर सीढ़ी (ज़ीने) के

---

* लाख से चूड़ी व बटन आदि बहुत सी चीज़ें बनती हैं

आकार में धान के खेत बने हुए हैं। घाटियों की ज़मीन पठार के बारीक कणों से बनी है। इसलिए यह बहुत उपजाऊ है। पर पहाड़ी टीलों की ज़मीन इतनी अच्छी नहीं है। इन टीलों पर मकई, ज्वार बाजरा आदि की फ़सल होती है। इस पठार में खेती के लिए उपयोगी जमीन अधिक नहीं है। पर यहाँ मूल्यवान खनिज बहुत हैं। उत्तर की ओर हज़ारीबाग (कोडर्मा) में अभ्रक की खान दुनिया भर में सब से बड़ी है। पठार के सिरे पर (खास कर दामोदर नदी की घाटी में) सिंहभूमि, मानभूमि और हज़ारीबाग ज़िले में कोयले और लोहे की विस्तृत खानें हैं। झरिया, रानीगंज गिरडिह, बोकारो-रायगढ़ और कर्णपुरा की कोयले की खानें सर्व प्रसिद्ध हैं। कलकत्ते से प्रायः १५० मील उत्तर-पूर्व की ओर सिंहभूमि ज़िले के जमशेदपुर या टाटानगर में "टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स" नाम का प्रसिद्ध कारखाना है। लोहे और फ़ौलाद का यह कारखाना दुनिया के सब से बड़े कारखानों में से एक है। इसके आस-पास टिनप्लेट कम्पनी, एग्रीकल्चरल इम्पलीमेन्ट्स (कृषि-यन्त्र) लिमिटेड, तार बनाने की कम्पनी आदि कई और कारखाने खुल गये हैं। इन सब कारखानों में प्रति वर्ष १५ लाख टन कोयला ख़र्च होता है। जहाँ पहले निर्जन और ऊसर ज़मीन थी वहीं कुछ ही वर्षों में एक लाख की आबादी वाला जमशेदपुर नगर बस गया है। टाटा महाशय के उद्योग से यह प्रदेश अत्यन्त धनी हो गया है। उत्तर की ओर इस प्रदेश तथा कुछ और स्थानों को छोड़ कर यह पठार अब भी घोर वनों से ढका हुआ है। इन जंगली और पहाड़ी भागों में कोल आदि जंगली लोग रहते हैं। ये लोग तीर कमान से जंगली जानवरों का शिकार किया करते हैं। इनका क़द नाटा होता है। पर ये लोग बड़े ही वीर और ईमानदार होते हैं। दुर्गम भागों में रहने के कारण वे एक दूसरे से या बाहर के लोगों से बहुत नहीं मिलते हैं। इसलिए उनकी भाषा और रहन-सहन हम लोगों से बहुत भिन्न है। इस प्रदेश की जनसंख्या भी अधिक नहीं है।

प्रतिवर्ग मील में केवल १० मनुष्य रहते हैं। हज़ारीबाग़ और राँची यहाँ के प्रसिद्ध शहर हैं। राँची नगर में ही ग्रीष्म-ऋतु में बिहार-उड़ीसा-प्रान्त के गवर्नर रहते हैं।

उत्कल या उड़ीसा-प्रान्त

यह छोटानागपुर के दक्षिण में स्थित है। इसके पूर्व में बंगाल और पश्चिम में उत्तरी सरकार और मध्य प्रान्त हैं। वास्तव में उड़ीसा का विशाल प्रदेश महानदी की निचली घाटी और डेल्टा का प्रदेश है। वैसे सुवर्ण-रेखा, वैतरनी आदि छोटी नदियाँ यहाँ बहुत हैं। नदियों का पाट कम चौड़ा है। इसी से वर्षा ऋतु में अक्सर बाढ़ दूर तक फैल जाती है। समुद्र-तट पर आरम्भ में रेतीले टीले और [illegible] के दलदल हैं। इसके पीछे धान के उपजाऊ खेत हैं। अधिक भीतर की ओर वनाच्छादित पहाड़ियाँ हैं। इन पहाड़ियों के बीच बीच में भी उपजाऊ घाटियाँ स्थित हैं। इस प्रदेश की जलवायु उत्तरी सरकार से मिलती जुलती है। औसत तापक्रम प्रायः ८१ अंश फारेनहाइट है। वार्षिक वर्षा का औसत प्रायः ५० इंच है। पर यहाँ की वर्षा बहुत ही अनिश्चित है। इसलिए कभी यहाँ के लोगों को बाढ़ से और कभी अकाल से पीड़ा उठानी पड़ती है। यहाँ की प्रधान उपज धान है। कुछ भागों में पाट (जूट) भी होता है। भीतर की ओर विशाल वन हैं जिनमें हाथी आदि सभी तरह के जंगली जानवर पाये जाते हैं। इस विभाग में देशी रियासतें बहुत (१७) हैं इनमें मयूरभंज की रियासत सब से अधिक बड़ी है। यहाँ के लोगों की भाषा उड़िया है [illegible] अधिक उन्नति नहीं है। बड़े शहर कम हैं।

कटक

[illegible]

ऊँचा बाँध बना है। यह नगर उड़ीसा की राजधानी और उड़ीसा की नहरों का केन्द्र है। यहाँ सोने और चाँदी के बेल बूटे का काम अच्छा होता है।

पुरी

कटक से ५० मील दक्षिण की ओर मद्रास प्रान्त की सीमा के पास पुरी या जगन्नाथ पुरी है। यहाँ पर जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर है जिसका दर्शन करने के लिए हर साल एक लाख से ऊपर यात्री आते हैं। यहाँ की जलवायु अच्छी है। इसलिए कुछ (बंगाली) लोग यहाँ स्वास्थ्य सुधारने को भी आते हैं।

बालासोर

यह इस समय एक छोटा बन्दरगाह रह गया है। पर पहले यहाँ अंग्रेज़ी, डच और फ्रांसीसी लोगों के कारख़ाने थे।

सम्भलपुर

यह महानदी के किनारे ऐसे स्थान पर बसा है जहाँ तक नावें आ सकती हैं।

उन्नीसवाँ अध्याय

संयुक्तप्रान्त

संयुक्तप्रान्त (१,१२,५६२ वर्ग मील जन संख्या ४,८४,००,०००) उत्तरी भारत के मध्य में स्थित है। इस प्रान्त के उत्तर में प्रायः १६,००० वर्ग मील हिमालय का पहाड़ी प्रदेश है। दक्षिण में १७,५०० वर्ग मील पठार है। शेष सब का सब प्रदेश (८०,००० वर्ग मील) गंगा और उसकी सहायक नदियों का उपजाऊ मैदान है। इस मैदान की लम्बाई प्रायः ४८० मील और चौड़ाई १६० मील है। लेकिन संयुक्तप्रान्त की अधिक से अधिक लम्बाई ५०० मील और चौड़ाई ३०० मील है। यह प्रान्त प्रायः ३१ उत्तरी अक्षांश और २३-५१ उत्तरी अक्षांश के बीच में स्थित है। इस प्रकार कर्क रेखा प्रान्त से केवल २२ मील या प्रायः ⅓ अंश की दूरी पर दक्षिण की ओर छूट जाती है। इस प्रान्त के उत्तर में काली और यमुना नदियों के बीच का पहाड़ी प्रदेश (कमायूँ की कमिश्नरी) तिब्बत से घिरा हुआ है। इससे आगे सारदा या काली और गंडक नदियों के बीच में तराई का जंगली दलदल नैपाल के पहाड़ी राज्य को संयुक्तप्रान्त के मैदान से अलग करता है। पश्चिम की ओर दिल्ली से प्रायः ६० मील नीचे तक अथवा मथुरा से ३० मील

ऊपर तक यमुना नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है और पंजाब प्रान्त को संयुक्तप्रान्त से अलग करती है। इसके आगे संयुक्त प्रान्त और राज

पूताना की भरतपुर आदि रियासतों के बीच में कोई प्राकृतिक सीमा [illegible]

प्राकृतिक सीमा बनाती है। चम्बल के संगम से इलाहाबाद (गंगा के संगम) तक यमुना नदी और आगे चलकर चुनार तक गंगा नदी केवल मैदान और पठार को अलग करती है। हमीरपुर, झाँसी, जालौन और बाँदा के ज़िले पठार में स्थित होने पर भी संयुक्त प्रान्त में शामिल हैं। गंगा के दक्षिण में मिर्ज़ापुर का ज़िला और भी अधिक पहाड़ी है। कुछ दूर तक बेतवा नदी फिर एक बार ग्वालियर और संयुक्त प्रान्त (झाँसी-ज़िले) के बीच में प्राकृतिक सीमा बनाती है। झाँसी के दक्षिण में मध्य प्रान्त का सागर ज़िला है। इसके आगे मध्यभारत के पन्ना, रीवा आदि राज्य संयुक्त प्रान्त की दक्षिणी (राजनैतिक) सीमा बनाते हैं। केवल कुछ मील तक संयुक्त प्रान्त के दक्षिणी पूर्वी सिरे पर छोटा नागपुर है। पूर्व की ओर सब कहीं बिहार प्रान्त है। इस ओर भी प्राकृतिक सीमा का प्रायः अभाव है। संगम से पहले केवल कुछ मील तक घाघरा और गंगा नदियाँ प्राकृतिक सीमा बनाती हैं और बलिया ज़िले को बिहार के छपरा और आरा ज़िलों से अलग करती हैं।

संयुक्त प्रान्त निम्न प्रधान प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है:—

१–हिमालय का पर्वतीय प्रदेश

इस प्रदेश में टेहरी राज्य और गढ़वाल, अल्मोड़ा, तथा देहरादून के ज़िले शामिल हैं। नैनीताल ज़िले का भी अधिकतर भाग पहाड़ी है। टॉस (यमुना की सहायक) और सारदा के बीच में इस प्रदेश की चौड़ाई १८० मील और क्षेत्रफल १७,५०० वर्गमील है। इस प्रदेश के सबसे बाहरी (दक्षिणी) भाग में मैदान से मिली हुई सिवालिक की असम्बद्ध पहाड़ियाँ *

* सिवालिक की अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्र-तल से केवल २,००० फ़ुट है। जब हम रुड़की से हरद्वार को जाते हैं तो हमारे मार्ग में [illegible] पड़ता है। [illegible]
[illegible] सिवालिक [illegible]

सबसे बाहरी श्रेणी से अलग करती हैं। दून का प्रधान नगर देहरादून है। यहीं सर्व प्रसिद्ध फ़ारेस्ट कालेज और मिलीटरी कालेज हैं। समीरवर्ती मैदान की अपेक्षा शिवालिक और दून में वर्षा अधिक है। पर तापक्रम में कोई विशेष अन्तर नहीं है। इसीलिए घाटियों और अनुकूल ढालों पर मैदान की ही उपज है। दूसरे भागों की वनस्पति उष्ण कटिबन्ध से मिलती है। पर बाहरी श्रेणी पर चढ़ते ही अन्तर मालूम पड़ने लगता है। यह बाहरी श्रेणी दून के ऊपर एक दम ऊँची खड़ी हुई है। आठ दस मील की यात्रा में हम समुद्रतल से पाँच छः हज़ार फुट ऊँचे चढ़ जाते हैं। उष्णकटिबन्ध की वनस्पति पीछे छूट जाती है। शीतोष्ण कटिबन्ध या शीतकटिबन्ध की वनस्पति सामने आती है। इनमें सुई के समान पत्तीवाले ऊँचे ऊँचे देवदारु के पेड़ विशेष उल्लेखनीय हैं। यहाँ *ग्रीष्मऋतु में भी इतना कम तापक्रम रहता है कि गरम कपड़े पहनने* पड़ते हैं। इधर लोग रात को जून के महीने में भी दरवाज़ा बन्द करके घरों के अन्दर सोते हैं और आग तापते हैं। पहाड़ी धाराओं का पानी इतना ठंडा रहता है कि कोई अलग बरफ़ इस्तैमाल करने का नाम भी नहीं लेता है। मानसून के दिनों में यहाँ प्रबल वर्षा होती है। सरदी के दिनों में बरफ पड़ती है। इधर वन बहुत हैं। पर उपजाऊ ज़मीन के प्रायः अभाव से खेती कम होती है। पहाड़ी ढालों पर यहाँ के छोटे छोटे खेत ज़ीने के समान दिखाई देते हैं। खेतों में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। फिर भी उनमें पत्थरों के टुकड़े भरे रहते हैं। इसी से इधर आबादी कम है। पर लंढौरा, मसूरी, नैनीताल, चकराता, रानीखेत आदि स्थानों में मैदान के धनी लोग गरमी बिताने के लिए आजाते हैं। टेहरी और अल्मोड़ा पुराने नगर हैं। बाहरी श्रेणी को पार करने के बाद हिमालय की प्रधान श्रेणी मिलती है। इसी के विशाल हिमागारों में गंगा और यमुना का स्रोत है। इसकी औसत ऊंचाई २०,००० फुट है। बद्रीनाथ, त्रिशूल और नन्दादेवी आदि चोटियों की ऊंचाई २२

हज़ार से २१ हज़ार फुट तक है। यहाँ बरफ सदा जमी रहती है। वनस्पति का प्रायः अभाव है। इसी से स्थायी आबादी का भी प्रायः अभाव है। यात्री लोग केवल ग्रीष्मऋतु में आते हैं। समस्त पहाड़ी प्रदेश का ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर है।

२-तराई या हिमालय की तलहटी

पर्वतीय प्रदेश के नीचे तराई की पतली पेटी है। इस नीचे प्रदेश की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है। पर यहाँ पानी और दलदल की अधिकता है। इसी से यहाँ सघन वन और वनस्पति है। यहाँ बीमारी बहुत फैलती है इसलिए यहाँ मनुष्य कम रहते हैं पर जंगली जानवरों की भरमार है। मैदान की आबादी बढ़ने के कारण हाल में इधर भी खेती होने लगी है। सहारनपुर, पीलीभीत, खीरी और बहराइच इस प्रदेश के मुख्य नगर हैं।

३-गंगा का पश्चिमी मैदान

संयुक्तप्रान्त का आधे से अधिक भाग उस बारीक मिट्टी से बना है जिसे गङ्गा और उसकी सहायक नदियों ने अपनी बाढ़ के साथ लाकर यहाँ बिछा दिया है। यह काम लाखों वर्षों से हो रहा है। इसलिए कांप की तहें बहुत मोटी हो गई हैं। मैदान के सारे प्रदेश में पत्थर या पहाड़ का नाम नहीं है। ढाल कम होने के कारण यहाँ नदियाँ बहुत धीरे धीरे बहती हैं। इससे वे सिंचाई करने और नाव चलाने के लिए बड़ी उपयोगी हो गई हैं। अधिक ऊँचा-नीचा न होने पर भी यह मैदान बिल्कुल समतल नहीं है। इसका ढाल प्रायः दक्षिण-पूर्व की ओर है। लेकिन उत्तर से दक्षिण की ओर ढाल इतना अधिक नहीं है जितना कि पश्चिम से पूर्व की ओर है। इसीलिए मैदान की नदियाँ प्रायः पूर्व की ओर बहती हैं। अगर हम संयुक्तप्रान्त के किसी दक्षिणी स्थान से उत्तरी स्थान को जावें तो हमको थोड़ी थोड़ी दूर पर कई समानान्तर

नदियाँ पार करनी पड़ेंगी। इनके द्वाबा की ऊँचाई में कोई भारी अन्तर नहीं है। पर द्वाबा की ऊँची "बांगर" भूमि और नदी के आस पास वाली "खादर" ज़मीन में बड़ा अन्तर है। बांगर भूमि को नदी ने बहुत पहले बनाया था। आरम्भ में बांगर भूमि नदीतल से अधिक ऊँची न थी और बाढ़ आने पर पानी में डूब जाती थी। पर लाखों वर्ष बहने के बाद नदी ने इस ज़मीन को खोद कर अपनी तली नीची कर ली। इसलिए अब नदी की बड़ी से बड़ी बाढ़ का पानी भी बांगर भूमि पर नहीं पहुँच पाता है। इसलिए अब बांगर के खेतों में कुएँ या नहर से सिंचाई होती है। खादर की नीची ज़मीन अधिक उपजाऊ नहीं है। कहीं कहीं इतनी बालू होती है कि इसमें खेती नहीं हो सकती है। पर यह ज़मीन नदी की वर्तमान धारा से दूर नहीं होती है और दो ऊँचे किनारों के बीच घिरी होती है। इसलिए बाढ़ आने पर खादर की ज़मीन प्रायः हर साल नदी के पानी से डूब जाती है। बाढ़ के घट जाने पर इसमें खेती होती है और अलग सिंचाई की ज़रूरत नहीं पड़ती है। इस ज़मीन में अक्सर एक ही फ़सल होती है। खादर के कुछ भागों में केवल घास होती है जहाँ ढोर चरते हैं।

अगर हम हवाई जहाज़ या किसी अधिक ऊँचे स्थान से मैदान पर नज़र डालें तो यह सब का सब मैदान खेतों और बाग़ों से और छोटे छोटे गाँवों से ढका हुआ दिखाई देगा। जलवायु और उपज के अनुसार यह मैदान दो भागों में बाँटा जा सकता है। इलाहाबाद के पश्चिम में ४० इंच से कम वर्षा होती है। अब के दक्षिण-पश्चिम में कुछ भाग ऐसे हैं जहाँ वर्षा के अभाव से ऊसर और रेह हो गया है। इसलिए इलाहाबाद के पश्चिम में संयुक्त प्रान्त के मैदान को सींचने के लिए बड़ी बड़ी नहरें निकाली गई हैं। पूर्वी यमुना नहर बादशाही बाग़ (ज़िला सहारनपुर) और दिल्ली के बीच में यमुना के बायें किनारे की ओर सहारनपुर, मुज़फ़्फ़रनगर और मेरठ ज़िलों में सिंचाई के काम

जाती है। दिल्ली के नीचे दाहिने किनारे के प्रदेश में आगरा-नहर से सिंचाई होती है। गंगा और यमुना के द्वाबा के सब से बड़े भाग की सिंचाई हरिद्वार से निकलने वाली ऊपरी गंगा-नहर और नारोरा से निकलने वाली निचली गंगा-नहर के द्वारा होती है। अभी हाल में रुहेलखंड और अवध के ज़िलों के सींचने के लिए मुरादाबाद और लखनऊ के बीच में शारदा नहर निकाली गई है। जिन भागों में नहर का पानी नहीं पहुँचता है वहाँ कुओं से सिंचाई होती है। इनके किसान अधिकतर गेहूँ, जौ, मटर, चना, तम्बाकू, आलू, ईख और कपास उगाते हैं। निर्बल ज़मीन में मकई, ज्वार और बाजरा होता है। अधिक सजल कछारी भागों में चावल भी होता है। इलाहाबाद के पूर्व में सब कहीं ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। इसलिए इस ओर सिंचाई की बहुत कम आवश्यकता है। हवा भी अधिक नम है। इसलिए इस ओर गेहूँ की अपेक्षा चावल अधिक होता है।

इस प्रदेश की जनसंख्या बहुत सघन है। प्रति वर्ग मील में प्रायः ५०० मनुष्य रहते हैं। बनारस ज़िले में प्रति वर्ग मील में १,००० से अधिक मनुष्य रहते हैं। पश्चिम की ओर जनसंख्या कम है। यदि नहरों द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध न होता तो उस ओर जनसंख्या और भी कम होती। यहाँ ८५ फ़ी सदी हिन्दू, १४ फ़ी सदी मुसलमान और १ फ़ी सदी ईसाई आदि दूसरे मतावलम्बी लोग रहते हैं। यहाँ के लोगों की भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी (उर्दू मिली हुई हिन्दी) है। लोगों का प्रधान पेशा खेती है। इसलिए अधिकतर लोग छोटे छोटे गाँवों में रहते हैं। पत्थर का अभाव होने से वे अपने कच्चे घर मिट्टी से बनाते हैं। इसीसे प्रायः हर गाँव में एक दो या अधिक तालाब मिलते हैं जिनसे मलेरिया भी फैलती है। पर इस प्रान्त ने भारत के इतिहास पर गहरा प्रभाव डाला है। (अति प्राचीन समय में यह मध्य देश नाम से प्रसिद्ध था।) इसलिए यहाँ बहुत से प्राचीन और नवीन शहर हैं।

हवाई जहाज़ से ताजमहल का दृश्य

बड़े कारखाने हैं। यहाँ हिन्दू मुसलमानों के पिछले झगड़े से कानपुर को भारी धक्का पहुँचा।

लखनऊ

यह शहर गोमती नदी के दाहिने किनारे पर कुछ ऊँची ज़मीन पर बसा है। पहले यहाँ अवध के नवाबों की राजधानी थी। अब कुछ दिनों से यह शहर संयुक्त प्रान्त की प्रायः राजधानी बन रहा है। पुरानी इमारतें बहुत अच्छी नहीं हैं। पर नई सरकारी इमारतों और सड़कों पर बहुत खर्च किया जा रहा है। पुरानी दस्तकारी में चिकन का काम अब भी अच्छा होता है। मराई की घास और बैब घास से यहाँ की मिलों में कागज़ बनाया जाता है। यहाँ पर कई रेलें मिलती हैं।

आगरा

यह यमुना के दाहिने किनारे पर रेगिस्तान और कछारी मैदान के संगम पर बसा है। यह नगर कई वर्षों तक शक्तिशाली मुग़ल साम्राज्य की राजधानी रहा। इसलिए यहाँ ताजमहल, मोती-मस्जिद आदि कई जगत्प्रसिद्ध इमारतें हैं। आजकल भी यहाँ संगमरमर और दरी का अच्छा काम होता है। पास ही दयालबाग़ में फाउन्टेनपेन आदि आधुनिक आवश्यकता की कई चीज़ें बनने लगी हैं।

दूसरे शहर

मुरादाबाद पीतल और कलई के बरतनों के लिए प्रसिद्ध है। फ़र्रुख़ाबाद में कपड़े अच्छे छपते हैं। बरेली में मेज़, कुरसी आदि लकड़ी का सामान और तांगे बनाने का काम होता है। अलीगढ़ में ताले अच्छे बनते हैं। शाहजहाँपुर (रौसा) में ईख का सरकारी एक्सपेरीमेन्टल फ़ार्म (प्रयोग करने का खेत) है। यहाँ गन्नों से शक्कर बनाई जाती है और शराब तैयार होती है। [illegible] नदी के साफ़ पानी ने यहाँ रेशम का

कारबार बढ़ा दिया है। मिर्ज़ापुर में पीतल के बरतन, क़ालीन और शाम[ियाने?] तयार करने का काम होता है। अयोध्या, मथुरा, क़न्नौज औ[र] हस्तिनापुर प्राचीन समय में बहुत प्रसिद्ध थे।

४-पठार

संयुक्त प्रान्त का पठार-प्रदेश यथार्थ में बेतवा की घाटी है। वैसे यह प्रदेश गंगा-यमुना के दक्षिण में यमुना की सहायक सिन्ध नदी से लेकर गंगा की सहायक सोन नदी तक फैला हुआ है। यह प्रदेश मैदान के सम से अधिक ऊंचा नहीं है। पर इसमें जगह जगह पर चपटी चोटी वाले पहाड़ी होते हैं। अधिक ऊँचा भाग केवल मिर्ज़ापुर ज़िले के दक्षिण में है। इस प्रदेश में उपजाऊ ज़मीन बहुत कम है। वर्षा भी अधिक नहीं होती है। सरदी और गरमी के तापक्रम में बहुत भेद रहता है। इसलिए अधिकांश प्रदेश कांटेदार झाड़ियों से ढका हुआ है। अनुकूल प्रदेशों में ज्वार, बाजरा, मकई और गेहूँ की खेती होती है। चरागाह अधिक होने से ढोर अधिक पाले जाते हैं। इन सब कारणों से यहाँ की आबादी घनी नहीं है। इस ओर सबसे बड़ा नगर झाँसी है। यह नगर बेतवा नदी से कुछ ही मील की दूरी पर जी॰ आई॰ पी॰ रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। यहाँ से एक शाखा महोबा और बाँदा होती हुई मानिकपुर को गई है। महोबा के पास प्राचीन भग्नावशेष हैं। इस समय यह नगर पान की खेती के लिए प्रसिद्ध है। पयस्वनी नदी के किनारे चित्रकूट एक सुहावना तीर्थस्थान है। पत्थर की अधिकता होने से पठार के गाँवों और शहरों में प्रायः पत्थर के मकान बने हैं।

बीसवाँ अध्याय

पंजाब

यह (१,३६,३३० वर्ग मील; जनसंख्या २,३६,००,०००) प्रान्त या पंचनद प्रदेश पाँच (सिन्ध की सहायक सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम) नदियों का प्रदेश है। इसमें सन्देह नहीं कि पंजाब के बड़े (३/४) भाग में नदियों द्वारा बना हुआ कछारी मैदान या द्वाबा है। स्यालकोट के पास इस मैदान की ऊँचाई (समुद्र तल से) ८५० फुट है पर मुलतान के पास २५० मील दक्षिण-पश्चिम में यहाँ मैदान केवल ४०० फुट ऊँचा रह गया है। नदी के पास वाला नीचा भाग खादर और दूर वाला ऊँचा भाग बांगर या बंसा कहलाता है। इस त्रिभुजाकार मैदान के दक्षिण में सरहिन्द का रेगिस्तानी पठार है जो सतलज में आने वाले पानी को यमुना में जाने वाले पानी से अलग करता है। धुर दक्षिण में अरावली की टूटी फूटी पहाड़ियाँ हैं। इन्हीं पहाड़ी के आखिरी सिरे पर दिल्ली शहर बसा है। पश्चिम में सिन्ध और झेलम के बीच सिन्ध सागर द्वाबा तथा सिन्ध नदी के पश्चिमी किनारे और सुलेमान पर्वत के बीच का कुछ भाग (डेराजात का मैदान) भी पंजाब में शामिल है। मैदान के पश्चिम और उत्तर-पूर्व में पहाड़ी प्रदेश है। इस

पहाड़ी प्रदेश में सारे पंजाब प्रान्त का ⅕ भाग दिया हुआ है। इसी भाग में पंजाब की नदियों का अधिकतर ऊपरी भाग है। मैदान के पास प्रायः ५,००० फुट वाली सिवालिक पर्वत-श्रेणी बहुत नीची है। उत्तर की ओर यह श्रेणी अधिक नीची पर बहुत चौड़ी हो गई है। कुछ

और आगे हिमालय की १५,००० फुट ऊँची और हिमाच्छादित पीरपंजाल श्रेणी है। यही श्रेणी पंजाब की उत्तरी सीमा बनाती है। इस श्रेणी और उच्च कराकोरम के बीच में काश्मीर की घाटी स्थित है। पंजाब के पहाड़ी भाग में कभी कभी भूचाल भी आता है। झेलम और सिन्ध नदी के बीच में साल्टरेंज (नमक का पहाड़) की प्राचीन पर घिसी हुई श्रेणी से पहाड़ी नमक मिलता है।

जलवायु

पंजाब प्रान्त अधिक उत्तर में समुद्र से बहुत दूर स्थित है। इसकी अधिकांश ज़मीन रेतीली है। इसलिए पंजाब की जलवायु बड़ी विकराल (महाद्वीपीय) है। दिन और रात के तापक्रम तथा सरदी और गरमी के तापक्रम में भारी अन्तर रहता है। पहाड़ से प्रायः १०० मील की दूरी तक काफ़ी (२५ या ३१ इंच) वर्षा हो जाती है। यह वर्षा गरमी में (जुलाई से सितम्बर तक) दक्खिनी-पच्छिमी मानसून और सरदी (जनवरी-फ़र्वरी) में भूमध्य सागर के तूफ़ानों के कारण होती है। इसलिए उत्तरी-पूर्वी पंजाब में दो फ़सलें पैदा की जाती हैं। पर पहाड़ से बहुत दूर दक्खिनी-पच्छिमी पंजाब में बहुत ही कम वर्षा होती है। गरमी की ऋतु में यह प्रदेश आग की भट्टी बन जाता है। जून मास में दिन का तापक्रम १२० अंश फारेनहाइट से भी अधिक हो जाता है। जनवरी और फ़र्वरी महीने में ज़ोर का पाला पड़ता है। और रात का तापक्रम संहसलांश या फ्रीज़िंग पाइन्ट से भी नीचे गिर जाता है। पर दिन का तापक्रम सरदी में भी कभी कभी ७५ अंश फारेनहाइट से अधिक हो जाता है। पंजाब की जलवायु प्रायः सुखद होने से बहुत ही स्वास्थ्यकर है। पर खेती के लिए सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।

नहरें

नदियों के पास खादर की ज़मीन बहुत अच्छी नहीं है पर बाढ़ का पानी इस ज़मीन को काफ़ी तर रखता है। इस ओर कुएं भी बहुत कम गहरे होते हैं वे प्रायः ७ फुट से २० फुट तक गहरे होते हैं। इस ज़मीन में खेती तो आसानी से हो जाती है पर अच्छी मिट्टी के बह जाने से फ़सलें अच्छी नहीं होती हैं। नदी से दूर बांगर या मंझा की ज़मीन अच्छी है पर यहाँ २५ फुट से लेकर ७० फुट तक गहरे कुएं खोदने पड़ते हैं। आजकल दो नदियों के बीच द्वाबा का ऊंची और उपजाऊ ज़मीन में
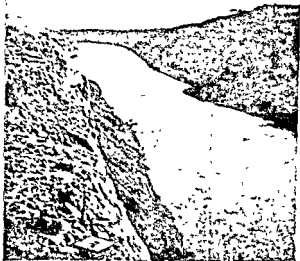
मगला कट, ऊपरी झेलम-नहर

नहरों से सिंचाई होती है। केवल उत्तरी भाग में पहाड़ के पास वाले मैदान में अच्छी वर्षा होने से सिंचाई की आवश्यकता नहीं है। दक्षिणी-

पूर्वी भाग में जब अच्छी वर्षा हो जाती है तब बिना सिंचाई किये ही फसलें

पंजाब के प्राकृतिक विभाग
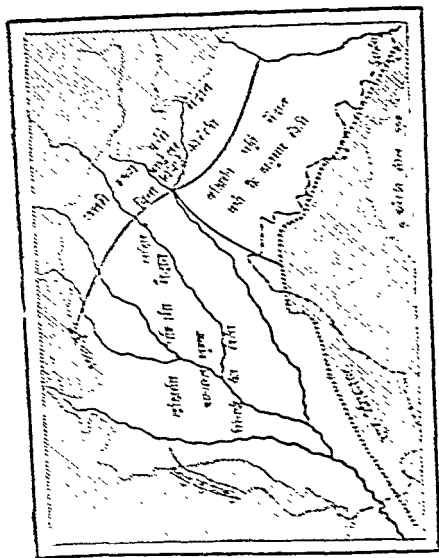
उग आती है। इस प्रकार पंजाब का दक्षिणी-पश्चिमी मैदान ही ऐसा

है जहाँ प्रायः सभी फसलें सिंचाई पर निर्भर रहती हैं। पंजाब की प्रधान नहरें इस प्रकार हैं:—

झेलम और चनाब नदियों के बीच वाले जच द्वाबा में अपर झेलम और लोअर झेलम दो नहरें हैं। इसी प्रकार रचना (रावी और चनाब के बीच के) द्वाबा में अपर चनाब और लोअर चनाब नहरें २० लाख एकड़ से ऊपर ज़मीन सींचती हैं। बारी द्वाबा (ब्यास और रावी के बीच में) अपर बारी द्वाब नहर और लोअर बारी द्वाब नहरें हैं। सतलज के दक्षिण पूर्व में सरहिन्द नहर से सिंचाई होती है। अधिक पूर्व अथवा यमुना नदी के पश्चिम में पश्चिमी यमुनानहर है। इन बड़ी बड़ी स्थायी नहरों के अतिरिक्त बहुत सी छोटी छोटी नहरों से बाढ़ के दिनों में सिंचाई होती है।

उपज

पंजाब के जिन पहाड़ी भागों में खेती नहीं हो सकती है उनमें वन हैं। मैदान के अधिकतर भागों में खेती होती है। जहाँ कहीं ऊँची ज़मीन में सिंचाई के साधन नहीं हैं अथवा जहाँ रेह है वहीं ऊसर है। पर दक्षिणी-पश्चिमी पंजाब में प्रायः रेगिस्तान है। केवल अच्छे भागों में ढोर पाले जाते हैं। पंजाब का शुष्क जलवायु गेहूँ के लिए बड़ी अच्छी है। गेहूँ ही यहाँ की प्रधान फसल है। वैसे यहाँ जौ, मकई, ज्वार, बाजरा, धान, कपास और ईख की भी फसलें उगाई जाती हैं।

मनुष्य और पेशे

पंजाबी लोग हाथ डील में लम्बे और मज़बूत होते हैं। फौजों में पंजाबी सिपाही बड़े नामवरी लिए हुए हैं। यहाँ लगभग आधे लोग मुसल्मान हैं। शेष $\frac{1}{4}$ हिन्दू और $\frac{1}{4}$ सिक्ख हैं। सभी लोगों का प्रधान पेशा खेती है। यहाँ के गल्लेलिये भी प्रसिद्ध हैं। कुछ लोग नमक की खानों से नमक निकालने, और लोहा बनाने का काम करते हैं। यहाँ कारखाने

केवल ५५० हैं। अधिकतर कारखाने कपास ओटने, और रुई दबाने या कपड़ा बुनने का काम करते हैं। हाथ से कपड़ा बुनने का काम प्रायः हर गाँव में होता है। कहीं कहीं कम्बल भी बुने जाते हैं। अमृतसर आदि स्थानों में रेशम बुनने और शाल बनाने का भी काम होता है।

नगर और मार्ग

पंजाब का प्रधान पेशा खेती है इसलिए प्रायः ९० फ़ी सदी लोग छोटे छोटे गाँवों में रहते हैं। पत्थर का अभाव होने से मैदान में अधिकतर घर कच्चे होते हैं। शत्रुओं से बचने के लिए घर पास पास बनाये जाते हैं। केवल १० फ़ी सदी लोग ऐसे शहरों या क़स्बों में रहते हैं जिनकी आबादी ५,००० से ऊपर है। प्राचीन समय के शहर प्रायः ऐसे स्थानों पर बसाये गये जहाँ पर कोई न कोई प्रसिद्ध मार्ग नदियों को पार करता है। झेलम, लाहौर और थानेश्वर शहर ग्रांडट्रंक रोड पर ऐसे शहर हैं जहाँ से क्रमशः झेलम, रावी और सरस्वती नदियाँ पार की जाती थीं। इसी प्रकार जालंधर और सरहिन्द शहरों की स्थिति छोटी-छोटी काली, वेही और चोया धाराओं को पार करने में अनुकूल पड़ती थी। अधिक दक्षिणी मार्ग में सिन्ध नदी पर डेराइस्माइलख़ाँ और डेरा ग़ाज़ीख़ाँ और (चनाब नदी पर) शेरकोट और मुल्तान थे। पहाड़ों के पास वाले उत्तरी मार्ग में स्यालकोट (चनाब के पास) और पठानकोट थे। ये नाम नये हैं पर इनकी स्थिति प्राचीन है।

लाहौर

इस समय भी पंजाब का सब से बड़ा (२½ लाख जन संख्या) शहर है। यहाँ कई रेलवे लाइनों का जंक्शन है। पास ही मुग़लपुरा में रेल का बड़ा भारी कारख़ाना है और मियाँमीर में भारी छावनी है। केन्द्रवर्ती स्थिति के कारण लाहौर शहर न केवल पुराने समय में राजधानी था वरन् आजकल भी यह शहर पंजाब प्रान्त की राजधानी है।

यहाँ कई कालेज और एक विश्वविद्यालय है। यहाँ सोने चाँदी के गोट
का काम होता है। चमड़ा आदि के कई कारख़ाने भी हैं।

अमृतसर

लाहौर से ३३ मील पूर्व में अमृतसर शहर है जो सिक्खों का
पवित्र स्थान है। सरोवर से घिरा हुआ सिक्ख-मन्दिर बड़ा ही सुहावना
है। यहाँ कई रेशम और शाल दुशाला तयार करने का काम होता है।
इस नगर में स्थित जलियानवाला बाग़ के हत्याकाण्ड ने १९२० के असह
योग आन्दोलन को देश भर में फैला दिया।

मुलतान

लाहौर से प्रायः पौने दो सौ मील दक्षिण-पश्चिम में मुल्तान
शहर चनाब नदी के बायें किनारे के पास स्थित है। इस शहर की
स्थिति व्यापार के लिए बड़ी अच्छी है। यहाँ रुई और रेशम का अच्छा
काम होता है।

रावलपिंडी

यह नया शहर है पर उत्तरी भारत में सब से बड़ी छावनी है।

लायलपुर

यहाँ गेहूँ की बड़ी मंडी है। गेहूँ करांची को भेजा जाता है।

अम्बाला

यह नया शहर व्यापार तथा छावनी के लिए मशहूर है।

स्यालकोट

लाहौर के उत्तर में काश्मीर की सीमा पर [illegible] व्यापार और
[illegible]

[illegible]

[illegible]

दिल्ली का चाँदनी चौक
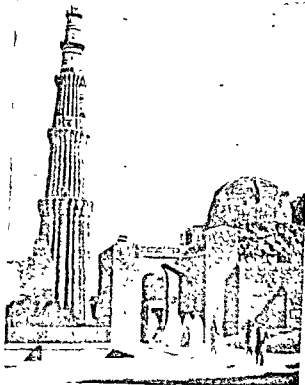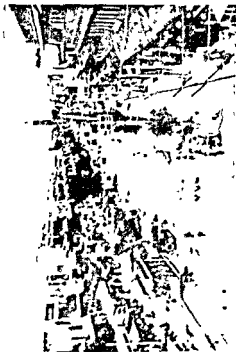
यहाँ से प्रति सप्ताह लन्दन को डाक का हवाई जहाज़ छूटता है। इसी

दिल्ली की महत्त्वपूर्ण स्थिति को सूचित करने वाले भारतवर्ष के तीन प्रधान मार्ग

प्रकार एक हवाई जहाज़ प्रति सप्ताह लन्दन से डाक लेकर यहाँ आता है।

इक्कीसवाँ अध्याय

बम्बई-प्रान्त

बम्बई-प्रान्त (क्षेत्रफल १,८३,००० वर्ग मील, जनसंख्या २ करोड़ ११ लाख) हिन्दुस्तान भर में ब्रह्मा को छोड़ कर सबसे बड़ा प्रान्त है। यह प्रान्त उत्तर में सिन्ध (२८ ३५ अक्षांश) से लेकर दक्षिण में कनारा ज़िले (१४ ५३ अक्षांश) तक १०२९ मील लम्बा है। इसका सबसे अधिक पश्चिमी स्थान मुंज अक्षांश ६६ ४० पूर्वी देशान्तर में और सबसे अधिक पूर्वी स्थान ७६ ३० पूर्वी देशान्तर में स्थित है। पर इसका आकार ऐसा विषम है कि इसकी चौड़ाई कहीं भी ३०० मील से अधिक नहीं है। बम्बई प्रान्त उत्तर में बलोचिस्तान से उत्तर-पश्चिम में पंजाब और राजपूताना से, पूर्व में मध्यभारत की रियासतें मध्यप्रान्त, बरार, और हैदराबाद की रियासत से घिरा हुआ है। इसके दक्षिण में मैसूर राज्य और मद्रास प्रान्त का दक्षिणी कनारा ज़िला है। बम्बई प्रान्त के पश्चिम में अरब सागर (अरब) समुद्र है। इस विभाग प्रान्त में चार बड़े बड़े प्राकृतिक प्रदेश शामिल हैं—

१—सिन्ध प्रान्त या भारत में निचली सिन्ध-घाटी का प्रथम कुछ भाग है।

२—कच्छ, काठियावाड़, बड़ौदा और गुजरात।

३—पश्चिमी तट का आर्द्र प्रदेश जो पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच में स्थित है।

४—दक्षिणी लावा या काली मिट्टी का प्रदेश जो पठार का ही अंग है।

सिन्ध

सिन्ध प्रान्त का राजनैतिक सम्बन्ध बम्बई प्रान्त से अवश्य है। इस सम्बन्ध का कारण यह था कि जब सन् १८४३ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सिन्ध को छीना, उस समय पंजाब में सिक्खों का राज्य था। इसलिए सिन्ध को बम्बई प्रान्त में ही मिला दिया गया। पर भौगोलिक दृष्टि से यह (सिन्ध) प्रान्त पंजाब से अधिक मिलता जुलता है।

सिन्ध का मुल्क, पहाड़ी और निचला मैदान बलोचिस्तान के पठार और राजपूताना के थार-रेगिस्तान के बीच में घिरा हुआ है। सिन्ध नदी प्रायः इसके बीच में होकर बहती है। सिन्ध नदी ने इस प्रान्त पर वही कृपा की है जो नील नदी ने मिस्र देश पर की है। उत्तरी पूर्वी अफ्रीका और अरब के मरुस्थल की रुकावट के कारण दक्षिणी-पश्चिमी मानसून (मौसमी हवा) इस ओर अधिक पानी नहीं ला पाती है। अरब के ऊपर में यदि हवा कुछ पानी ले भी आवे तो सूर्य की विकराल गर्मी और किसी पहाड़ के अभाव के कारण यहाँ पानी बरसने नहीं पाता है। इसीलिए साल भर में इस प्रान्त में पाँच इंच से भी कम वर्षा होती है।

ऐसी दशा में हिमालय की बरफ़ से पिघले हुए पानी की बाढ़ लाकर सिन्ध ने सचमुच इस प्रदेश को जीवन प्रदान किया है। यहाँ के लोग वर्षा पर निर्भर नहीं रहते हैं। समतल मैदान में बाढ़ के पानी का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए यहाँ के लोगों ने बहुत

२—कच्छ, काठियावाड़, बड़ौदा और गुजरात।

३—पश्चिमी तट का आर्द्र प्रदेश जो पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच में स्थित है।

४—दक्षिणी लावा या काली मिट्टी का प्रदेश जो पठार का ही अंग है।

सिन्ध

सिन्ध प्रान्त का राजनैतिक सम्बन्ध बम्बई प्रान्त से अवश्य है। इस सम्बन्ध का कारण यह था कि जब सन् १८४३ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सिन्ध को छीना, उस समय पंजाब में सिक्खों का राज्य था। इसलिए सिन्ध को बम्बई प्रान्त में ही मिला दिया गया। पर भौगोलिक दृष्टि से यह (सिन्ध) प्रान्त पंजाब से अधिक मिलता जुलता है।

सिन्ध का खुश्क, कछारी और निचला मैदान बलोचिस्तान के पठार और राजपूताना के थार-रेगिस्तान के बीच में घिरा हुआ है। सिन्ध नदी प्रायः इसके बीच में होकर बहती है। सिन्ध नदी ने इस प्रान्त पर वही कृपा की है जो नील नदी ने मिस्र देश पर की है। उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका और अरब के मरुस्थल की रुकावट के कारण दक्षिणी-पश्चिमी मानसून (मौसमी हवा) इस ओर अधिक पानी नहीं ला पाती है। भाप के रूप में यदि हवा कुछ पानी ले भी आवे तो सूर्य की विकराल गर्मी और किसी पहाड़ के अभाव के कारण यहाँ पानी बरसने नहीं पाता है। इसीलिए साल भर में इस प्रान्त में पाँच इंच से भी कम वर्षा होती है।

ऐसी दशा में हिमालय की तरफ से पिघले हुए पानी की बाढ़ लाकर सिन्ध ने सचमुच इस प्रदेश को जीवन प्रदान किया है। यहाँ के लोग वर्षा पर निर्भर नहीं रहते हैं। समतल मैदान में बाढ़ के पानी का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए यहाँ के लोगों ने बहुत

प्राचीन समय से ही नदी से नहर निकालने का प्रयत्न किया है। इन

सिन्ध प्रान्त की नहरें और रेल
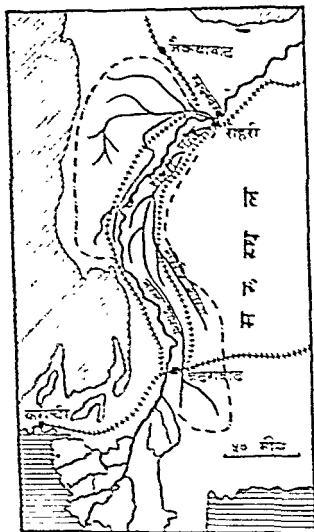
नहरों से सिंचाई हो जाने के कारण नदी के किनारे से कुछ दूर तक [illegible] नहीं हैं पर जिन दिनों में बाढ़ का पानी सूख जाता है उन

दिनों में कोई फसल नहीं हो सकती है। इस प्रकार नदी के आस पास का प्रदेश सब कहीं हरा भरा मिलता है। पर नदी से दूर जाने पर विकराल रेगिस्तान मिलता है। कहीं कहीं पुरानी सूखी हुई नहरें और प्राचीन शहरों* के निशान मिलते हैं। सिन्ध नदी बड़ी चंचल है। काँप की मिट्टी लाकर यह लगातार नई ज़मीन बढ़ाती रहती है। अब से प्रायः १२०० सौ वर्ष पहले जब अरबी लोगों ने इस प्रान्त पर हमला किया था तो समुद्र तट पर देवल नाम का सुन्दर नगर था। पर अब इस नगर की स्थिति कई मील भीतर की ओर पड़ गई है। सिन्ध प्रान्त में चौड़ी सूखी और गहरी घाटियाँ भी अक्सर मिलती हैं इनसे सिद्ध होता है कि सिन्ध नदी अपनी धारा को भी बदलती रही है किसी समय में यह नदी वर्तमान दशा से कई सौ मील दक्षिण-पूर्व की ओर कच्छ की खाड़ी में गिरती थी।

हाल में नदी के उतार मुहाने से प्रायः २०० मील ऊपर सक्खर नगर के नीचे नदी के आरपार एक विशाल बाँध बनाया गया है। इस बाँध के बन जाने से नदी के पानी से बड़ी बड़ी नहरों के द्वारा दूर दूर तक सिंचाई की जा सकती है।

उपज

सिन्ध की वर्तमान काँप की मिट्टी से बनी होने के कारण बड़ी उपजाऊ है। केवल पानी की कमी है। जहाँ कहीं सिंचाई हो जाती है वहाँ अच्छी फसलें होती हैं। गेहूँ और कपास यहाँ की मुख्य फसलें हैं। थोड़ा बहुत धान और दूसरा अनाज भी होता है।
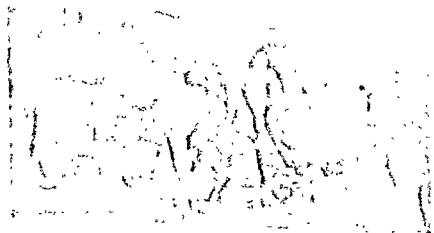
यहीं नदी के पूर्वी किनारे पर हैदराबाद का शहर है। दूसरी ओर पश्चिमी किनारे पर छोटा नगर कोटरी है। हैदराबाद से एक रेल थार रेगिस्तान को पार करके लूनी जंकशन में बम्बे-बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे से मिल जाती है। दूसरी रेल सिन्ध नदी के किनारे किनारे रोहरी
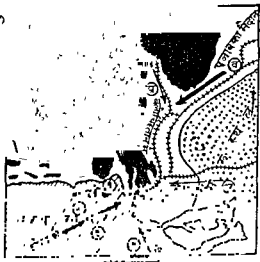
कराची में कई जल और स्थल-मार्ग मिलते हैं

होती हुई पंजाब को गई है। रोहरी और सक्खर के बीच में एक दूसरा पुल है। यहाँ नदी के बीच में एक छोटा सा द्वीप है। इसी के सहारे से बड़ा ही अद्भुत झूले का (सस्पेंशन) पुल बना है। सक्खर शहर बड़ा ही सुन्दर व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ से एक रेलवे बोलनदर्रे से क्वेटा को गई है। दूसरी रेलवे सक्खर (रूक) जंकशन से सिन्ध के दायें किनारे होकर कराची की ओर जाती है।

रेतीली है। पानी भी कम बरसता है। लेकिन दक्षिण की ओर बढ़ने पर अच्छी ज़मीन होती जाती है। नर्मदा के आस पास सर्वोत्तम ज़मीन है। इधर पानी भी खूब बरसता है। इसलिए दक्षिणी गुजरात में चावल, ईख, कपास आदि सभी फ़सलें होती हैं।

नगर

अहमदाबाद साबरमती नदी के किनारे गुजरात के प्रायः मध्य भाग में स्थित है। इसी केन्द्रवर्ती स्थिति के कारण अहमदाबाद सदा पुराने समय से गुजरात की राजधानी रहा है। कपास उगानेवाले प्रदेश के बीच में होने से यहाँ सूत कातने और कपड़ा बुनने के कई कारखाने हैं। कपड़े के अतिरिक्त यहाँ चमड़े और काग़ज़ का भी काम होता है। नदी के दूसरे किनारे पर एक रम्य स्थान पर महात्मा गान्धीजी का सत्याग्रह-आश्रम है।

सूरत

यह नगर ताप्ती नदी के मुहाने के पास स्थित है। अब से प्रायः डेढ़ सौ वर्ष पहले यह नगर हिन्दुस्तान का एक प्रधान बन्दरगाह था। लेकिन नदी ने मिट्टी लाकर मुहाने को उथला बना दिया। इसलिए जैसे जैसे बम्बई की बढ़ती हुई, वैसे वैसे सूरत का महत्त्व घटता गया।

बड़ौदा

यह नगर बड़ौदा राज्य की राजधानी है। यहाँ भी रुई के कई कारखाने हैं।

यह तीनों ही नगर बम्बई से आनेवाली बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे के स्टेशन हैं। अहमदाबाद से रेल की एक शाखा काठियावाड़ को गई है।

पश्चिमी तटीय प्रदेश

बम्बई का मेडिकल कालेज

विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन (बम्बई)
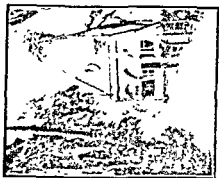
बम्बई इस ओर सब से बड़ा और सारे हिन्दुस्तान में दूसरे नम्बर का शहर है। शहर इसी नाम के द्वीप पर बसा है। इसकी आबादी १० लाख से ऊपर है। स्थल से घिरी हुई खाड़ी ने यहाँ के बन्दरगाह
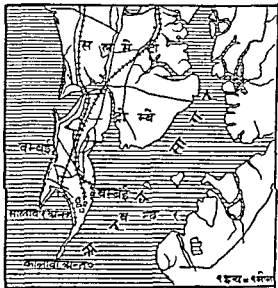
बम्बई

को अत्यन्त सुरक्षित बना दिया है। बम्बई से भीतर की ओर बढ़ने से मार्ग में पश्चिमी घाट पड़ते हैं। पर ये इतने नीचे और कटे फटे हैं कि उनमें होकर सुगम मार्ग बना लिये गये हैं। बम्बई शहर रेल द्वारा दिल्ली, इलाहाबाद, कलकत्ता और मद्रास आदि सभी मशहूर शहरों से जुड़ा हुआ है। इसलिए बम्बई का बन्दर हिन्दुस्तान का प्रवेश
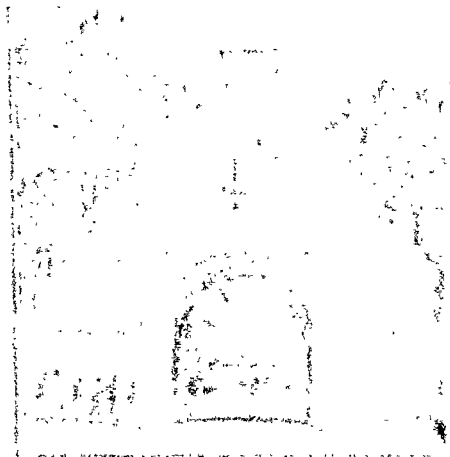
नगरों को बिजली के ज़ोर से चलने वाली इलेक्ट्रिक रेलें छूटा करती हैं।

पश्चिमी तट पर बम्बई के बाद दूसरा उत्तम बन्दरगाह मोरमगोआ है। यह शहर और इसके पीछे का देश पुर्तगाल वालों के अधिकार में हैं।

पठार

तटीय प्रदेश के भीतर पठार का प्रदेश हिन्दुस्तान में सब से अधिक पुराना भाग है। करोड़ों वर्ष पहले यहाँ से इतना लावा निकला कि उसने २ लाख वर्गमील के प्रदेश को बिल्कुल ढक लिया। लावा के पहले देश का कैसा दृश्य था इसका पता लगाना भी कठिन हो गया। केवल कुछ ही स्थानों पर नर्मदा आदि नदियों ने लावा की गहरी तहों को काट कर नीचे की कड़ी और पुरानी तहों को प्रगट किया है। बम्बई प्रान्त के पठार की अधिकतर ज़मीन इसी लावा की काली मिट्टी से बनी है। दक्षिण की ओर की ज़मीन कुछ कुछ लाल है।

इस पठार की औसत ऊँचाई दो दो हज़ार फुट है। पर पश्चिमी भाग पठार के धरातल से प्राय: एक हज़ार फुट अधिक ऊँचा है। इसलिए जब दक्षिणी-पश्चिमी हवायें पहाड़ से उतर कर इधर आती हैं तो वे बहुत कम पानी बरसाती हैं। इस ओर सब कहीं साल में ४० इंच से कम ही पानी बरसता है। कुछ मध्यवर्ती भागों में २० इंच से भी कम पानी बरसता है। समुद्र दूर होने के कारण इस ओर ग्रीष्म में अधिक गरमी और शीतकाल में अधिक ठंड पड़ती है। यदि हम पश्चिमी घाट की चोटी पर चढ़कर अरब सागर की ओर मुँह करें तो सब कहीं हरा भरा दृश्य दिखाई देता है। पर यदि हम पूर्व की ओर मुँह फेर लें तो सब कहीं प्राय: शुष्क प्रदेश नज़र आता है।

पर काली ज़मीन में नमी रखने की शक्ति अधिक होती है। इसी लिए ऊपर की अपेक्षा दक्षिण की लाल भूमि में तालाबों से सिंचाई का अधिक प्रबन्ध है।

बाईसवाँ अध्याय

मद्रास

मद्रास-प्रान्त (१, ४१,०७५ वर्गमील, जन संख्या ४ करो
१० लाख) का समुद्र-तट बङ्गाल की खाड़ी की ओर १२०० मील लम्ब
है। अरब सागर की ओर मद्रास प्रान्त के समुद्र तट की लम्बाई केव
४५० मील है। इस प्रकार यह प्रान्त पूर्व को ओर ८ अक्षांश से २
उत्तरी अक्षांश तक और पश्चिम की ओर ८ अक्षांश से १४ उत्तरी अक्षा
तक फैला हुआ है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई १००० मील औ
बड़ी से बड़ी चौड़ाई ३८० मील है। स्थल की ओर यह प्रान्त उड़ीसा
मध्य प्रान्त, हैदराबाद के राज्य और बम्बई प्रान्त को छूता है। शेष स
ओर समुद्र है। यदि चिल्का झील से एक रेखा कृष्णा और तुंगभद्र
नदियों को छूती हुई पश्चिमी-घाट के उस पार अरब सागर तक खींच
जावे तो इस रेखा के दक्षिण में सारा मद्रास प्रान्त, मैसूर और कुर्ग आ
जायगा।

मद्रास प्रान्त में निम्न प्राकृतिक प्रदेश शामिल हैं—

(१) मलाबार अथवा पश्चिमी तट।

(२) कर्नाटक।

अ फ गा नि स्ता न
ति ब्ब
अ र ब
सा ग र
ब गा ल
कराची
ईस्ट इंडियन रेलवे
ईस्टर्न बंगाल रेलवे

बंगाल की खाड़ी
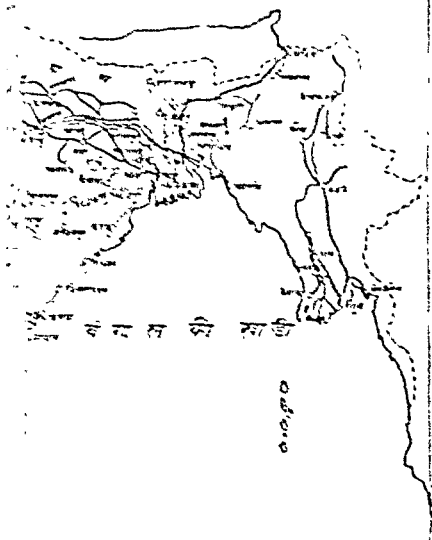
जाता है। जहाँ तहाँ सुपारी और काली मिर्च के बगीचे हैं। इस उपज को बाहर भेजने के लिए अभी तक इस ओर कोई बड़ा बन्दरगाह न था। हाल में कोचीन, ट्रावनकोर और मद्रास-सरकार की सम्मति से कोचीन बन्दरगाह को गहरा करने की योजना की गई है। पहले बन्दरगाह के मुहाने पर बालू और मिट्टी की रुकावट थी। अब उसमें प्रायः दो मील लम्बी, ४०० फुट चौड़ी और ३५ फुट गहरी नहर खोद दी गई है। इसमें होकर बड़े से बड़े जहाज़ भीतर आ सकेंगे। यह प्रदेश अत्यन्त घना बसा है। ट्रावनकोर में प्रति वर्गमील में १२०० मनुष्य रहते हैं। अधिकतर आबादी छोटे छोटे गाँवों में रहती है। केवल तट के पास कुछ शहर हैं।

त्रिवेन्द्रम शहर ट्रावनकोर राज्य की राजधानी है और रेल द्वारा मद्रास से जुड़ा हुआ है। एलप्पी और क्विलन नगर भी ट्रावनकोर राज्य में ही स्थित हैं और चटाई और रस्सी बनाने के लिये प्रसिद्ध हैं।

कालीकट पुर्तगालियों के आने के पहले एक बड़ा बसा हुआ नगर था और मसाले के व्यापार के लिये प्रसिद्ध था। इस समय भी यह नगर मद्रास प्रान्त के बड़े नगरों में गिना जाता है। कोचीन शहर (बन्दरगाह की नई योजना के अनुसार) इस ओर सब से बड़ा नगर हो जायगा। मंगलोर एक साधारण नगर है और रेल द्वारा मद्रास से जुड़ा हुआ है।

कर्नाटक

मद्रास प्रान्त का कर्नाटक प्रदेश कुमारी-अन्तरीप से मद्रास शहर के उत्तर में प्राय १० [illegible] अक्षांश तक [illegible] गया है। समुद्र-तट से मील [illegible] और कोई [illegible] [illegible] गया है। इसको [illegible] [illegible] समुद्र तट के [illegible] है। [illegible] की ओर पर्वतीय [illegible] है। [illegible] रुकावट के कारण दक्षिणी-

पश्चिमी हवाओं से ग्रीष्म ऋतु में पानी नहीं बरसने पाता है। पर जब शीतकाल में उत्तरी-पूर्वी मानसून लौट कर इस तट पर टकराती है तो अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर के महीनों में ४० इंच से ऊपर वर्षा हो
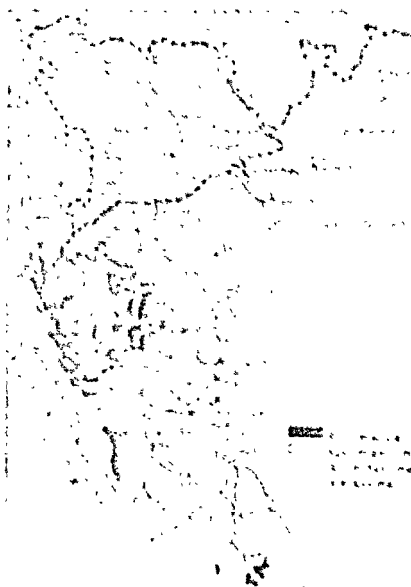
दक्षिण भारत के एक गाँव का दृश्य

जाती है। पर जैसे जैसे यह हवा तट से भीतर की ओर बढ़ती है वैसे वैसे इसकी भाप कम होती जाती है। इसीसे भीतर की ओर पठारी भाग में कम पानी बरसता है। इस प्रकार इस भाग में वर्षा की कमी है लेकिन ज़मीन उपजाऊ है। इसलिये कर्नाटक प्रान्त में सिंचाई का प्रबन्ध किया गया है। पेरियार प्रोजेक्ट सिंचाई की विचित्र योजना है। पहले पेरियार नदी (ट्रावनकोर में) पश्चिमी घाट की प्रचुर वर्षा अरब सागर में बहा ले जाती थी। फिर पश्चिम की ओर पेरियार की घाटी में एक बड़ा बाँध बना दिया गया। इससे ऊपरी घाटी एक विशाल

झील बन गई। फिर पश्चिमी घाट में सुरङ्ग बनाई गई। इसी सुरंग द्वारा पश्चिमी घाट का पानी मद्रास प्रान्त की ओर लाया गया। अब यह पानी मैदुरा या मदुरा के आस पास हजारों एकड़ समतल भूमि को सींचने में खर्च होता है। अर्काट के दक्षिण और मद्रास शहर के पश्चिम में, पोइनी, पालार और चेयार नाम की छोटी छोटी नदियों से सिंचाई होती है। पर सिंचाई का सब से बड़ा प्रबन्ध कावेरी डेल्टा में है। यहाँ सैकड़ों वर्षों से सिंचाई का काम होता आया है। यहाँ लगभग १० लाख एकड़ ज़मीन सींची जाती है।

तटीय मैदान की प्रधान फसल चावल है। कपास, मूँगफली, ईख और तम्बाकू भी बहुत होती है। ऊँचे भागों में जहाँ सिंचाई की सुविधा नहीं है वहाँ ज्वार और बाजरा उगाया जाता है। अधिक ऊँचे ढालों पर वन हैं। टीक (साल) और चन्दन के पेड़ अत्यन्त मूल्यवान हैं। साल के सर्वोत्तम वन कोयम्बूटर में और नीलगिरि के ढालों पर हैं। नेलोर ज़िले में बहुत सा अभ्रक निकाला जाता है। समुद्र-तट से नमक मिलता है। समुद्र से ही मछली और मोती निकालने का काम भी कई स्थानों में होता है।

इस प्रदेश की भाषा तामिल है और आबादी सब कहीं घनी है। प्रायः प्रति वर्गमील में ४०० मनुष्य रहते हैं।

नगर

मद्रास (जन संख्या ५ लाख) शहर हिन्दुस्तान में तीसरे नम्बर का शहर है। पर यह शहर कलकत्ता या बम्बई से अधिक खुला हुआ है। यहाँ से बम्बई, कालीकट, तूतीकोरन और कलकत्ता को रेलवे लाइनें गई हैं। बकिंघम नहर मद्रास को कृष्णा-डेल्टा और बेजवाड़ा से मिलाती है। पर मद्रास का बन्दरगाह कृत्रिम है। इसका पृष्ठ देश भी अधिक घना नहीं है। इसलिये यहाँ का विदेशी व्यापार अधिक

साफ़ा बुनने और पीतल के बर्तन बनाने के लिये प्रसिद्ध है। त्रिचिनापल्ली और तंजौर भी भीतर की ओर प्राचीन ऐतिहासिक नगर हैं।

उत्तरी सरकार

यह प्रदेश नेल्लोर शहर के पास से आरम्भ होकर उड़ीसा तक चला गया है। इस प्रदेश के बीच में कृष्णा और गोदावरी के विशाल डेल्टा हैं। पश्चिम की ओर पूर्वी घाट की पहाड़ियाँ हैं। उत्तर की ओर महानदी के डेल्टा ने बढ़ते बढ़ते चिल्का झील को समुद्र से अलग कर दिया है। नदियों की काँप से बनी हुई नई जमीन उपजाऊ है। पुरानी पहाड़ियाँ अक्सर नंगी और वीरान हैं। पर किसी किसी पहाड़ी की पुरानी और कड़ी चट्टानों से मूल्यवान खनिज मिलते हैं। विज़गापट्टम के पास बहुत सा मैंगनीज़ निकलता है।

जलवायु

उत्तरी सरकार में कर्नाटक से अधिक वर्षा होती है। यह वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के चलने पर ग्रीष्म-ऋतु में होती है।

उपज

इस प्रदेश की प्रधान फसल चावल है। पर दक्षिण की ओर वर्षा की कमी के कारण ज्वार और बाजरा अधिक होता है और चावल कम होता है। उत्तर की ओर वर्षा की मात्रा बढ़ने से चावल अधिक और ज्वार-बाजरा कम होता है। यहाँ तक कि उड़ीसा की सीमा के पास केवल चावल ही होता है। ज्वार और बाजरा का प्रायः अभाव है। कृष्णा और गोदावरी के डेल्टा में सिंचाई का प्रबन्ध है। इसलिये यहाँ पर वर्षा कम होने पर भी चावल ही उगाया जाता है। कुछ उजाड़ पहाड़ियों और चरागाहों का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के काम आता है। [illegible]
[illegible]
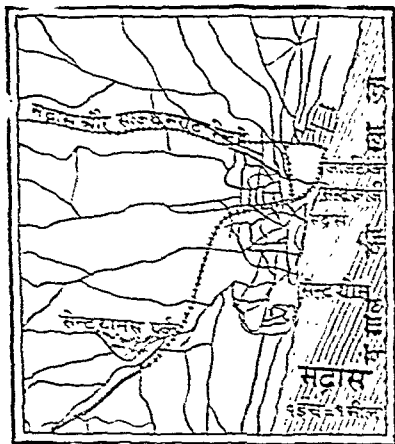
कर्नाटक के तट की तरह उत्तरी सरकार के तट पर भी प्राकृतिक बन्दरगाहों का अभाव है। रेत और उथले पानी के कारण बड़े बड़े जहाज़ों को छोटे छोटे बन्दरगाहों से एक दो मील की दूरी पर ठहरना पड़ता है। इस ओर विज़िगापट्टम का बन्दरगाह कुछ कुछ सुरक्षित है। इसे

विज़िगापट्टम का सुरक्षित बन्दरगाह

सुधारने की भी योजना की जा रही है। कोकेनाडा बन्दरगाह का पृष्ठ प्रदेश बहुत धनी है। गोपालपुर, कलिंगापट्टम, बिमलीपट्टम और मछलीपट्टम दूसरे छोटे छोटे बन्दरगाह हैं जिनमें कुछ कुछ तटीय व्यापार होता है। मद्रास प्रान्त के बेलारी, कर्नूल, कडापा और अनन्तपुर [illegible] और [illegible] और [illegible]

[illegible]

तेईसवाँ अध्याय

पठार के देशी राज्य

हैदराबाद

हैदराबाद का राज्य (८३००० वर्गमील जन संख्या एक करोड़ ४४ लाख) हिन्दुस्तान के देशी राज्यों में सब से बड़ा और धनी है। उत्तर में इस राज्य को पैनगंगा नदी बरार से और पर्णहिता तथा गोदावरी मध्य-प्रान्त से अलग करती हैं। दक्षिण में तुंगभद्रा, कृष्णा नदियाँ और पूर्वी घाट की कुछ पहाड़ियाँ हैदराबाद को मद्रास प्रान्त से अलग करती हैं। पश्चिम में यह राज्य बम्बई प्रान्त से घिरा हुआ है। यह सब का सब राज्य पठार पर स्थित है। इसकी औसत ऊँचाई १२५० फुट है। यहाँ पृथ्वी का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर है। पश्चिमी भाग या मरहठवाड़ा में लावा की काली मिट्टी है और लोगों की भाषा मराठी है। पूर्वी भाग या तेलिंगना की जमीन बड़ी चट्टानों के घिसने से बनी है। इस ओर के लोगों की भाषा तेलगू है।

जलवायु

पठार के मध्य में स्थित होने से यहाँ वर्षा कम होती है। गरम और [illegible] वर्षा का औसत [illegible] इंच है। अधिकतर वर्षा [illegible] ऋतु में

अजन्ता की प्रसिद्ध गुफा

मैसूर

मैसूर राज्य (२९, ५०० वर्ग मील जन संख्या ६६ लाख) चारों तरफ से मद्रास प्रान्त से घिरा हुआ है। यह राज्य दो प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है। पश्चिम की ओर मालनद या पहाड़ी प्रदेश है। पूर्व की ओर मैदान है। मालनद में घास की चाटी वाले वनाच्छादित पर्वत बड़े ही सुन्दर हैं। पश्चिमी घाट की ओर प्रबल वर्षा होती है। पर मध्य में प्रति वर्ष २० इंच से अधिक पानी नहीं बरसता है। शान्त काल

श्रीरङ्गपट्टम कावेरी के एक द्वीप पर बसा है। यहीं हैदरअली की राजधानी थी।

कुर्ग

यह प्रान्त (१५८२ वर्गमील, जन संख्या १ लाख ६३ हज़ार) मैसूर के दक्षिण-पश्चिम में पश्चिमी घाट के ढालों पर स्थित है। १८३३ ई० से कुर्ग अँगरेज़ी राज्य में आ गया। यहाँ साल में प्रायः १२० इंच की वर्षा होती है। इसलिये यह ज़िला अधिकतर वन से ढका है। यहाँ के लोग किसान हैं। धान की खेती के सिवा यहाँ क़हवा और चाय भी होती है। इस ज़िले का प्रबन्ध मैसूर के रेज़ीडेण्ट के हाथ में है जो बङ्गलोर में रहता है। पर उसका सहायक (कमिश्नर) मरकरा में रहता है जो कुर्ग की राजधानी है।

मैदान की ओर ढालू हो गया है। विन्ध्यापर्वत प्रान्त के एक सिरे से दूसरे सिरे को पार करता हुआ गङ्गा के तट पर चुनार तक चला गया

मध्यप्रान्त और मध्यभारत

है। पर यह पर्वत छोटी छोटी पर्वत श्रेणियों में बँट गया है। इसके नाम भी भिन्न हैं। यह मध्य प्रान्त में महादेव और आगे चलकर बुन्देलखण्ड में कैमूर नाम से प्रसिद्ध है [illegible] नर्मदा की ओर एकदम ढालू है। यह गङ्गा की घाटी की ओर क्रमशः ढालू है।

(२) इन प्रदेश के नीचे नर्मदा की तङ्ग घाटी है। यह घाटी समुद्रतल से १,००० फुट ऊँची है। मध्य भाग में यह लगभग २० मील चौड़ी और २०० मील लम्बी है। पर्वतीय प्रदेश में इसकी चौड़ाई बहुत कम हो गई है। कुछ स्थानों में यह प्रपात बनाती है।

(३) सतपुड़ा पर्वत के पठार की ऊँचाई आस पास के मैदान से १,००० फुट और समुद्र-तल से २००० फुट है। पठार की चौड़ाई ४० मील से ७० मील तक है। विन्ध्या के समान सतपुड़ा पर्वत भी मध्यप्रान्त के उत्तरी भाग को पार करता हुआ छोटा नागपुर के पठार में मिल गया है। इसकी मध्यवर्ती श्रेणी महादेव और पूर्वी श्रेणी मैकाल कहलाती है। यह पहाड़ियाँ दक्षिण की ओर एकदम ढालू हैं। पर उत्तर की ओर ये क्रमशः ढालू होती गई हैं। महादेव पर्वत पर ही लगभग ४,००० फुट की ऊँचाई पर पचमढ़ी नगर स्थित है। मैकाल पर्वत की सर्वोच्च चोटी (अमरकंटक) ३५०० फुट ऊँची है।

(४) नागपुर का विशाल और ऊँचा मैदान मध्यप्रान्त के बीच में स्थित है। इसका ढाल दक्षिण में वार्धा और वानगङ्गा की घाटियों की ओर है। पूर्व में इसका ढाल छत्तीसगढ़ी मैदान में महानदी घाटी की ओर हो गया है।

(५) दक्षिणी कोने में गोदावरी के बायें किनारे पर ऊँचा नीचा जंगली प्रदेश है। यहीं बस्तर का देशी राज्य है।

(६) वार्धा नदी के पश्चिम में (सतपुड़ा की) ग्वालीगढ़ और (दक्षिण में) अजन्ता पर्वतश्रेणी तथा पेन गङ्गा से घिरा हुआ बरार का उपजाऊ प्रदेश है।

जलवायु

ऊँचाई के कारण मध्यप्रान्त का तापक्रम अधिक विकराल नहीं होने पाता है। वैसे यहाँ पचमढ़ी में ३० अंश फारेनहाइट से

(दक्षिण की ओर चाँदा में) ११९ अंश फारेनहाइट तक ताप
देखा गया है। यहाँ की औसत वार्षिक वर्षा प्रायः ५० इंच है।
से यहाँ की पहाड़ियाँ अक्सर घास या वन से ढकी हुई दि
देती हैं। पर इन पहाड़ियों ने प्रान्त की प्रायः ½ ज़मीन घेर र
है। केवल ½ ज़मीन खेती के लिये अनुकूल है। पर घाटियों में उप
काली मिट्टी है। यहाँ कपास और धान की खेती होती है।
भागों में ज्वार, बाजरा, दाल, तिलहन और गेहूँ होता है। छत्तीस
के उपजाऊ मैदान में धान और गेहूँ बहुत होता है। बरार का प्र
कपास के लिये सर्वप्रसिद्ध है।

इस प्रान्त की अधिकतर भूमि वन और पर्वत से घिरी होने
कारण जनसंख्या कम है। बरार और नागपुर की ओर मराठी भाषा
शेष भागों की प्रधान भाषा हिन्दी है। पूर्व की ओर कुछ लोग उ
बोलते हैं। पहाड़ी जातियों की भाषा गोंड है। अधिकतर लोग गाँ
में रहते हैं। शहर कम हैं। लगभग १ लाख की आबादी वाले के
दो (नागपुर और जबलपुर) शहर हैं।

जबलपुर

इस शहर की स्थिति बड़े महत्व की है। यह शहर नर्मदा की
घाटी में सतपुड़ा से उत्तर की ओर समुद्र तल से १२४० फुट
ऊँचाई पर बसा है। यह स्थान ऐसा है जहाँ से उत्तर की ओर
की घाटी में इलाहाबाद को, दक्षिण की ओर नागपुर और (छत्ती
गढ़ी मैदान में) बिलासपुर को सुगम मार्ग गये हैं। पश्चिम की ओ
नर्मदा के किनारे किनारे और भी अधिक अच्छा मार्ग गया है।
से छिवकी (इलाहाबाद) होकर कलकत्ता जानेवाली रेल इसी रास्ते
जाती है।

और मिट्टी के बरतन अच्छे मिलते हैं। जबलपुर के पास ही नर्मदा का प्रपात और संगमरमर की खान है।

नागपुर

यह शहर सतपुड़ा के दक्षिण में एक विशाल मैदान के मध्य में स्थित है। पहले यह शहर भोंसला राज्य की राजधानी था। आजकल यह वर्तमान मध्यप्रान्त की राजधानी है। कपास के प्रदेश में स्थित होने से यहाँ कई पुतलीघर हैं। यह नगर बम्बई से कलकत्ता जानेवाले सीधे मार्ग पर स्थित है।

नागपुर से १८० मील पूर्व उपजाऊ छत्तीस गढ़ी मैदान के बीच में सब से बड़ा नगर रायपुर है। खंडवा शहर नया है। यहाँ पर ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे और अजमेर से आनेवाली बम्बे बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे का जंकशन है।

बरार प्रदेश में अमरावती शहर कपास का केन्द्र है और रेल द्वारा जुड़ा हुआ है।

पचीसवाँ अध्याय

मध्यभारत

मध्यभारत (४८,००० वर्ग मील, जनसंख्या १ करोड़) में ही १५०० फुट ऊँचा मालवा-पठार शामिल है। इस पठार का क्षेत्रफल प्राय: ३५,००० वर्गमील है। ग्वालियर के उत्तर-पूर्व में बुन्देलखंड का प्रदेश कुछ नीचा है। इसका क्षेत्रफल १८,००० वर्गमील है। विन्ध्या और सतपुड़ा श्रेणियों के समीप मध्यभारत के पर्वतीय प्रदेश का क्षेत्रफल प्राय: २५,००० वर्गमील है। संयुक्त प्रान्त की झाँसी कमिश्नरी ने मध्यभारत को दो भागों में बाँट दिया है। इन दोनों में पश्चिमी भाग अधिक बड़ा है। यह भागों का ढाल उत्तर या उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ का प्राय: सब पानी चम्बल, सिन्ध, बेतवा और केन नदियों द्वारा यमुना में बह जाता है। टोंस और सोन नदियाँ सीधी गंगा नदी में जा मिलती हैं। मध्यभारत के केवल १०० मील में नर्मदा अपना पानी पश्चिम की ओर बहाती है। इस प्रदेश में केवल ३० या ४० इंच पानी बरसता है। [illegible] भाग की नदियों में अधिक पानी नहीं रहता है। पर पहाड़ी भूमि होने के कारण वर्षा का अधिकांश पानी नदियों में बह जाता है। इस [illegible] नदियों में [illegible] बाढ़ आ जाती है। [illegible]

[illegible]

मध्यभारत में १४८ रियासतें शामिल हैं। इनमें ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल, धार, देवास, ओरछा, दतिया और रीवां प्रधान हैं।

ग्वालियर राज्य

[illegible]

हिम-प्रदेश का एक साधारण दृश्य

मील लम्बा नल (पाइप) लगाया है। दूसरी कम्पनियाँ अपना तेल टंकीनुमा नावों में रंगून के कारखानों में साफ़ होने के लिये पहुँचाती हैं।

ब्रह्मा का शुष्क प्रदेश घनी होने के अतिरिक्त बहुत ही स्वास्थ्यकर है। इसी से मांडले, अमरपुरा, आवा, श्वेबो और पगान नगर प्राचीन समय में बरमा की राजधानी बने। इन सब नगरों में मांडले सब से अधिक प्रसिद्ध है। माण्डले शहर इरावदी के किनारे देश के प्रायः मध्य में स्थित है। यहाँ से ब्रह्मा के सभी मार्गों को सुगम मार्ग गये हैं। इरावदी नदी उत्तर की ओर भामो और मिचीना को, और दक्षिण की ओर रंगून को माण्डले से मिलाती है। मिंगे नदी माण्डले के पास ही इरावदी में मिलती है और उत्तर-पूर्व की ओर मिंगे नदी शान पठार में होकर कुनलाङ्ग घाट (सालवीन नदी के किनारे) के लिये मार्ग बनाती है। उत्तर-पश्चिम की ओर चिंदविन नदी वनाच्छादित पर्वतीय प्रदेश में मार्ग खोलती है। माण्डले के पास ही सीताङ्ग-घाटी का उत्तरी सिरा है। आजकल प्रायः इन सब मार्गों में से रेल शुरू गई है। शान-प्रदेश में मिंगे-घाटी के रास्ते से एक रेल माण्डले से लाशियो को गई है। उत्तर की ओर मिचीना जाने वाली रेल आरम्भ से मू-घाटी का अनुसरण करती है। उत्तर-पश्चिम से चिंदविन नदी की ओर माण्डले (सगाईं) से एक रेल मनीवा और एलोन को गई है। सिटाङ्ग घाटी की रेल माण्डले को रंगून से मिलाती है। १८८५ ई० से माण्डले शहर बरमा की राजधानी नहीं रहा। समुद्री मार्ग से ब्रह्मा में घुसने वाले अंगरेज़ों के लिये ऐसे स्थान में राजधानी बनाना अधिक अनुकूल था जहाँ वे अपने जहाज़ों से सहायता पहुँचा सकते थे या जहाँ से संकट के समय जहाज़ों पर चढ़ कर भाग सकते थे। इसीलिये उन्हों ने रंगून में राजधानी बनाई। पर जब उनके पैर जम गये और १८८५ ई० में ब्रह्मा के राजा थीबा के कैद हो जाने पर अपर ब्रह्मा भी अंगरेज़ी राज्य में मिला लिया गया उस समय भी रंगून शहर इस बड़े हुए राज्य

बरसी पृष्ठ-भाग

मक्का का एक साधारण परिवार

है । इरावदी और उसकी सहायक चिंदविन नदियाँ यहाँ से निकल कर दक्षिण की ओर बहती हैं । प्रचुर वर्षा होने से यह प्रदेश घने वनों से ढका हुआ है । इसके कुछ भागों का अब तक ठीक ठीक पता नहीं लगा है । इस प्रदेश में शान लोग बसे हैं । यहाँ अधिकतर पर्वतीय लोगों की बस्तियाँ हैं । इस प्रदेश का अंतिम रेलवे स्टेशन मिचीना है । यहाँ इरावदी की चौड़ाई केवल १०० गज रह जाती है । मगर बहुत गहरी होती है । मिचीना से प्रायः ३०० मील उत्तर में पुटाओ नगर तक सड़कों के द्वारा व्यापार होता है । यहाँ हुकांग घाटी के मार्ग से आसाम-बंगाल रेलवे को ब्रह्मा की (मिचीना-शाखा) रेलवे से जोड़ने का प्रस्ताव था । इस मार्ग में केवल एक पहाड़ी ऐसी थी जो ५,००० फुट ऊँची थी इसमें सुरंग बनाया जा सकता था । पर देश इतना निर्जन, और जंगली था कि इस रेलवे से लाभ की कोई आशा न थी । इसीलिये ब्रह्मा को हिन्दुस्तान से रेल द्वारा जोड़ने का प्रस्ताव स्थगित कर दिया गया ।

मछली का शिकार तथा बन्दरगाहों के लिये बहुत अच्छा है। यहाँ की लकड़ी के कुन्दों से लदे हुए जहाज़ अक्सर यहाँ खड़े रहते हैं। अंडमान का सर्वोत्तम बन्दरगाह पोर्ट ब्लेयर है जो दक्षिणी द्वीप के पूर्व की ओर स्थित है। हिन्दुस्तान के आजन्म कैदियों या बहुत लम्बी सजा वाले कैदियों को रखने के लिये १८५८ ई० में अंग्रेज़ों ने इन द्वीपों पर अधिकार कर लिया। सजा की अवधि पूरी हो जाने पर कुछ स्वतंत्र कैदी यहीं बसने लगे। हाल में मोपला-रिफ्यूजियों को यहाँ बसाने का प्रयत्न किया गया। पर सारी आबादी २९,००० से अधिक नहीं है। इनमें प्रायः २,००० मूल निवासी असभ्य हबशी हैं जिनकी संख्या घटती चली जा रही है। सम्भव है कि कुछ समय में ये लोग समूल नष्ट हो जावें। इन द्वीपसमूहों का प्रबन्ध यहाँ के चीफ़ कमिश्नर के हाथ में है।

उन्नीसवाँ अध्याय

हि न्द म हा
सा ग र

THE
MAHAWELI CANGA
KANDY

की भाँति लंका के पहाड़ भी बहुत कड़ी चट्टानों से बने हैं। अति प्राचीन होने से ये बहुत घिस गये हैं। सब से ऊँची चोटी पिदुरुतल्लागाला केवल ८२९१ फुट ऊँची है। दक्षिण में कुछ कम ऊँची (७३५२ फुट) पर अधिक प्रसिद्ध चोटी समनल या बुद्धपद या आदम की चोटी कहलाती है। इस मध्यवर्ती पर्वतसमूह से चारों ओर को ढाल है। पर दक्षिण की ओर समुद्र-तट पास है। इसलिये उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की ओर ढाल भी अधिक सपाट है। पहाड़ों की ऊँचाई कम होने से यहाँ बरफ़ कभी नहीं पड़ती है। पर पानी भारी बरसता है। लेकिन द्वीप का सर्वोच्च भाग प्रायः मध्य में स्थित है। इसलिए यहाँ की बरसाती नदियों को बहुत दूर तक बहने का अवसर नहीं मिलता है। यहाँ की सब से बड़ी नदी महावली गंगा केवल १२० मील लम्बी है। यह नदी पिदुरुतल्लागाला से निकलकर टेढ़ी मेढ़ी होती हुई उत्तर-पूर्व की ओर ट्रिंकोमाली (त्रिकोणमलय) की खाड़ी में गिरती है। केलानी गंगा ठीक पश्चिम की ओर बहती है। इसका मार्ग ऐसे प्रदेश में स्थित है जहाँ दोनों ऋतुओं में पानी बरसता है। इसलिये यह नदी कभी नहीं सूखती है। पर लंका की नदियाँ इतनी छोटी और उथली हैं कि उनमें नावें नहीं चल सकती हैं।

मध्यवर्ती पहाड़ के चारों ओर ढालू मैदान है। इसकी ऊँचाई कहीं भी १,००० फुट से अधिक नहीं है। वास्तव में यह मैदान भी उन्हीं चट्टानों का बना है जिनसे लंका का पहाड़ बना है। पर मैदान में ये चट्टानें लाल मुलायम मिट्टी की मोटी तहों के नीचे दब गई हैं। उत्तर की ओर जाफना का चौरस मैदान समुद्र-तल से कहीं भी दो तीन सौ फुट से अधिक ऊँचा नहीं है। इधर की ज़मीन में चूना अधिक है। इसका रंग प्रायः पीला है। केवल कहीं कहीं इसके ऊपर लाल मिट्टी की पतली तह बिछी हुई है। तट के पास ज़मीन सब कहीं नीची है। पर तट बहुत ही कम कटा फटा है और [illegible] है। [illegible] समुद्री लहरों ने तट के पास रेत

इकट्ठा करके अनेक उथले अनूप (लेगून) बना दिये हैं। कई स्थानों पर ये अनूप नहरों द्वारा जोड़ दिये गये हैं।

जलवायु

लंका द्वीप से भूमध्यरेखा प्रायः तीन-चार सौ मील दक्षिण की ओर रह जाती है। इसलिए यहाँ के दिन-रात प्रायः साल भर बराबर होते हैं। समुद्र भी सब कहीं पास है। इसलिये लंका की शीत-ऋतु और ग्रीष्म-ऋतु में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। यहाँ की ग्रीष्म-ऋतु उत्तरी भारत की तरह विकराल नहीं होती है। यहाँ जाड़े के दिनों में भी काफ़ी गरमी पड़ती है। नुवारा-एलिया और कैंडी आदि कुछ पहाड़ी स्थानों को छोड़कर यहाँ के लोग दिसम्बर या जनवरी महीने में भी ओवरकोट का [illegible] लगाते हैं। नारियल के रस या शरबत में बरफ़ डालकर पीते हैं, और रात को चादर या और कोई मलमली कपड़े ओढ़कर बरामदे में सोते हैं। नुवारा-एलिया यहाँ का सबसे अधिक ठंडा नगर है। पर यहाँ भी शीत काल में इलाहाबाद के मुकाबिले में बहुत कम सर्दी पड़ती है। लंका में दिन और रात के तापक्रम में बहुत कम अन्तर रहता है। पर शीत-काल और ग्रीष्म-ऋतु के तापक्रम में इससे भी कम अन्तर पड़ता है। उदाहरण के लिये कोलम्बो का तापक्रम अत्यन्त ठंडे (जनवरी) महीने में ८० अंश फारनहाइट होता है। अत्यन्त गरम (मई) महीने का तापक्रम ८२ अंश फारनहाइट से अधिक नहीं होता है। इस प्रकार वार्षिक तापक्रम-भेद चार या पाँच अंश फारनहाइट से अधिक नहीं होता है। पर दैनिक तापक्रम-भेद (दिन और रात के तापक्रम का भेद) दस या बारह अंश फारनहाइट होता है।

लंका-द्वीप मानसून का मौसमी हवाओं के पथ में स्थित है। इसलिए इस द्वीप के दक्षिण [illegible] में मई से सितम्बर तक खूब वर्षा होती है। [illegible] अधिक [illegible]
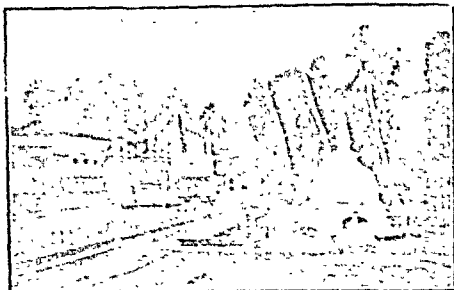
इसके अतिरिक्त यहाँ कुछ मूर लोग हैं जो पुराने अरबी सौदागरों की सन्तान हैं। कुछ बर्गर या योरपीय वर्णसंकर और कुछ शुद्ध योरपीय लोग भी हैं। सघन वनों के दुर्गम भागों में यहाँ के प्राचीन मूल निवासी वेद्दा लोग रहते हैं यहाँ के लोगों का प्रधान पेशा खेती है। तटीय प्रदेश में मछली मारने वाले बहुत रहते हैं। रत्नपुरा के आस पास पठार में कुछ लोग खानों में भी काम करते हैं। खानों से कुछ मणि और पेन्सिल
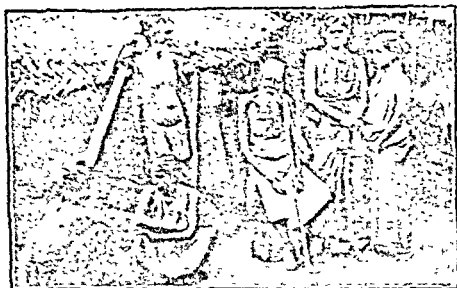
वेद्दा का एक परिवार

का सुरमा* निकलता है। चाय और रबड़ के बगीचों के मालिक अधिकतर योरपीय हैं। इन बगीचों में दक्षिण भारत के प्रायः तामिल मजदूर काम करते हैं। द्वीप का आयात धन्धा नहीं है। यहाँ की आबादी अधिकतर जंगल और पर्वतों के ढलानों में छिपे हुए छोटे छोटे गाँवों में

रहती है। इस द्वीप में प्रायः हर एक घर एक छोटा सा बगीचा है। बड़े शहर कम हैं।

लंका की राजधानी और सब से बड़ा शहर कोलम्बो है। यह नगर केलानी गंगा के मुहाने पर पश्चिमी तट के प्रायः दक्षिणी भाग में बसा हुआ है। यहीं पर तट कुछ मुड़ता है। इसलिये दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से यहाँ के बन्दरगाह की कुछ रक्षा हो जाती है। पर बन्दरगाह को पूर्णरूप से सुरक्षित करने के लिये एक लम्बी चौड़ी दीवार बनानी पड़ी है। बन्दरगाह कुछ गहरा भी कर दिया गया है। इसलिये अब कोलम्बो न केवल लंकाद्वीप का ही सब से बड़ा बन्दरगाह है वरन् यह कई समुद्री मार्गों का जंकशन (संगम) हो गया है। योरप से जितने जहाज स्वेज के मार्ग से कलकत्ता, सिंगापुर चीन, जापान या आस्ट्रेलिया को जाते हैं वे सब यहीं ठहर कर और कोयला* लेकर जाते हैं। यहीं से दक्षिणी-पूर्वी अफ्रीका और दक्षिणी भारत और रंगून को भी व्यापारी जहाज़ आते जाते रहते हैं। कोलम्बो का पृष्ठ-प्रदेश (पीछे का देश) बड़ा उपजाऊ है। कोलम्बो शहर रेल द्वारा उत्तर में तलेमनार और जाफना से, मध्य में कैंडी, और नुवारा-एलिया से, पूर्व की ओर ट्रिंकोमाली से दक्षिण की ओर गाल से जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त कोलम्बो से देश के बड़े बड़े नगरों को सुन्दर पक्की सड़कें गई हैं। इसलिए तटीय प्रदेश का नारियल और दक्षिणी-पश्चिमी भीतरी भाग की रबड़ और चाय कोलम्बो बन्दरगाह

---

* लंका में कोयला नहीं होता है। इसलिये कुछ जहाज ग्रेटब्रिटेन, नेटाल और कलकत्ता से कोयला लाकर यहाँ जमा करते रहते हैं। जैसे रेल का इंजिन अपनी लम्बी यात्रा में अनुकूल स्टेशनों पर कोयला लेता है वैसे ही जहाज का इंजिन भी जगह जगह पर कोयला लेता है।

से ही दिसावर भेजी जाती है। मशीन कपड़े आदि आवश्यक विदेशी चीजें भी कोलम्बो बन्दरगाह से लंका के भिन्न भिन्न भागों में पहुँचती हैं। कोलम्बो शहर की आबादी प्रायः ढाई लाख है। यह शहर बहुत ही खुला हुआ और सुन्दर बसा है। यहाँ अजायब घर आदि कई देखने योग्य चीज़ें हैं।

कैंडी नगर पहाड़ी प्रदेश में कोलम्बो से ७२ मील की दूरी पर बहुत ही ऊँचा नीचा बसा है। लंका की पुरानी राजधानी यहीं
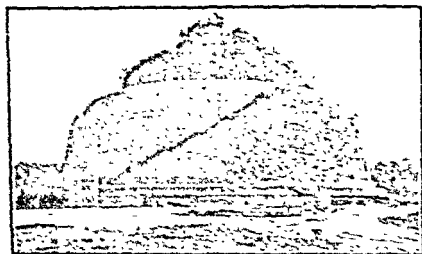
अनुराधपुर का एक प्राचीन स्तूप

थी। कैंडी का दलदमालगवा या बुद्ध भगवान के दाँत का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ लंका के कला कौशल के सामान का सुन्दर संग्रह है। कैंडी से प्रायः तीन मील की दूरी पर पेरादेनिया का बोटेनीकल गार्डेन न केवल लंका में वरन् पूर्वी देशों में सर्वोत्तम है।

नुवारा इलिया प्रसिद्ध पहाड़ी स्टेशन है और छोटी लाइन (नैरोगेज) द्वारा कैंडी से मिला हुआ है। कैंडी से उत्तर की ओर अनुराधपुर या अनुराधापुर में प्रसिद्ध प्राचीन बौद्ध भग्नावशेष हैं। अनुराधपुर के

धुर उत्तर की ओर जाफना को रेल गई है। उत्तर-पश्चिम की ओर एक शाखा तलैमनार को गई है। तलैमनार से धनुषकोटि को (हिन्दुस्तान के लिये) प्रतिदिन स्टीमर छूटा करते हैं। धनुषकोटि स्टेशन रामेश्वरम द्वीप के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। यहीं साउथ इंडियन रेलवे का

लंका का ऐतिहासिक बोधि वृक्ष

अन्तिम स्टेशन है। धनुषकोटि से तलैमनार केवल २० मील दूर है। लंका और हिन्दुस्तान के इन दोनों स्टेशनों को रेल द्वारा जोड़ने की योजना हो रही है। इस बीस मील की यात्रा में भिन्न भिन्न स्थानों पर ७ मील का स्थल है। यहाँ रेत और मूंगे की चट्टानों पर रेल की लाइन डालने में कोई कठिनाई न होगी। शेष १३ मील में थोड़ी थोड़ी दूर पर कांक्रीट के दोहरे खंभे और महराब बनाकर एक विशाल पुल तयार करने की योजना हो रही है। यह पुल रामचन्द्र जी के प्राचीन सेतु की याद दिलावेगा और दोनों देशों के बीच की यात्रा को बहुत ही सुगम और मनोरंजक बना देगा।

पाक जल० डम०
मनार की खाड़ी

करांची से लन्दन पहुँचने में नये हवाई मार्ग से केवल ८ दिन लगते हैं ।

बरेली होकर बनारस और पटना पहुँचने वाली सड़क भी पुरानी है। पुरानी सड़कों में ही एक सड़क आगरे से अजमेर को गई है।

रेलों ने पक्की सड़कों का रूप बदल दिया है। सामान और मुसाफ़िर ढोने के लिए अधिकतर सड़कें रेलवे-स्टेशनों तक बन गई हैं। लेकिन रेल और मोटर लारियों में होड़ शुरू हो गई है। कहीं पहले मोटर लारियाँ इतनी अधिक चल निकलती हैं कि वहाँ रेल लुप्त जाती है। कहीं रेलों पर इतनी भीड़ या मुसाफ़िरों को इतनी तकलीफ़ रहती है कि वहाँ मोटर लारियाँ चलने लगती हैं और रेल की आमदनी कम हो जाती है।

रेल और सड़कों के सिवा तार की लाइन ९३,००० मील है जिनमें प्रायः साढ़े चार लाख मील तार लगा है। तार के आने-जाने में बड़ी सुविधा रहती है। हिन्दुस्तान में तार की प्रधान लाइनें ये हैं:—

१—कलकत्ते से मद्रास (पूर्वी तट के मार्ग से)
२—कलकत्ते से बम्बई (इलाहाबाद, जबलपुर और भुसावल होकर अथवा मीनी, नागपुर और भुसावल होकर अथवा इलाहाबाद, आगरा, झाँसी और भुसावल होकर)
३—कलकत्ते से कराची (आगरा और हैदराबाद होकर)
४—कलकत्ते से शिमला (आगरा और दिल्ली होकर)
५—कलकत्ते से रंगून (अक्याब होकर)
६—कलकत्ते से माइल्ले अक्याब और रंगून होकर अथवा गौहाटी और मनीपुर होकर।
७—बम्बई से मद्रास (ग्रेट इंडियन पेनिन्सुला और मद्रास रेल के मार्ग से अथवा सदर्न मराठा और मद्रास रेलवे के मार्ग से)
८—बम्बई से कराची (अहमदाबाद और डीसा होकर अथवा भुसावल, मारवाड़ जंक्शन और हैदराबाद होकर)
९—बम्बई से कालीकट (बँगलोर और मैसूर होकर)

इकतीसवाँ अध्याय

भारतवर्ष के जल-मार्ग

सड़क या रेल-मार्ग से जल-मार्ग कहीं अधिक सस्ता पड़ता है। जल-मार्ग को बनाने या ठीक रखने में सड़क या रेल से कहीं कम खर्च होता है। यदि कोई इंजिन एक घंटे में सड़क पर १० मन के बोझ को २० मील खींच सकता है तो वही इंजिन उतने ही समय में उतनी ही दूरी तक रेल की पटरी से १०० मन और नाव के द्वारा पानी में ७०० मन बोझ खींच सकेगा।

इन सब कारणों से सभ्य जातियों ने अपने देश के जल-मार्गों का उपयोग करने में पूरा पूरा प्रयत्न किया है। फ्रांस, जर्मनी आदि उन्नत देश अपने जल-मार्गों के ऊपर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं और नाव चलाने वालों को रेल की अनुचित स्पर्धा (होड़) से बचाते हैं। मौर्य-काल में भारत में नाव चलाने के साधन दुनिया भर से अच्छी दशा में थे। मुगल समय के अन्त तक यहाँ नाव चलाने का काम ज़ोरों से होता रहा। पर जब से रेलों का आगमन हुआ तब से लाखों नाव चलाने वाले छिन्न भिन्न हो गये। सरकारी सहायता न मिलने के कारण वे रेल का मुकाबिला न कर सके। १८९८ ई० में काटन साहब ने ३०

करोड़ रुपये में भारत में आवश्यक जल-मार्ग बनाने का वादा किया था। कुछ प्रधान मार्ग ये थे :—

१—कलकत्ता से कराची तक—गंगा और सिन्ध नदी के निचले जल-विभाजक में एक नहर खोदने से दोनों जल-मार्ग जोड़ दिये जाते।

२—कोकोनाडा से सूरत तक—गोदावरी और ताप्ती नदियों की सहायता से।

३—तुंगभद्रा से कारवार (अरब सागर तट पर) तक।

४—पोनानी नदी के ऊपर पालघाट और कोयम्बटोर से।

पर रेल पर १ अरब १२ करोड़ रुपये खर्च हो चुके थे। इसलिए काटन साहब की सुनवाई न हुई। अब तो रेलों में और भी अधिक धन लग चुका है। इसलिए हमारे जल-मार्ग अच्छी दशा में नहीं हैं।

नाव चलने योग्य नहरें

गोदावरी नहर में दोलेश्वरम् से और कृष्णा नहर में बेज़वाड़ा से समुद्र की ओर चपटे डेल्टा में तीन चार सौ मील तक नावें चल सकती हैं। ये दोनों स्थान एक दूसरे से और बकिंघम* नहर से जुड़े हुए हैं। कर्नूलकेडापा-नहर भी १९० मील तक नाव चलने योग्य है। पर ऊँचे नीचे धरातल के कारण इसमें प्राय: ४० ढाल बनाने की आवश्यकता पड़ी। गोदावरी और कृष्णा-डेल्टा की कपास और चावल का अधिकतर भाग इन नहरों द्वारा ही ढोया जाता है।

उड़ीसा-नहर और मिदनापुर-नहर में भी नावें चलती हैं। सुन्दरबन में हुगली और दूसरी (गंगा की) उपशाखायें नहरों-द्वारा जोड़ दी गई हैं।

* [illegible]

सोन नदी की नाव चलने योग्य तीन प्रधान नहरें बक्सर, आरा और दीनापुर में गंगा से मिला दी गई हैं।

संयुक्त-प्रान्त में गंगा की छोटी और बड़ी नहरों में २७५ मील तक नावें चल सकती हैं। गंगा-नहर कानपुर में गंगा से मिला दी गई है।

पंजाब में पश्चिमी यमुना-नहर से सिरे से लेकर दिल्ली तक नावें चल सकती हैं।* सरहिन्द-नहर सिरे (रूपर स्थान) से लेकर फ़ीरोज़पुर शहर तक नाव चलने योग्य है। फ़ीरोज़पुर में सरहिन्द-नहर सतलज नदी से मिल गई है। यहाँ से आगे कराची तक लगातार जल-मार्ग है।

नाव चलने योग्य नदियाँ

नर्मदा और ताप्ती नदियों के निचले भाग में नावें चल सकती हैं। इनका शेष भाग प्रायः पहाड़ी है। पर सिन्ध, गंगा और ब्रह्मपुत्रा नदियों में मुहाने से लेकर सैकड़ों मील तक प्रायः साल भर स्टीमर चल सकते हैं सिन्ध नदी मुहाने से लेकर डेराइस्माइलखाँ (८०० मील की दूरी) तक स्टीमर चलाने योग्य है। इसकी सहायक चनाब और सतलज में भी छोटी छोटी नावें साल भर चल सकती हैं। पर चनाब में चिनिओट और सतलज में फ़ीरोज़पुर के आगे बहुत कम नावें चलती हैं। सिन्ध की उपशाखाओं (फुलेली नहर और पूर्वी नारा) में भी नावें चला करती हैं।

गंगा नदी के मुहाने से लेकर कानपुर तक सुगमता से नावें चला करती हैं।† इसकी सहायक घाघरा नदी में भी फ़ैज़ाबाद तक स्टीमर पहुँचते हैं। पर रेल की स्पर्धा के कारण गंगा और सिन्ध नदियों में धुआँकश नावों को सफलता न मिल सकी। ब्रह्मपुत्रा नदी में डिब्रूगढ़ तक

---

* यह नहर पहाड़ [illegible] उपयोगी है।

† यमुना [illegible] नावें चला करती हैं

और इसकी सहायक सुरमा नदी में सिलहट और कछार तक स्टीमर चला करते हैं। हुगली नदी में नदिया तक स्टीमर पहुँचते हैं। पूर्वी बङ्गाल में नाव चलाने की सुविधायें इतनी अधिक हैं कि रेलों को चलाने में बाधा पड़ती है। छोटी छोटी नहरें बड़ी नदियों को जोड़ती हैं। इस लिये कलकत्ते से आसाम (७५० मील से ऊपर) तक स्टीमर बराबर चला करते हैं। अधिकांश जूट, चाय और धान नावों से ही बड़े बड़े नगरों में पहुँचता है।

महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदियों में डेल्टा के ऊपर कुछ दूर तक नावें चल सकती हैं। वर्षा-ऋतु में इनकी सहायक नदियों में भी नावें चल सकती हैं।

ब्रह्मा में इरावदी नदी में साल भर मुहाने से लेकर भामो (५०० मील की दूरी) तक स्टीमर चलते हैं। कुछ छोटे स्टीमर और आगे मिचीना तक पहुँचते हैं। इरावदी की उपशाखाओं तथा इसकी सहायक चिंडविन नदी में भी स्टीमर चलते हैं। ब्रह्मा की सितांग तथा अन्य छोटी नदियों में भी कुछ दूर तक स्टीमर चल सकते हैं।

भारतवर्ष की जलशक्ति

ऊँचाई से गिरने वाले पानी में उसी तरह की स्वाभाविक शक्ति होती है जिस तरह कोयला या तेल जलाकर भाप में शक्ति पैदा की जाती है। पहाड़ी प्रदेश में पनचक्की (पानी के ज़ोर से चलनेवाली आटा पीसने की चक्की) का प्रयोग बहुत पुराने ज़माने से चला आता है। पानी जितनी अधिक ऊँचाई से गिरेगा उसमें उतनी ही अधिक शक्ति होगी। इस प्रकार १०० मन पानी १००० फुट की ऊँचाई से गिरने पर उतनी ही शक्ति [illegible] शक्ति १००० मन पानी १०० फुट की ऊँचाई से गिरने [illegible]

[illegible]

हुई है। यदि इस शक्ति से बिजली तयार की जावे तो हिन्दुस्तान का कारबार एक दम चोटी पर पहुँच जावे।

हिन्दुस्तान में बिजली तयार करने का सबसे बड़ा प्रयत्न बम्बई प्रान्त में हुआ है। यहाँ रुई आदि के कारखाने बहुत हैं। ब्रह्मा का तेल या बंगाल का कोयला यहाँ पहुँचते पहुँचते बहुत महँगा पड़ता है। पर पश्चिमी घाट में प्रतिवर्ष डेढ़ दो सौ इंच वर्षा होती है। इस पानी से बिजली तयार करने के लिए टाटा महोदय ने भोर-घाट के ऊपर लोनावला में तीन विशाल बाँध बनवाये। इस प्रकार लोनावला में एक अगाध जलाशय बन गया। यह पानी बड़े बड़े नलों द्वारा १७२५ फुट की उँचाई से नीचे खोपोली के पावर-हाउस (शक्ति-गृह) में छोड़ा गया। इस उँचाई से गिरने के कारण पानी के प्रत्येक वर्ग इंच में पाँच मन का दबाव हो गया। इसी ज़ोर से पानी के पहिये चलते हैं और बिजली तयार होती है। १९१५ ई० से लोनावला के "टाटा हाइड्रो इलेक्ट्रिकवर्क्स" बम्बई की मिलों और ट्रामों को बिजली पहुँचा रहे हैं। इस काम में पौने दो करोड़ रुपये लगे। पर इसमें सफलता ऐसी हुई कि दूसरे ही वर्ष "आन्ध्रा वेली पावर सप्लाई, कम्पनी" दो करोड़ रुपये की लागत से खड़ी की गई। यह कम्पनी बम्बई-द्वीप और बन्द्रा तथा कुर्ला के मुहल्लों को बिजली पहुँचाने लगी। आन्ध्रा-घाटी में बहुत छोटा बाँध बनाना पड़ा। बाँध बनने से जो आन्ध्रा झील बनी वह लोनावला से १२ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। और ५४ मील की दूरी से बम्बई में बिजली पहुँचाती है।

१९१९ ई० में २ करोड़ रुपये की लागत से एक तीसरी कम्पनी बनी। इस कम्पनी ने दक्षिण की ओर नीला और मुला नदियों में बाँध बनाकर बिजली तयार करने का निश्चय किया। यहाँ ८० मील की दूरी से बम्बई को बिजली पहुँचाई जाती है।

यहाँ से प्राय १०० मील की दूरी में बिजली बनाने का एक चौथी

योजना हो रही है। इसमें लगभग ८ करोड़ रुपये ख़र्च होंगे और बम्बई के नये कारख़ानों में, बिजली पहुँचाई जायगी।

मैसूर राज्य में कावेरी के शिवसमुद्रम्-प्रपात से हिन्दुस्तान भर में सर्वप्रथम बिजली तयार हुई। यहाँ से ९२ मील की दूरी पर कोलार की सोने की खानों में, और ६० मील की दूरी पर बंगलोर में बिजली पहुँचाई जाती है।

शिवसमुद्रम् से २५ मील नीचे मेकादातू स्थान पर कावेरी में बाँध बनाकर और कावेरी की सहायक शिमसा नदी के स्वाभाविक प्रपात से भी मैसूर-राज्य में बिजली तयार करने का प्रयत्न हो रहा है।

काश्मीर-राज्य का बिजली-घर विचित्र है। बारामूला के आगे झेलम नदी में प्रपात है पर वह बहुत ऊँचा नहीं है। इसलिये इस स्थान से पहाड़ी के किनारे किनारे लकड़ी के बड़े घेरे में सात मील तक पानी पहुँचाया गया है फिर वह बड़े बड़े नलों से बिजली घर में छोड़ा गया है। यहाँ जो बिजली तयार होती है उससे बारामूला और श्रीनगर में रोशनी होती है। श्रीनगर का रेशम का कारख़ाना भी इसी के ज़ोर से चलता है।

बिजली के छोटे छोटे आयोजन शिलांग, कालिमपांग (दार्जिलिंग) नैनीताल और मसूरी में हैं।

मंडी-राज्य में व्यास नदी की एक सहायक उहल नदी के किनारे पंजाब-सरकार ने बिजली तयार करवाने का काम शुरू किया है। इससे शिमला, अम्बाला, करनाल और फ़ीरोज़पुर को बिजली पहुँचेगी और बहुत ही सस्ती होगी। गंगा आदि कई सिंचाई की नहरों और झीलों से भी बिजली तयार करने का विचार हो रहा है जिससे खेती का काम भी बिजली की ताकत से हो सकेगा।

इस देश की अनन्त निर्झरिणियाँ बिजली के काम के लिये व्यर्थ हैं।

बत्तीसवाँ अध्याय

भारतवर्ष के रेल-मार्ग

अब से प्राय: ८० वर्ष पहले हिन्दुस्तान में एक भी रेल न थी। फि
करते करते परीक्षार्थ हावड़ा (कलकत्ता) से रानीगंज (१२० मील)
बम्बई से कल्यान (३३ मील) और मद्रास से आर्कोनम (२९ मील)
तक तीन रेलवे लाइनें बनाई गईं। इस जाँच के बाद ८ बड़ी बड़ी रेल
कम्पनियाँ बनीं। रेलवे लाइन बनाने का काम इस तेज़ी से हुआ कि
इस समय सारे हिन्दुस्तान में ३९,००० मील से अधिक रेलवे-लाइ
हैं। पर पश्चिमी देशों के मुक़ाबिले में हिन्दुस्तानी रेलों का विस्तार बहु
ही कम है। योरप का क्षेत्रफल हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल से प्राय: दुगु
है। वहाँ की आबादी प्राय: सवाई है। लेकिन योरप में २ लाख मी
रेलवे-लाइनें हैं। संयुक्त-राष्ट्र अमरीका तो हिन्दुस्तान से दुगुना भी नहीं
है। वहाँ की आबादी हिन्दुस्तान की ⅓ है। पर वहाँ हिन्दुस्तान से ती
सात गुनी रेलवे-लाइन हैं।

रेल निकालने में बहुत खर्च पड़ता है। लाइन और स्टेशन आदि
बनाने के लिए कम्पनियों को ज़मीन मुफ़्त दे दी गई। आरम्भ में
कम्पनियों को सरकार ने पेशे पर लगा हुई पूँजी पर ५ फ़ी सदी लाभ

की गारेन्टी* (टीका) दे दी। तिस पर भी फी मील पर सारी लागत का औसत पौने दो लाख रुपये से ऊपर पड़ा है। सारी लाइन में ६ अरब ५० करोड़ रुपये लगे। यदि हम चार चार रुपये एक साथ रख कर चाँदी की ऐसी लाइन बनावें जिसमें रुपये एक दूसरे को छूते रहें और उनके बीच में खाली जगह न बचे तो रुपयों की यह लाइन हिन्दुस्तान में सारे रेल-पथ (३७,००० मील) पर बिछाई जा सकती है। लाइन का जो भाग देशी रियासतों में होकर गया है उसका खर्च उन रियासतों से लिया गया है। शेष में उधार लेकर खर्च किया गया है, जिसका हमें सूद देना पड़ता है।

रेल निकालने का मुख्य उद्देश यह था कि फौज और व्यापार को सुविधा मिले। लड़ाई के अवसर पर एक स्थान के सिपाही दूसरे स्थान पर शीघ्रता पूर्वक पहुँचाये जा सकते हैं। इसलिए प्रत्येक स्थान पर अधिक फौज नहीं रखनी पड़ती है। सीमाप्रान्त और पंजाब की रेलें खास कर इसी उद्देश से खोली गईं। रेलों के खुल जाने से गेहूँ आदि देश का कच्चा माल बन्दरगाहों तक कम समय और कम किराये में बाहर जाने के लिए पहुँचने लगा। इसी प्रकार बाहर का पक्का माल देश के कोने कोने में पहुँचने लगा। यह उद्देश प्रायः सभी रेलों का है। अकाल के समय अनाज लाने में भी रेलों से बड़ी सहायता मिलने लगी।

आँधी आदि के डर से हिन्दुस्तान की रेलें अँगरेज़ी रेलों (४ फुट ८½ इंच) से अधिक चौड़ी बनायी गईं। इन रेलों की पटरियों के बीच में साढ़े पाँच फुट का अन्तर रक्खा गया। पर इनमें खर्च अधिक पड़ने लगा। इसलिए कई जगह छोटी लाइन की रेलें बनीं। एक मीटर ३ फुट ३⅜ इंच के [illegible] इन रेलों की पटरियों में रक्खा

गया। अधिक चढ़ाई के पहाड़ी स्थानों और बहुत ही कम व्यापार वाले स्थानों में तंग या नैरोगेज रेलवे खुली। इसकी पटरियों के बीच में २ फुट या २½ फुट का अन्तर होता है। इस तरह की रेल सारे हिन्दुस्तान में 1,000 मील से अधिक नहीं है। जिन भागों में व्यापार की बहुत अधिकता है वहाँ चौड़ी लाइन को भी दुहरा कर दिया है। उदाहरण के लिए हावड़ा (कलकत्ता) और इलाहाबाद के बीच में दुहरी लाइन है।

हिन्दुस्तान की प्रधान रेलें

ईस्ट इंडियन रेलवे

यह लाइन सबसे पुरानी लाइनों में से है। रेलों के पहले अधिकतर व्यापार नावों से होता था। इसलिए नावों के व्यापार को छीनने के लिए आरम्भ में यह लाइन गंगा के किनारे किनारे (कानपुर तक) बनाई गई। पीछे से समय बचाने के लिए मुगलसराय और सीतारामपुर के बीच में गया होकर सीधी लाइन (ग्रांडकार्ड) बना दी गई। पहले-पहल प्रधान लाइन को सीधा और छोटा रखने की इतनी धुन सवार थी कि बहुत से नगर अलग छूट गये। पीछे से इनको मिलाने के लिए बहुत सी शाखायें (ब्रांच लाइनें) खोली गईं। यह लाइन कलकत्ते से देहली होकर कालका तक जाती है। इसकी एक प्रधान शाखा इलाहाबाद से जबलपुर को गई है। अब इस शाखा पर जी० आई० पी० रेलवे का प्रबन्ध है। आजकल अवध रुहेलखंड रेलवे* भी इसी में शामिल

*यह लाइन मुगलसराय से सहारनपुर तक जाती है। इसकी एक शाखा इलाहाबाद से फ़ैज़ाबाद को गई है दूसरी [illegible] से देहरादून (हरिद्वार होकर) [illegible] इसी लाइन में गई है

हो गई है। इस प्रकार यह लाइन देश के अत्यन्त धनी और आबाद भाग में होकर गुज़रती है। कोयले की बड़ी खानें भी इसी लाइन पर स्थित हैं। इसलिए इसकी मालगाड़ियाँ कोयला, कपास, गेहूँ तिलहन, चावल, अफ़ीम, गुड़, नमक, कपड़ा, मशीन आदि से खचाखच भरी रहती हैं। कई व्यापार-केन्द्रों, (कलकत्ता, कानपुर आदि) तीर्थ-स्थानों (प्रयाग, काशी आदि) में पहुँचने के कारण इस लाइन पर सवारियों की भी बड़ी भीड़ रहती है। मेला के दिनों में स्पेशल गाड़ियाँ छोड़नी पड़ती हैं। कभी कभी तो तीसरे दर्जे के मुसाफ़िर मालगाड़ियों में भी भर दिये जाते हैं। यह लाइन ग्रीष्म-ऋतु की राजधानी (शिमला) को शीतकाल की राजधानी (दिल्ली) और व्यापारिक राजधानी (कलकत्ते) से मिलाती है। इसलिए इस लाइन में पहले दर्जे के डब्बे भी ख़ाली नहीं रहते हैं। इन सब कारणों से इस लाइन को प्रति वर्ष कई करोड़ रुपये का लाभ होता है। इसका समस्त विस्तार प्रायः ४ हज़ार मील है।

जी० आई० पी० अथवा ग्रेट इंडियन पेनिन्सुला रेलवे

यह रेलवे भी ई० आई० आर० की तरह पुरानी है। इसका समस्त विस्तार प्रायः ३ हज़ार मील है जिसमें ४६२ मील तक दुहरी लाइन है। यह रेलवे बहुत ही ऊँचे-नीचे प्रदेश में होकर जाती है। इसलिए इसके मार्ग के भिन्न भिन्न दृश्य बड़े मनोहर हैं। पर इसके बनाने में बहुत सा धन लग गया। बम्बई से भीतर की ओर आगे बढ़ने पर शीघ्र ही पश्चिमी-घाट मार्ग में पड़ते हैं। बम्बई से पूना होकर रायचूर को जाने वाली लाइन को भोरघाट के ऊपर चढ़ना पड़ता है। सब ऊँचाई १,८३१ फ़ुट है पर चढ़ाई का मार्ग १६ मील है। इसमें २५ सुरंग पड़ते हैं। रायचूर में यह लाइन मद्रास-रेलवे से मिल गई है। बम्बई से नागपुर जानेवाली लाइन थालघाट के ऊपर होकर जाती है। इस

भाग की ऊँचाई केवल ९७२ फुट है। और ९ मील की चढ़ाई में ११ सुरंग पड़ते हैं। नागपुर में यह लाइन बंगाल-नागपुर-रेलवे से मिलती है। इसी की एक शाखा जबलपुर को गई है। नैनी में यह ई० आई० आर० से मिलती है। प्रधान लाइन इटारसी से होशंगाबाद, भोपाल, बीना, झाँसी, ग्वालियर और आगरा होती हुई दिल्ली को चली गई है। झाँसी से एक शाखा कानपुर को और दूसरी बाँदा होती हुई मानिकपुर को गई है। इसी की शाखायें भोपाल से उज्जैन को और बीना से कटनी को गई हैं। यह रेलवे हिन्दुस्तान के कम आबाद प्रदेश में होकर जाती है। लेकिन इस लाइन के द्वारा बड़े बड़े शहर जुड़े हुए हैं। बम्बई होकर योरप जाने वाली डाक और फ़ौज इसी लाइन पर होकर जाती है। योरप जाने वाले अधिकतर मुसाफ़िर पहले दर्जे में सफ़र करते हैं। इसलिए हिन्दुस्तान की दूसरी रेलों के मुकाबले में जी० आई० पी० का पहला दर्जा सबसे अधिक भरा रहता है। यह रेलवे दक्खिन, बरार और खानदेश में कपास के विशाल क्षेत्र को पार करती है। इसलिए इसकी मालगाड़ियाँ सबसे अधिक कपास ढोती हैं। कपास के अतिरिक्त यह रेलवे अनाज, पत्थर, नमक, शक्कर, तेल, लकड़ी आदि सामान ढोती है।

नार्थ-वेस्टर्न रेलवे

आरम्भ में यह लाइन दिल्ली से लाहौर होकर मुल्तान तक और करांची से कोटरी (हैदराबाद) तक खुली थी। इसलिए मुल्तान और और कोटरी के बीच में नाव-द्वारा सिन्ध नदी में यात्रा करनी पड़ती थी। आज-कल हिन्दुस्तान की सबसे अधिक लम्बी (४,१०० मील) लाइन यही है। १०० मील तक दुहरी लाइन है। यह लाइन फ़ौज के सुभीते के लिए सब कहीं चौड़ी बनाई गई है। प्रधान लाइन दिल्ली से देवा-

वह* और वरोंची से लाहौर को जाती है। इसकी एक प्रसिद्ध शाखा सक्खर के पास सिन्ध नदी को पार करके रुक जंक्शन से क्वेटा और न्यूचमन को गई है। बोलन दर्रे के मार्ग में इस शाखा लाइन को २½ मील लम्बा खोजक सुरंग पार करना पड़ता है। यह सुरंग हिन्दुस्तान भर में सबसे अधिक लम्बा है। फ़ौजी लाइन होने से नार्थ-वेस्टर्न रेलवे को हिन्दुस्तान की और रेलों से कहीं अधिक घाटा रहता है। सीमा-प्रान्त और बिलोचिस्तान में इसकी गाड़ियों में तीसरे दर्जे में भी भीड़ नहीं रहती है। पर पंजाब में नहरों के खुल जाने से यह रेलवे सबसे अधिक गेहूँ दिसावर भेजती है। जब सिन्ध की नहरों से सिंचाई होने लगेगी तब शायद इस रेलवे को घाटा न रहेगा।

बम्बे-बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे

यह लाइन बम्बई से आरम्भ होती है। पश्चिमी तट के पास सूरत, भड़ौंच, बड़ौदा और अहमदाबाद होती हुई उत्तर में यह लाइन वीरम-गाँव तक चली गई है। अहमदाबाद से मीटरगेज लाइन आरम्भ होती है और माउंट-आबू, मारवाड़ जंक्शन, अजमेर और जैपुर होती हुई आगरा और कानपुर को चली गई है। यह लाइन भटिंडा और दिल्ली में नार्थ वेस्टर्न रेलवे से मिली हुई है। इसकी एक शाखा अजमेर से चित्तौड़, रतलाम और इन्दौर होती हुई खंडवा में जी० आई० पी० से मिल गई है। इसी की चौड़ी लाइन बम्बई, बड़ौदा, रतलाम, कोटा, भरतपुर और मथुरा होती हुई दिल्ली को गई है। मालवा प्रदेश को छोड़कर यह लाइन अधिकतर कम आबाद और रेगिस्तानी प्रदेश में होकर जाती है। लेकिन कुछ तीर्थों और प्रसिद्ध शहरों के कारण इस लाइन पर काफ़ी मुसाफ़िर सफ़र करते हैं। इसके मार्ग में साँभर झील

आदि कुछ स्थानों में नमक बहुत है। इसलिये इसकी मालगाड़ियाँ सब से अधिक नमक ढोती हैं। नमक के अतिरिक्त अनाज, कपास, पत्थर, गुड़, लकड़ी भी इस लाइन पर बहुत ढोई जाती है।

बङ्गाल और नार्थ वेस्टर्न रेलवे

यह मीटरगेज रेलवे गंगा के उत्तर में घाघरा और कोसी नदियों के बीच के प्रदेश में खोली गई है। कई स्थानों पर इस लाइन के मुसाफिर स्टीमर द्वारा गंगा को पार करके ई० आई० आर० पर सवार हो जाते हैं। बहुत दिनों तक यह लाइन सबसे अलग रही पर अन्त में यह लाइन कानपुर में बी० बी० एण्ड० सी० आई० रेलवे की मीटर लाइन से और कटिहार में ईस्टर्न बङ्गाल-रेलवे से मिला दी गई है। भूतपूर्व अवध रुहेलखंड (वर्तमान ईस्ट इंडियन) रेलवे से यह लाइन बनारस, जौनपुर और शाहगंज में मिली हुई है। इसकी एक शाखा बनारस से इलाहाबाद को गई है। यह लाइन हिन्दुस्तान के अत्यन्त उपजाऊ और घने बसे हुए भाग में होकर जाती है। इसलिए इस रेलवे को माल और सवारी की कभी कमी नहीं रहती है। इसकी मालगाड़ियाँ अधिकतर चावल, अनाज, गुड़, तिलहन, नील और अफ़ीम ढोया करती हैं।

ईस्टर्न बंगाल रेलवे

यह लाइन पूर्वी बंगाल में फैली हुई है। यह लाइन उत्तर में कलकत्ते से सिलगुड़ी तक चली गई है। सिलगुड़ी से दार्जिलिङ्ग के लिए (२ फुट) पहाड़ी लाइन मिलती है। उत्तर-पूर्व में इसको एक शाखा आसाम-बंगाल-रेलवे से मिली हुई है। पश्चिम में यह लाइन ई० आई० आर० और नार्थ वेस्टर्न रेलवे से मिलती है। बाढ़ और चौड़ी नदियों के कारण इस रेलवे को फैलने में कठिनाई पड़ती है। पर यह रेलवे अत्यन्त उपजाऊ और सघन भाग में चलती है। यह रेलवे जूट,

धान, चावल, मसाला और तम्बाकू बाहर पहुँचाती है। और सूती कपड़े, अनाज, शक्कर आदि सामान इधर लाती है।

आसाम-बंगाल रेलवे

यह मीटर लाइन चिटगाँव से आरम्भ होती है और सुरमा-घाटी और उत्तरी काछार की पहाड़ियों में होकर आसाम में पहुँचती है। पहाड़ी भाग में इसका दृश्य अत्यन्त मनोहर है पर इसके बनाने में बहुत ख़र्च हुआ। इसका प्रदेश इतना कम आबाद है कि रेलवे मज़दूर बाहर से बुलाने पड़े। घंटों की यात्रा में स्टेशन पर केले के सिवा और कोई खाने की चीज़ नहीं मिलती है। इस लाइन पर भीड़ कम रहती है। पर धान, चावल और जूट बाहर पहुँचाने में इसे कुछ आमदनी होती है। लेकिन फिर भी यह रेलवे घाटे से चलती है।

बंगाल-नागपुर-रेलवे

यह चौड़ी लाइन नागपुर से आरम्भ होकर हावड़ा, कटक और कलिंगा को चली गई है। १९०१ ई० से पूर्वी तट पर कटक और विज़िगापट्टम के बीच की लाइन भी इसी कम्पनी के अधिकार में आ गई। इसकी एक शाखा झरिया की कोयले की खानों तक पहुँच गई। बम्बई से कलकत्ते का सब से छोटा रास्ता इसी लाइन पर होकर है। लेकिन लाइन का बड़ा भाग कम आबाद प्रदेश में होकर जाता है। यदि इस लाइन पर जगन्नाथपुरी (तीर्थ) न हो तो इसकी गाड़ियाँ प्रायः ख़ाली ही दौड़ा करें। इसकी मालगाड़ियाँ कोयला, कपास, चमड़ा कमाने की छाल, अनाज, जूट, नमक, लकड़ी, पत्थर, तेल, लोहा और धातु का सामान, ढोने में लगी रहती हैं

मद्रास-रेलवे

यह [illegible] रेलवे तक और दक्षिण-[illegible]
[illegible]

कुछ स्टेशनों पर विमानाश्रय[1] (हवाई जहाज़ों को सुरक्षित रखने के लिए घर) भी होने चाहिए। कितने स्टेशनों पर विमानाश्रयों की ज़रूरत पड़ेगी यह हवाई ट्राफ़िक पर निर्भर है। कारख़ानों और मरम्मत की घरों की दूसरी ज़रूरत है। कम से कम अन्तिम स्टेशनों पर ऋतु-विज्ञान[2]-सम्बन्धी और बिना तार के तार-घरों[3] की भी आवश्यकता पड़ती है। रात में उड़ने के लिए प्रकाश-भवनों[4] की भी ज़रूरत पड़ेगी। रात में उड़ने के लिए संयुक्त राष्ट्र में सैनफ़्रांसिस्को से न्यूयार्क तक २,६०० मील के फ़ासले में रोशनी का प्रबन्ध है। इसी तरह की रोशनी का प्रबन्ध हिन्दुस्तान में भी करना पड़ेगा। बिना तार के तार-घर और ऋतु-विज्ञान-सम्बन्धी दफ़्तरों को सूचित करने के लिए विशाल प्रकाशभवन होना चाहिए। चुंगी वसूल करने और उतरने के एरोड्रोमों (विमानालयों) को भिन्न भिन्न प्रकाशों से सूचित करना पड़ेगा।

आजकल के हवाई जहाज़ों को इस बात की ज़रूरत है कि उनका मार्ग अधिकतर चपटी भूमि में ही हो। पहाड़ियों और पहाड़ों के बीच में पड़ने से हवाई जहाज़ों को बहुत ऊँचा चढ़ना पड़ता है जिससे ख़र्च अधिक बढ़ जाता है और लाभ कुछ भी नहीं होता है। सब विमानालय व्यापार-केन्द्रों के पास ही होने चाहिए। जिससे हवाई जहाज़ों को इतना काम मिलता रहे कि वे ख़ाली न रहें।

१९२० ई० में भारत-सरकार ने इलाहाबाद होकर जानेवाली बम्बई और कलकत्ते की लाइन का अनुमान लगवाया था। २,००० मील का सब ख़र्च २६॥ लाख रुपए अन्दाज़ा गया था। मान लो यह ख़र्च बढ़ाकर ४० लाख रुपये रख लिया जाये फिर भी प्रति मील पर २,००० रुपये ही बैठेगा। रेलों का यह ख़र्च [illegible] और [illegible] हिन्दुस्तान में २ लाख रुपये है [illegible] हवाई मार्ग से

उतना ही खर्च पड़ेगा जितना कि रेल्वे मार्ग के एक मील में ख़र्च बैठता है। यह कहा जा सकता है कि रेल्वे के एक बार शुरू आने पर वह इतना अधिक सामान ढो सकती है जितना कि हवाई जहाज़ कभी नहीं ढो सकता है। बहुत भारी सामान और कच्चे माल का ढोना इस समय हवाई जहाज़ के लिए असम्भव है। लेकिन जब एक बार बहुत से हवाई जहाज़ चलने लगेंगे तो अपार सामान हवाई मार्ग से ही ढोया जाने लगेगा। योरप में इस समय स्थल के वाहन आसानी से मौजूद हैं फिर भी मोतियों से लेकर मशीनों के पुरज़ों के नमूने तक प्रतिदिन हवाई जहाज़ से ही ढोये जाते हैं। प्रतिवर्ष लगभग २०,००० मन सामान योरप से अकेले ग्रेटब्रिटेन ही में हवाई जहाज़-द्वारा पहुँचता है।

सोने और चाँदी का माल ढोने के लिए हवाई जहाज़ बड़े ही उपयुक्त हैं। बहुत कम लोगों के हाथ उन पर लगते हैं इसलिए चोरी का बहुत कम डर रहता है। इसी से हवाई जहाज़ पर बीमे की दर भी कम लगती है। हिन्दुस्तान में सोने की बड़ी माँग है। यह सोना अधिकतर दक्षिण अफ्रीका से आता है। दक्षिण-अफ्रीका के लोग हिन्दुस्तानी बाज़ार से फ़ायदा उठाने के लिए केप से केरो तक हवाई लाइन खोलने का पूरा पूरा प्रयत्न कर रहे हैं। मिस्र से हिन्दुस्तान को हवाई जहाज़ का आना आसान है।

हिन्दुस्तान का पहला हवाई मार्ग दिल्ली और इलाहाबाद होकर कराची से कलकत्ता को पहुँचता है। अधिक सीधा मार्ग करांची से नसीराबाद और झाँसी होकर इलाहाबाद आता है। दूर दूर की यात्रा करनेवाले हवाई जहाज़ों ने इसी मार्ग का अनुसरण किया है। इलाहाबाद और कलकत्ता में सभी तरह के हवाई जहाज़ों के उतरने के लिए एरोड्रोम (विमानालय) हैं। [illegible] में तथा और [illegible] में भी हवाई जहाज़ों के उतरने के लिए स्थान तैयार हो रहा है।

करांची से बम्बई तक हवाई मार्ग-द्वारा मिला हुआ है। बम्बई में

इस समय कोई अच्छा एरोड्रोम नहीं है। यहाँ ज़मीन मिल सकती है लेकिन ख़र्च बहुत पड़ेगा। इससे दूसरे दर्जे का मार्ग बम्बई और कलकत्ता के बीच का है। इसका विशेष कारण यह है कि किसी किसी ऋतु में हवाई जहाज़ (एअरशिप) कराची के बदले बम्बई में आ सकेंगे। इसके अतिरिक्त बम्बई और कलकत्ता के बीच के मार्ग में असंख्य मुसाफ़िर और अपार सामान हवाई जहाज़ का रास्ता देख रहा है। दूसरा प्रसिद्ध मार्ग कलकत्ता से बनारस, इलाहाबाद, कानपुर और लाहौर होकर रावलपिंडी के लिए खुलेगा। इस मार्ग में भी अपार सामान है। इस मार्ग में कलकत्ता से जो मेल पार्सल एक्सप्रेस रात को छूटती है वह प्रायः ठसाठस भरी रहती है। फिर भी कुछ सामान और मुसाफ़िर छूट जाते हैं जो मामूली मुसाफ़िर-गाड़ी से जाते हैं। इस १२० टन के सामान में बहुत सा भाग हवाई जहाज़ के योग्य रहता है। एक हवाई जहाज़ इसके भी बहुत थोड़े भाग से ही पूरा भर सकता है। कलकत्ता से एक दूसरा मार्ग विज़िगापटम होकर मद्रास को और फिर वहाँ से आगे बढ़ कर कोलम्बो को जायगा। इसी प्रकार मद्रास होकर बम्बई और कोलम्बो के बीच का मार्ग भी खुल जायेगा। कलकत्ता और बम्बई के बीच में दो मार्ग रहेंगे। एक मार्ग जबलपुर और इलाहाबाद होकर और दूसरा नागपुर (मध्यप्रान्त) होकर जायगा। नागपुर होकर जानेवाला मार्ग इलाहाबादवाले मार्ग से प्रायः २०० मील कम बैठेगा। यह २०० मील की बचत उन लम्बे सफ़र के लिए बड़े काम की होगी जो कलकत्ता से रंगून तक बढ़ा दिया जायेगा। यह स्पष्ट है कि बम्बई और कलकत्ता के मार्ग पर और कुछ अंश में कराची और कलकत्ता के मार्ग पर हवाई जहाज़ रात में भी चला करेंगे। रात में चलने के लिए हिन्दुस्तान एक आदर्श देश है। गरमी की ऋतु में दिन की अपेक्षा रात का चलना बहुत ही अच्छा होगा।

कलकत्ता और रंगून के बीच में हवाई जहाज़ अब से पाले चलना

आरम्भ करेंगे। दोनों शहरों को इससे जो लाभ होगा वह स्वयंसिद्ध है। हिन्दुस्तान के दूसरे शहर तो रेल-द्वारा जुड़े हुए हैं। कलकत्ता और रंगून के बीच में आने जाने का एक-मात्र साधन जहाज़ ही है। अगर कोई मुसाफ़िर स्थल-मार्ग द्वारा बम्बई से कलकत्ता आवे और फिर जहाज-द्वारा कलकत्ता से रंगून जावे, तो उसे कम से कम पाँच दिन रास्ते में लग जावेंगे। लेकिन हवाई जहाज़ २० घंटे में बम्बई से रंगून पहुँच सकता है। कलकत्ता और रंगून के बीच में स्थित अक्याबनगर में भी विमानाश्रय और बिना तार का तार-घर भी बनाना पड़ेगा। इन सब मार्गों पर कुछ न कुछ तैयारी अवश्य हो रही है। एक हवाई मार्ग ब्रह्मपुत्र और सालविनी नदियों की घाटी के रास्ते से हिन्दुस्तान और चीन में नया सम्बन्ध जोड़ देगा।

भीतरी मार्गों के अतिरिक्त भारतवर्ष बाहरी मार्गों का भी प्रधान केन्द्र है। हिन्दुस्तान के पूर्व में पूर्वी द्वीपसमूह में डच लोग तेज़ी के साथ हवाई मार्गों को सुधारने में लगे हुए हैं। जापानी हवाई जहाज़ सारे जापान तथा मलायावाले देशों में चक्कर लगा रहे हैं। आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड भी इस दिशा में बहुत आगे बढ़ रहे हैं। पश्चिम की ओर योरप में हवाई जहाज़ों का चलना सर्वसाधारण हो गया है। लेकिन पूर्वी और पश्चिमी मार्गों का जंक्शन हिन्दुस्तान ही है। इस प्रकार मिस्र और बगदाद तथा करांची और रंगून के बीच में पूरी सुविधा न होने से संसार के हवाई मार्ग अधूरे ही रह जावेंगे। योरप से आस्ट्रेलिया होकर जो पूर्वी मार्ग है वह भू-स्थिति, जलवायु, जनसंख्या और व्यापार की दृष्टि से अधिक दक्षिणी (लन्दन, पेरिस, बर्लिन, कुस्तुन्तुनिया, बगदाद और करांची), अर्थात् भारतीय मार्ग के मुकाबिले में बहुत ही तुच्छ है। इसलिए आज नहीं तो निकट भविष्य में हिन्दुस्तान के हवाई मार्गों का पूर्ण विकास होना अवश्यम्भावी है।

भारतवर्ष से इंगलैंड को नया हवाई मार्ग

स्थान	प्रस्थान वा आगमन	समय	दिवस
दिल्ली (नई)	प्रस्थान—	००-००	→ बुधवार
जोधपुर	आगमन—	१०-४५	
	प्रस्थान—	११-३०	
कराची (ड्रीगरोड)	आगमन—	१६-००	
	प्रस्थान—	०४-३०	→ बृहस्पतिवार
ग्वादर	आगमन—	१२-१५	
	प्रस्थान—	१३-१५	
जास्क	आगमन—	१५-१०	
	प्रस्थान—	०६-००	→ शुक्रवार
लिङ्गे	आगमन—	०८-२५	
	प्रस्थान—	०९-१०	
बुशहर	आगमन—	१२-१५	
	प्रस्थान—	१३-००	
बसरा (शैबा)	आगमन—	१५-३५	
	प्रस्थान—	०२-००	→ शनिवार
बग़दाद (पश्चिमी)	आगमन—	०५-३०	
	प्रस्थान—	०६-१५	
रुतबावेल्स	आगमन—	०९-१५	
	प्रस्थान—	१०-००	
ग़ाज़ा	आगमन—	१३-२५	
	प्रस्थान—	१४-१०	
काहिरा	आगमन—	१६-४०	
स्टेशन हेलिओ पोलिस	प्रस्थान—	१०-३०	

सिकन्दरिया (रासल्तिन)	आगमन—	१२-५०
	प्रस्थान—	०५-३० ———→रविवार
कैन्डिया (क्रीट)*	....	
एथेन्स (फेलरन की खाड़ी)	आगमन—	१३-००
	प्रस्थान—	१३-४५
कारफू	आगमन—	१६-४५
	प्रस्थान—	०६-००———→सोमवार
नेपिल्स	आगमन—	०९-१५
	प्रस्थान—	१०-००
जिनोआ	आगमन—	१४-४५
	प्रस्थान—	१९-००
मार्स	आगमन—	०६-१५———→मंगलवार
	प्रस्थान—	०८-३०
पेरिस (ली बोरगेट)	आगमन—	११-३०
	प्रस्थान—	१२-००
लन्दन (क्राइडन)	आगमन—	१४-१५

———

* [illegible]

चौंतीसवाँ अध्याय

संसार से भारतवर्ष का व्यापारिक सम्बन्ध

भारतवर्ष की प्राकृतिक सम्पत्ति अपार है। यहाँ बहुत सी ऐसी चीज़ें पैदा होती हैं और पाई जाती हैं जो देश की आवश्यकता को पूरी करने के बाद भी फालतू बच जाती हैं। इसके विपरीत कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो दूसरे देशों में बहुतायत से मिलती हैं लेकिन इस देश में उनका प्रायः अभाव है। जल और स्थल-मार्गों द्वारा अपने देश की फालतू चीज़ों को विदेशों में भेजने और उन देशों से अपनी आवश्यकता की चीज़ें यहाँ लाने के लिए हिन्दुस्तान की भौगोलिक स्थिति भी बड़ी अच्छी है। इसी लिये अति प्राचीन समय से ही संसार के भिन्न भिन्न देशों से भारतवर्ष का व्यापारिक सम्बन्ध रहा है। पर पहले यह व्यापार स्थल में जानवरों की पीठ पर और जल में बड़ी बड़ी नावों द्वारा होता था। व्यापार की चीज़ों को एक देश से दूसरे देश को भेजने में बहुत खर्च पड़ता था। इसलिये प्राचीन समय में केवल ऐसी चीज़ों का व्यापार होता था जो हल्की और बहुत कीमती होती थीं। मसाला, रेशम, बढ़िया कपड़े, सोना, चाँदी, हीरा [illegible] का ही अधिक व्यापार होता था। पर जब से बड़े पुतलीघर [illegible] नहीं तब से

हिन्दुस्तान के व्यापार की कायापलट गई। रेलों और जहाज़ों ने दूर दूर के देशों को पड़ोसी बना दिया है। अगर दूसरे देश के धनी लोग अधिक दाम लगा सकते हैं तो देश का भारी से भारी आवश्यक माल (चाहे गरीब देश वासियों को भले ही न मिले) बाहर चला जाता है। इसी तरह यदि देश का बना हुआ माल कुछ महँगा पड़ता है तो वह माल पड़ा पड़ा सड़ता रहता है और विदेशी माल हाथों हाथ बिक जाता है।

आजकल प्रतिवर्ष हिन्दुस्तान प्रायः ६०० करोड़ रुपये का व्यापार समुद्री मार्ग से दूसरे देशों के साथ करता है। लगभग ३५० करोड़ रुपये का माल हिन्दुस्तान से बाहर जाता है और २५० करोड़ रुपये का माल हिन्दुस्तान में बाहर से आता है। बाहर जाने वाले माल को निर्यात[1] और बाहर से देश में आने वाले माल को आयात[2] कहते हैं। हिन्दुस्तान के आयात में प्रायः ७५ फ़ी सदी विदेशों में बना हुआ पक्का माल रहता है। यों तो विदेश से बहुत सी चीज़ें आती हैं। पर अधिक दाम की चीज़ें निम्न हैं:—

रुई और सूती माल	७० करोड़ रुपये
लोहा और फौलादी सामान	२८ करोड़ "
शक्कर	२० करोड़ "
मशीनें और औज़ारों का सामान	१६ करोड़ "
मिट्टी का तेल	११ करोड़ "
रेशमी और ऊनी माल	१० करोड़ "
मोटर आदि गाड़ियाँ	८ करोड़ "
रेल का सामान	५ करोड़ "
कागज़ और किताबें	४ करोड़ "

शराब	४ करोड़ रुपये
तम्बाकू (सिगरेट)	३ करोड़ "
रंग	३ करोड़ "
शीशे का सामान	२½ करोड़ "
दवायें	२ करोड़ "
नमक	२ करोड़ "

साबुन, स्याही, सीमेन्ट, छतरी, घड़ी आदि अनेक ऐसी चीज़ें विदेशों से आती हैं जिनमें प्रत्येक का दाम २ करोड़ रुपये से कम ही रहता है।

हिन्दुस्तान से बाहर जाने वाली चीज़ों में अधिकतर कच्चा माल या खाद्य पदार्थ रहते हैं। इनमें मुख्य चीज़ें निम्न हैं :—

जूट कच्चा और बना हुआ	८० करोड़ रुपये
रुई और कुछ सूती माल	७० करोड़ "
अनाज, दाल और आटा	४० करोड़ "
तिलहन	२० करोड़ "
चाय	३० करोड़ "
चमड़ा	१० करोड़ "
लाख	७ करोड़ "
ऊन	६ करोड़ "
मैंगनीज़ आदि कच्ची धातु और धातु का सामान	५ करोड़ "

भारतीय कपास की कहानी बड़ी हृदय विदारक है। पहले भारत-वर्ष सूती कपड़ों के लिए न केवल स्वावलम्बी था वरन् बहुत सा बढ़िया सूती माल बाहर भी भेजता था। पर ईस्ट इंडिया कम्पनी की दुर्नीति से हिन्दुस्तान में रुई का कारबार [illegible] और बाहर से विलायती सूती माल अधिक [illegible] की सदी के साथ साथ में हिन्दुस्तान [illegible]

पर उनकी रक्षा के लिये कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया गया। एक बार जब सरकार ने अपनी आमदनी को बढ़ाने के लिए बाहरी कपड़े पर कर लगाया तो उतना ही कर हिन्दुस्तानी मिलों के कपड़े पर भी लगाया गया।

आजकल हिन्दुस्तान में लगभग ५ करोड़ रुपये की रुई, ७ करोड़ का सूत और ६० करोड़ का कपड़ा आता है। अब यह प्रश्न उठता है कि जब हिन्दुस्तान में ही अपार रुई होती है तो बाहर से क्यों मंगाई जाती है? कारण यह है कि हिन्दुस्तान में अधिकतर छोटे रेशे की रुई होती है। बड़े रेशे की पंजाब-अमरीकन, धारवाड़-अमरीकन और कम्बोडिया-अमरीकन कपास बम्बई से दूर पैदा होती है। इसलिये बम्बई की कुछ मिलें मोम्बासा-यूगान्डा से यूगान्डा की लम्बे रेशे वाली कपास मँगा लेती हैं। कुछ रुई अमरीका से भी आती है। आज कल जितना सूत हिन्दुस्तान में आता है उसका प्राय: ६५ फी सदी जापान से और ३३ फी सदी लंकाशायर से आता है। हिन्दुस्तानी जुलाहे प्राय: यही सूत अपने करघों पर बुनते हैं। कपड़ों में उल्टा हाल है। ६० करोड़ रुपये के कपड़े में ८५ फी सदी लंकाशायर से और १४ फी सदी जापान से आता है। नये क़ानून के अनुसार जापानी कपड़े पर २० फी सदी और लंकाशायर के कपड़े पर १५ फी सदी कर लगेगा। इससे जापानी कारबार को धक्का पहुँचेगा। पर विदेशी वस्त्र के बहिष्कार से सम्भव है कि दोनों ही देशों से हिन्दुस्तान में कपड़े आने बन्द हो जायँ और हिन्दुस्तान में खोई हुई लक्ष्मी फिर लौट आवे। हिन्दुस्तान से प्राय: ६० करोड़ रुपये की रुई बाहर जाती है। इस में प्राय: ४० फी सदी जापान को, १२ फी सदी चीन को, १० फी सदी इटली को जाती है। बेल्जियम, ग्रेटब्रिटेन, जर्मनी और फ्रान्स को भी लगभग पाँच पाँच फी सदी जाता है।

बम्बई में सूत का मिलों का काम से बहुत प्यारा रहा। सन १०१४ [illegible]

शक्कर

अब से प्रायः ८० वर्ष पहले हिन्दुस्तान में इतनी शक्कर होती थी कि यहाँ बाहर से शक्कर मँगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। आजकल भी २५ लाख एकड़ ज़मीन में ईख बोई जाती है। पर माँग इतनी अधिक है कि प्रायः छः लाख टन ईख की शक्कर जावा से, ५०,००० टन (चुकन्दर की) शक्कर जर्मनी, आस्ट्रिया आदि से, १५,००० टन ईख की शक्कर संयुक्तराष्ट्र अमरीका से और कुछ शक्कर मारीशस से आती है।

हिन्दुस्तान में मशीन और मिलों का सामान अधिक तर ग्रेट-ब्रिटेन और जर्मनी से आता है।

मिट्टी का तेल

हिन्दुस्तान में मिट्टी के तेल की माँग बहुत बढ़ गई है। ब्रह्मा का अधिकांश तेल हिन्दुस्तान में ही आता है। ब्रह्मा का प्रायः सवा छः लाख टन तेल हिन्दुस्तान में आता है। केवल तीन या चालीस हज़ार टन तेल दूसरे देशों को जाता है। इसमें अधिकतर (मोटर चलाने का) पेट्रोल होता है। पर इससे हिन्दुस्तान की माँग पूरी नहीं होती है। इसलिये ५ करोड़ गैलन रोशनी करने का तेल संयुक्त राष्ट्र अमरीका से और ७ या ८ करोड़ गैलन इंजिनों में जलाने का तेल फारस से आता है। कुछ तेल बोर्नियो और सुमात्रा से भी आता है। पहले रूस से बहुत तेल आता था। बीच में लड़ाई के दिनों में बन्द हो गया। हाल में रूस का तेल बहुत ही सस्ता आने लगा है।

रेशम

हिन्दुस्तान में रेशम की माँग कुछ कुछ बढ़ ही रही है। सब से अधिक रेशम चीन से आता है। पर बनावटी कृत्रिम रेशम प्रायः सब का सब इटली और ग्रेट-ब्रिटेन से आता है।

गेहूँ	२८ करोड़ रु०
कपास	२२ करोड़ ,,
अनाज और आटादाल	६ करोड़ ,,
तिलहन	३ करोड़ ,,

रंगून

जिस प्रकार कलकत्ता नदी के मुहाने के ऊपर समुद्र से ७२ मील की दूरी पर बसा है उसी प्रकार रंगून भी नदी के मुहाने के ऊपर समुद्र से २४ मील की दूरी पर बसा है। पर दोनों बन्दरगाहों में समुद्र से बड़े बड़े जहाज़ आ सकते हैं। रंगून के प्रधान निर्यात निम्न हैं:—

चावल* (कुछ दाल और अनाज भी)	२८ करोड़ रु०
तेल	लगभग १० करोड़ ,,
लकड़ी	लगभग ६ करोड़ ,,
रुई और सूती सामान	४ करोड़ ,,
धातु	३ करोड़ ,,

मद्रास

मद्रास के पृष्ठ प्रदेश की उपज में कोई विशेषता नहीं है। यहाँ का कृत्रिम बन्दरगाह बड़े बड़े जहाज़ों के प्रधान मार्ग से बाहर स्थित है। यहाँ के प्रधान निर्यात निम्न हैं:—

चमड़ा	७ करोड़ रु०
रुई और सूती माल	५ करोड़ ,,
तिलहन	४ करोड़ ,,

आरम्भ में हम कह चुके हैं कि हिन्दुस्तान का ९० फ़ी सदी से अधिक

* मिल में साफ़ होने से चावल का पुष्टिकारक अंश नष्ट हो जाता है।

व्यापार पाँच प्रधान बन्दरगाहों द्वारा होता है। शेष ७ या ८ फी सदी व्यापार छोटे छोटे १० बन्दरगाहों के बीच में बँटा हुआ है। इन सबों में चिटगाँव बन्दरगाह प्रधान है। यहाँ से आसाम की चाय और उत्तरी बंगाल के कुछ जिलों का जूट विसावर को जाता है। लंका के व्यापार के लिये तूतीकोरिन प्रधान बन्दरगाह है। कुछ वर्षों से धनुषकोटि भी इस व्यापार में हाथ बँटाने लगा है। बसीन, मोलमीन और अक्याब बन्दरगाहों में रंगून से बचा हुआ बर्मा का कुछ विदेशी व्यापार होता है।

कोचीन

कोचीन का पृष्ठ प्रदेश धनी है। केवल बन्दरगाह के सुधारने पर रुकावट होने के कारण भूत काल में कोचीन व्यापारिक उन्नति न कर सका। अब बन्दरगाह को सुधारने का प्रयत्न हो रहा है।

विज़ीगापट्टम के बन्दरगाह से भी आजकल बहुत कम व्यापार होता है। पर बन्दरगाह सुधारा जा रहा है। रायपुर (बंगाल नागपुर रेलवे) से रेलवे सम्बन्ध हो जाने से यहाँ का व्यापार बढ़ जायगा। मध्यप्रान्त का मैंगनीज़ यहाँ से विसावर जाया करेगा।

तटीय व्यापार

हिन्दुस्तान का तटीय व्यापार प्रायः बड़ी बड़ी देशी नावों द्वारा होता है। विदेशी व्यापार से हिन्दुस्तान का तटीय व्यापार इस समय केवल $\frac{1}{4}$ होता है। पर यदि हिन्दुस्तान का व्यापारी बेड़ा बन जावे तो यह व्यापार और भी अधिक बढ़ सकता है। तटीय व्यापार में आजकल प्रायः बंगाल का कोयला, जूट, बोरे, बोरिया, कपड़ा, बम्बई और मद्रास के सूती कपड़े, जमशेदपुर (बिहार) का लोहे और फौलाद का सामान बर्मा को जाता है और वहाँ से तेल लकड़ी और चावल आता है।

भारत वर्ष के कुछ बन्दरगाहों की दशा

कराची	बन्दरगाह है। अधिक स्थान बढ़ाया जायगा।
बम्बई	सर्वोत्तम बन्दरगाह है।
कैनानोर	समुद्र उथला होने के कारण जहाज दूर लंगर डालते हैं और छोटी छोटी नावें हैं।
टेलिचरी	" " "
कालीकट	" " "
कोचीन	सामने रेती थी, बन्दरगाह सुधर रहा है।
एलेप्पी	डाक नहीं है, नये खम्भे हैं।
क्विलन	मई से सितम्बर तक वहाँ लंगर पड़ता है।
त्रिवेन्द्रम्	लोहे के खम्भे हैं।
नागा पट्टम	इसमें मजबूत लोहे के खम्भे हैं।
पाण्डिचेरी	डाक नहीं है, खम्भे हैं।
मद्रास	बन्दरगाह है डाक नहीं है।
मसूलीपट्टम	तटपर जहाज नहीं आते और नावें सामान के लिये नहीं हैं।
कोकोनाडा	" " "
विज़िगापट्टम	" " सामान उतारने चढ़ाने की नावें हैं।
गंजाम	" " तूफानी नावें हैं
पुरी	तट से दूर जहाज़ लंगर डालते हैं, नावें हैं
कलकत्ता	खिदरपुर डाक के अतिरिक्त और स्थान बढ़ाया जा रहा है।
चिटगाँव	मिट्टी निकाल कर बन्दरगाह को साफ रक्खा [illegible] है।

कर आता जाता है। इन कठिनाइयों के होने पर भी हिन्दुस्तान में प्रति वर्ष चालीस-पचास करोड़ रुपये का सीमा प्रान्तीय व्यापार होता है।

अफ़ग़ानिस्तान और हिन्दुस्तान का व्यापार दर्रे मार्गों का है। अफ़ग़ानिस्तान से फल, तरकारी, हींग, मेवा, ऊन और ऊनी सामान हिन्दुस्तान में आता है। हिन्दुस्तान से सूती कपड़े, चाय, शक्कर, चमड़े का सामान और नील अफ़ग़ानिस्तान को जाता है। यह सब व्यापार प्रति वर्ष प्रायः पाँच करोड़ रुपये का होता है।

फ़ारस और हिन्दुस्तान का स्थल-व्यापार भी प्रायः इसी प्रकार का होता है। फ़ारस में हिन्दुस्तानी सूत और कपड़े तथा चमड़े की बड़ी माँग है। फ़ारस और हिन्दुस्तान का व्यापार बिलोचिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के मार्ग से होता है। नेपाल और हिन्दुस्तान के बीच में प्रायः नौ दस करोड़ रुपये का व्यापार होता है। नेपाल से चावल और जूट (पाट) बहुत आता है। हिन्दुस्तान से सूत और सूती माल नेपाल में पहुँचता है। पर अब धीरे धीरे नेपाल में चरखे का प्रचार बढ़ रहा है। इसलिये भविष्य में नेपाल को बाहर से अधिक कपड़ा मँगाने की आवश्यकता न रहेगी।

हिन्दुस्तान और ब्रह्मा का व्यापार अधिकतर मनीपुर के रास्ते से होता है। हिन्दुस्तान से बोरिया और सूती कपड़ा ब्रह्मा को जाता है। वहाँ से चावल, पेट्रोल और मिट्टी का तेल आता है। भामो और कुंलांग घाट से चीन और ब्रह्मा के बीच में व्यापार होता है। स्याम और चीन का व्यापार टेनाप के रास्ते से होता है।

तिब्बत और हिन्दुस्तान के बीच में अधिकतर चाय और ऊन का व्यापार होता है।

लंका का व्यापार

लंका का प्रायः [illegible] बन्दरगाह द्वारा

होता है। लंका में प्रायः ३६ करोड़ रुपये का सामान बाहर से आता है। और ४८ करोड़ रुपये का सामान लंका से बाहर जाता है। इस प्रकार लंका को विदेशी व्यापार से प्रायः १२ करोड़ रुपये की बचत रहती है। जिस तरह हिन्दुस्तान की बचत अंगरेज़ी राजनैतिक सम्बन्ध के हिसाब किताब में वहीं खर्च हो जाती है उसी तरह लंका के व्यापार की बचत भी इंगलैंड के राजनैतिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध में वहीं खर्च हो जाती है और लंका को नहीं मीलती है। लंका में बाहर से आने वाली मुख्य मुख्य चीज़ें निम्न हैं—

चावल	१० करोड़ रुपये
रुई और सूती सामान	३ करोड़ ,,
मिट्टी का तेल	२½ करोड़ ,,
कोयला	२ करोड़ ,,
रबड़	१½ करोड़ ,,
खाद	१¾ करोड़ ,,
शक्कर	१¼ करोड़ ,,
मछली	८० लाख ,,
मोटरकार और लारी	७४ लाख ,,

लंका में चावल उन हिन्दुस्तानी कुलियों के लिये आता है जो चाय और रबड़ आदि के बागीचों में काम करते हैं। हिन्दुस्तानी कुली जहाँ कहीं जाते हैं हिन्दुस्तान का ही चावल और मोटा देसी कपड़ा पसन्द करते हैं। इसलिए जहाँ जहाँ हिन्दुस्तानी कुली जाते हैं वहीं वहीं हिन्दुस्तान का चावल और कपड़ा [illegible] जाता है। लंका में कपड़े का कोई कारखाना नहीं है [illegible] और [illegible] है

[illegible] इंग्लैंड से [illegible]

परिशिष्ट

तालिका नं० १

विदेशों में भारतीयों की संख्या

देश का नाम	भारतीयों की संख्या	गणना की साल (सन्)
लंका	८,२०,०००	१९३६
मलयद्वीप	६,२४,०००	१९३१
हांगकांग	२,५५५	१९११
मारिशस	२,६८,४७०	१९३१
सिशलीज़	३३२	१९११
जिब्राल्टर	५०	१९३०
नाइजीरिया	१००	१९३०
कीनिया	२६,७५९	१९२६
यूगाण्डा	५,६०४	१९२१
न्यासालैण्ड	५१५	१९२१
ज़ंज़ीबार	१२,८४१	१९२१
टैंगानीका	९,४११	१९२१

स्थान		स्थिति	जनवरी	फर्वरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
सिल्चर	अ	२४-५०	६३-८	६७-०	७३-९	७८-०	८०-१	८१-४
(१०४)	इं	९२-५१	०-६४	२-३२	७-९३	१३-५६	१५-७६	२०-३१
कलकत्ता	अ	२२-३२	६५-२	७०-३	७९-३	८५-०	८५-७	८४-५
(२१)	इं	८८-२६	०-२९	१-०२	१-३४	१-५४	५-६०	११-०४
वर्द्धमान	अ	२३-२०	६५-३	७०-०	८०-४	८६-७	८६-५	८४-९
(९९)	इं	८७-५५	०-३८	०-८९	१-२४	२-२०	५-५६	१०-१४
पटना	अ	२५-३८	६०-८	६५-३	७६-९	८६-२	८८-०	८६-४
(१८३)	इं	८५-१२	०-७२	०-५३	०-३५	०-३०	१-७०	७-७१
बनारस	अ	२५-२५	६०-०	६५-३	७६-६	८६ ८	९१-३	८९-४
(२६७)	इं	८३-०	०-३४	०-५१	०-३३	०-१५	०-५६	५११
इलाहाबाद	अ	२५-३०	५९-५	६४-२	७६-८	८७-६	९२-५	९०-८
(३०९)	इं	८१-५५	०-८२	०-४८	०-३८	०-१४	०-२९	५-०९
लखनऊ	अ	२६-५३	५८ ७	६३-७	७५-२	८६-४	९०-६	९०-१
(३६८)	इं	८०-५२	०-९०	०-७१	०-३७	०-११	०-९१	५-३४
आगरा	अ	२७-१८	६०-१	६४-८	७६-७	८८-१	९४-०	९३-४
(५५५)	इं	७७-५७	०-५५	० ३३	०-२५	०-१६	०-६४	३-८४
मेरठ	अ	२९-०	५६-०	६०-१	७१-१	८२-०	८८-४	८९-४
(७३८)	इं	७७-३८	१-०५	०-८३	०-६३	०-३४	०-७०	३-११
दिल्ली	अ	२८ ३५	५७-९	६२-२	७४-१	८६-२	९१-०	९१-२
(७१८)	इं	७७-१०	१-०२	०-६१	०-६७	०-३५	०-७१	३-१८
लाहौर	अ	३१-३५	५३-०	५७-३	६९-०	८०-९	८८-९	९३-९
(७०२)	इं	७४-२०	०-८७	१-३३	०-८९	०-५१	०-८०	१-८६
मुल्तान	अ	३०-१०	५५-६	५९-८	७१-६	८२-९	९१-३	९४-६
(४२०)	इं	७१-३४	०-३९	०-३६	०-२२	०-२७	०-३९	०-४२
जैकबाबाद	अ	२८-२०	५७-३	६२-४	७४-५	८५-५	९४-३	९७-२
(१८६)	इं	६८-२८	०-२८	०-२७	० २४	०-१०	०-१५	०-१०

स्थान		स्थिति	जनवरी	फर्वरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
हैदराबाद द०	अ	२५-३०	७०-४	७७-१	८३-१	८८-०	९०-१	८२-६
(१,६९०)	दे	६८-२२	०-०५	०-१२	०-६७	०-७३	०-७८	४-४४
बल्लोर	अ	१२-७५	६७-५	७२-०	७६-७	७९-९	७८-५	७४-०
(३,०२१)	दे	७७-३०	०-०६	०-२२	०-७२	१-१९	४-५३	३-१३
बिलारी	अ	१५-१२	७३-२	७९-६	८५-६	८९-२	८९-०	८३-४
(१,४७५)	दे	७६-५०	०-१०	०-०३	०-४२	०-८३	१-९३	१-८४

तालिका

भारतवर्ष की उपज का

	धान	गेहूँ	दाल इत्यादि	ईख
मद्रास	१२,९३५	२९	२५,०३४	८६
बम्बई	३,८२५	३,२८७	२६,५८२	९३
बंगाल	५४,५३५	२,६५७	१२,४१३	१,००८
संयुक्तप्रान्त	९,४३५	१२,२३०	२६,८९५	१,७०३
पंजाब	१,०७५	१२,२१५	१३,३५५	५१०
ब्रह्मा	१४,५४२	५३	२,५१७	२०
मध्यप्रान्त और बरार	७,०१४	५,२७३	१७,०१८	३०
आसाम	६,१८८	१६	१५७	६३
उ० प० सीमा-प्रान्त	५१	१,४११	८१५	४३
योग	१,०९,६००	३६,८६१	१,०४,७८६	३,५६३

स्थान		स्थिति	जनवरी	फर्वरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
हैदराबाद द०	अ	२५-३०	७०-४	७७-१	८३-१	८८-०	९०-१	८२-६
(१,६९०)	दे	६८-२२	०-०५	०-१२	०-६७	०-७२	०-७८	४-४४
बङ्गलोर	अ	१२-७५	६७-५	७२-०	७६-७	७९-९	७८-५	७४-०
(३,०२१)	दे	७७-३०	०-०६	०-२२	०-७२	१-१९	४-५३	३-१३
बिलारी	अ	१५-१२	७३-२	७९-६	८५-६	८९-२	८९-०	८३-४
(१,४७५)	दे	७६-५०	०-१०	०-०३	०-४२	०-८३	१-९३	१-८४

तालिका

भारतवर्ष की उपज का

	धान	गेहूँ	दाल इत्यादि	ईख
मद्रास	१२,९३५	२९	२५,०३४	८६
बम्बई	३,८२५	३,२८७	२६,५८२	९३
बंगाल	५४,५३५	२,६५७	१२,४१३	१,००८
संयुक्तप्रान्त	९,४३५	१२,२१०	२६,८९५	१,७०३
पंजाब	१,०७५	१२,२१५	१३,३५५	५१७
ब्रह्मा	१४,५४२	५३	२,५१७	२०
मध्यप्रान्त और बरार	७,०१४	५,७७३	१७,०१८	३०
आसाम	६,१८८	१६	१५७	६३
उ० प० सीमा-प्रान्त	४१	१,८११	८१५	४३
योग	१०५,६००	३६,८६१	१,२४,९८६	३,५९३

तालिक

भारतवर्ष की

	गाय बैल	भैंस भैंसा	बछड़े (पड़िया पड़वा)	भेड़
मद्रास	८२,६४,७५८	२४,०६,७८३	४३,८५,६३९	८२,३४,२१
बम्बई	४६,२१,५१६	१०,६७,०६२	१८,५६,४८६	१६,८८,८८
संयुक्तप्रान्त	१,८४,६६,९४५	४३,८५,७२१	९५,५४,०५४	२७,३८,०४८
पंजाब	७१,५९,५३९	२,४००,७७९	३६,८१,८९१	४०,८४,६५१
ब्रह्मा	२,८००,५७१	७,५८,४२८	१४,११,४०२	१६,००५
मध्यप्रान्त और बरार	६६,९६,८०५	१०,५६,६३४	२३,९४,२११	४,८८,४८९
आसाम	२२,४९,४०३	२२,९९,००३	१५,०८,३८९	१२,९०१
उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्त	६,३०,६६९	१,२३,४३२	२,२९,०२८	४,३२,७०१
अजमेर मेवाड़	१,५८,४९८	२८,३९८	४१,६३८	२,०७,०९६
कुर्ग	६१,३०३	१९,६२१	१९,०९६	६२९
देशी राज्य	५६,८१,६३४	१२,४८,६३३	२४,१६,१६९	

शाखाएँ और धन्धे	लगी हुई पूंजी	आमदनी
मील	रु०	रु०
२५५	८४,९६,४६०	२,३६,११६
११४	५९,७७,८१५	३,०५,११८
८४	६५,२०,९५३	३,५३,०९६
११९	६५,९३,२१७	९,४९,६००
—	१,९७,२३,४३९	—
१,२९४	७,३०,८०,३२३	६,१५,७५६
६७७	६७,३३,१४२	५,८५,८५३
१०६	१,०६,७८,५७२	८,०२,८८८
१३	१,०५,०४,३६९	१४,७६४
१५१	५१,२०,८७५	१,८९,७६४
२१२	६१,१३,५४९	६,५९,२५१
१,६१३	२,५८,२९,७००	४७,६६,४७५
१,२३५	२,६८,८८,२५७	२१,३६,३०१
२६२	९९,९६,६१९	३,५६१
१७३	८०,८८,६१८	२,४५,९१३
३,००६	१०,२४,९९,४५५	९३,६०,४२१
१,७६१	२,२४,५३,५६४	५६,४८,२०४
३०६	२,१५,७०,३३२	४,७१,५२९
२२३	४५,८५,०३४	३०,०४२
१,७३४	१,७२,०४,४३३	३०,९४,२११
२००	५०,९७,९२९	९६,२६१

पशाखायें और खम्बे	लगी हुई पूंजी	आमदनी
मील	रु०	रु०
२५५	८४,९६,४६०	२,३६,१३६
११४	५९,७७,८१५	३,०५,१३८
८४	६५,३०,९५३	३,५३,०९६
१३९	६५,९३,३१७	९,४९,६०७
—	१,९०,२३,४३९	—
१,२९४	२,७०,८०,०२३	६,१५,७५६
४७७	६०,३३,१४३	५,८५,८५३
१०६	१,०६,७८,५०९	८,०२,८८८
१३	१,०५,०४,३६९	१४,०६४
१५१	५१,२०,८०५	१,८९,०६४
२९३	६१,१३,५४९	६,५९,२५१
१,६१३	२,५८,२९,७००	४०,६६,४७५
१,२३५	२,६८,८८,२५७	२१,३६,३०१
२६२	९९,९६,६१९	३,५६१
१७३	८०,९८,६१८	२,४५,९१३
३,००६	१०,२४,९९,४५५	९३,६७,४२१
१,५६१	२,२४,५३,५६४	५६,४८,२०४
३०६	२,१५,००,३३७	४,७१,५२९
२२३	४५ ८५ ७३४	३०,०४२
१,०३९	१ ३१ ०४ ४३३	१०,९४,२११
२००	[illegible]	०६,३६१

	१९२१	१९३१*
कुनैन, तम्बाकू और मसाले के कारखाने	२०,०००	
कोयले की खानें	१८,०००	
चूने के भट्टे	१८,०००	
कागज़ के कारखाने	१८,०००	
पत्थर की खानें	१७,०००	
रबर के काम	१७,०००	
तेल की मिलों में	१६,०००	
पेन्ट टीन और तांबे के कारखाने	१४,०००	
नमक	१२,०००	
हड्डी और चमड़े के कारखाने	१२,०००	
गैस और बिजली के कारखाने	११,०००	
पत्थर के कारखाने	११,०००	
कपड़े के कारखाने	१०,०००	
मोटरकार के कारखाने	१०,०००	

४५—रामनगर या हमीरपुर का विस्तृत वर्णन करो।

४६—पटना प्राचीन समय से अब तक क्यों प्रसिद्ध रहा है?

४७—उड़ीसा की प्राकृतिक सीमाएँ क्या हैं?

४८—इस प्रान्त के प्रधान नगर कौन कौन हैं और वे क्यों प्रसिद्ध हैं?

४९—संयुक्त प्रान्त के प्रधान प्राकृतिक विभाग कौन कौन से हैं?

५०—इस प्रान्त के पश्चिमी भाग में सिंचाई की क्यों ज़रूरत पड़ती है?

५१—संयुक्त प्रान्त का कौन सा भाग पहाड़-प्रदेश में स्थित है?

५२—इस प्रान्त के उन ज़िलों को एक नक्शे में अंकित करो जो शक्कर, ऊनी सामान, पीतल के बरतन, रेशम, और अफ़ीम के कारबार के लिये प्रसिद्ध हैं?

५३—संयुक्त प्रान्त की रेलों का विवरण एक नक्शे के साथ लिखो।

५४—क्या कारण है कि पंजाब की रेलें नदियों के समीप बनी हैं?

५५—व्यापारिक महत्व की दृष्टि से सिन्ध और गंगा के मैदानों का मुकाबला करो।

५६—बम्बई प्रान्त में कौन से प्राकृतिक प्रदेश शामिल हैं?

५७—सिन्ध का भौगोलिक सम्बन्ध किस प्रान्त के साथ है?

५८—नई नहरों के खुल जाने से सिन्ध प्रान्त पर क्या असर पड़ेगा?

५९—गुजरात की उपज क्या है?

६०—पश्चिमी तटीय प्रदेश और पठार प्रदेश की उपज, जलवायु और आबादी का संक्षिप्त वर्णन करो।

६१—बंबई, अहमदाबाद और शोलापुर में पुतलीघरों की भरमार क्यों है?

६२—हैदराबाद राज्य का प्राकृतिक बनावट क्या है? वहाँ के निवासियों का संक्षिप्त वर्णन करो।

2 The Indus, after its upper course in Tibet, flows through Kashmir, the North-West Frontier Province, the Punjab, and the part of the Bombay Province called Sind. Describe the scenery and productions of these portions of the basin of the Indus, and name, with reasons, the one you think of most importance

[अध्याय ६

3 *Why are irrigation works required in some parts* of India? Give particulars of the various methods of irrigation, and say in which areas each is in operation. Refer to any especially important scheme of which you have heard

[अध्याय १०

4. What factors affect the distribution of population in India? Give examples of some thickly populated regions and some thinly populated regions, and in each case explain why it is thickly or thinly populated.

[अध्याय ८

5 What conditions of soil and climate favour the cultivation of cinchona, teak, cotton, and sugar? In what parts of India are these produced on a large scale?

[अध्याय ५,७,४,१०,६,

6. Write notes on *any four* of the following South-west Monsoon; physical features of the Deccan; black cotton soil, Sundarbans, rain-shadow region, gunny bag, Sukkur Barrage.

[अध्याय ५ और तालिका २

7. Some weather records of Darjeeling, Jacobabad, Nagpur, and Bombay are given below State which of these four towns the letters A B C and D represent Give reasons for your answer —

SOME REFERENCE BOOKS

A Handbook of the Meteorology of India *by* Sir John Eliot.

Geology of India *by* Oldham 2 vols.

Geology of India *by* Wadia

Across the Border or Pathan and Baloch *by* S. E. Oliver

Our Scientific Frontier *by* W. P. Andrew.

Midst Himalayan Mists *by* R. J. Minney.

The Tourist's Guide to Kashmir, Ladokh, Sakardo, etc

India and Tibet *by* Sir Francis Young Husband.

The Heart of a Continent *by* Sir Francis Young Husband.

Twenty years in the Himalayas *by* Bruce.

Over Land to India *by* Sven Hedin

Assault on Mount Everest

The Trade of the Indian Ocean *by* V. Anstey.

The Economic Development of India *by* V. Anstey.

Handbook of Commercial Information for India *by* C. W. E. Cotton

Irrigation in India *by* D. G. Harris

Imperial Gazetteer of India Vols. I, III and IV.
Indian Gazetteer Vol. XXVI

Indian Year Book

Trade Tariff and Transport in India *by* K. T. Shah.

The Indian Empire Part IV *by* Stamp Dudley.

Asia *by* Stamp Dudley

Asia *by* Keane

Asia. In the Oxford Survey of the British Empire Series *by* Howarth and [illegible]

Economic [illegible] of India

1931 *by* B. B. Mukherji
CLIMATE AND WEATHER OF INDIA *by* Blanford.
A REGIONAL GEOGRAPHY OF THE INDIAN EMPIRE *by* David Frew.
INDIA, BURMA AND CEYLON *by* Blanford.
A NEW GEOGRAPHY OF INDIAN EMPIRE AND CEYLON
A JUNIOR GEOGRAPHY OF INDIA, BURMA AND CEYLON *by* Morrison.
THE WORLD *by* O. J. R. Howarth
A PROGRESSIVE GEOGRAPHY *by* C. B. Thurston
AN INTRODUCTION TO MILITARY GEOGRAPHY *by* J. F. Lee.
INDIA, WORLD AND EMPIRE *by* H. Pickles.
INDIAN BORDERLAND *by* Sir T. H. Holdich.
GATES OF INDIA *by* Sir T. H. Holdich
INDIA "IN THE REGIONS OF THE WORLD SERIES" *by* Sir T. H. Holdich
A HANDBOOK OF CEYLON FOR THE RESIDENT AND THE TRAVELLER
REPORTS—ADMINISTRATION, CROP, WEATHER, ETC.
MAGAZINES—GEOGRAPHY, NATIONAL GEOGRAPHIC, AMERICAN GEOGRAPHICAL REVIEW, JOURNAL OF ROYAL GEOGRAPHICAL SOCIETY, ASIA, ETC.